मासिक

शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 59 | अंक : 04 | अक्टूबर, 2018 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹15

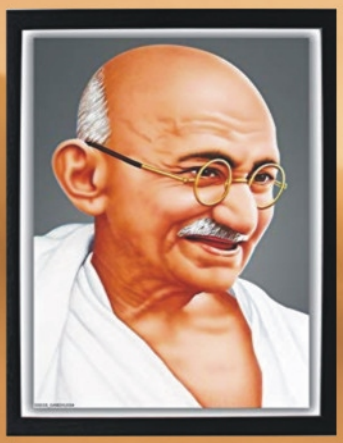

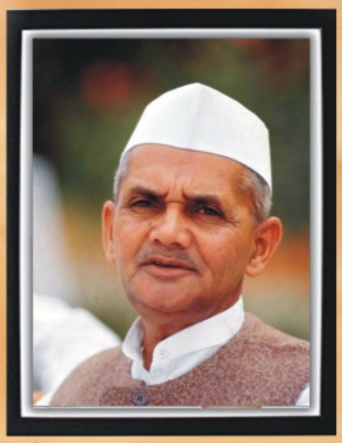

सत्यमेव जयते

वासुदेव देवनानी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा
एवं भाषा विभाग
राजस्थान सरकार, जयपुर

संकल्प करें देश की प्रगति का...

शिक्षा की दृष्टि से 2014 से 2018 के कालखण्ड को राजस्थान की शैक्षिक व्यवस्था के परिवर्तन का स्वर्णिम काल मान सकते हैं, यह सिर्फ मैं ही नहीं कह रहा हूँ बल्कि राजस्थान का बच्चा-बच्चा, प्रत्येक अभिभावक, शिक्षा से जुड़े प्रबुद्ध लोग और भारत सरकार के माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री महोदय तक कह रहे हैं। यह हम सबके लिए गौरव का विषय है।

गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने **'कर्मण्येवाधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन'** का उपदेश देते हुए निष्काम कर्म करने का संदेश दिया है। हमने इसी भावना से कार्य शुरू किया जिसमें अधिकारी वर्ग, शिक्षक बन्धु, शिक्षिका बहिनें, छात्र-छात्राओं एवं अभिभावक वर्ग का सम्पूर्ण सहयोग मिला। कहा जाता है कि शुद्ध और सही नीयत से किया गया कार्य ईश्वर के आशीर्वाद से सदैव सफल होता है। शिक्षा विभाग में स्टाफिंग पैटर्न, काउन्सलिंग, विद्यालय क्रमोन्नयन, शिक्षकों की नई भर्तियाँ, पदोन्नतियाँ, भौतिक विकास, डिजिटीलाइजेशन, उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम, निरन्तर बढ़ता नामांकन आदि इस कालखण्ड की उल्लेखनीय उपलब्धियाँ रहीं जिनके कारण राजस्थान 'नेशनल अचीवमेन्ट सर्वे' एवं 'असर' की रिपोर्ट के अनुसार शिक्षा के क्षेत्र में भारत में 26 वें स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँच गया। इस महत्त्वपूर्ण और उल्लेखनीय उपलब्धि का समस्त श्रेय मैं मेरे शिक्षक बन्धुओं और शिक्षिका बहिनों को प्रदान करता हूँ तथा इसके लिए सभी को हृदय के अन्त:स्थल से साधुवाद ज्ञापित करता हूँ।

अभी शीत ऋतु शुरू होने वाली है, 1 अक्टूबर से विद्यालयों का समय भी परिवर्तन हो गया है, छात्रों का विद्यालयी पाठ्यक्रम शिक्षण पूर्ण होने की ओर अग्रसर होगा, शिक्षकवृन्द सभी बालकों को पढ़ाई के साथ-साथ खेलों में रुचि लेने हेतु प्रेरित करें, सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करें ताकि सर्वांगीण विकास का हमारा शैक्षिक लक्ष्य पूरा हो सके।

2 अक्टूबर को इस राष्ट्र के दो महान सपूतों की जयंती है। सत्य, अहिंसा, सदाचार के अनुगामी राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी और देश विदेश में भारतीय स्वाभिमान, सादगी और ईमानदारी के प्रतीक श्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती हम जोश-जुनून से मनाएँ, बच्चों में गौरव तथा श्रद्धा का भाव जगाएँ रखें। इन महानायकों के आचरण को सभी अपनाएँ, यह हमारा प्रयास हो।

सिखपंथ के संस्थापक, विश्व शान्ति के हिमायती, जाति-पाँति के विरोधी, समानता और समरसता के समर्थक पूज्य गुरुनानक देव की पुण्यतिथि 4 अक्टूबर को है। इस अवसर पर हम उनकी शिक्षाओं को प्रचारित प्रसारित करें, ऐसा हमारा प्रयास हो। समर्थ गुरु रामदास की जयंती 9 अक्टूबर को है तथा 10 अक्टूबर से शक्ति की उपासना का नवरात्रि पर्व शुरू होंगे जो 17 अक्टूबर को दुर्गाष्टमी, 18 अक्टूबर को महानवमी और 19 अक्टूबर को विजयादशमी तक सम्पन होंगे। आप सभी से आग्रह है कि बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक विजयादशमी हम हर्षोल्लास से मनाएँ ही नहीं बल्कि बुराई के प्रतिकार का संदेश समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचे, ऐसा हम सभी का प्रयास हो। 20 अक्टूबर को 'विश्व एकता दिवस' के दिन संकल्पबद्ध होकर हमारी आदि संस्कृति के अनुसार 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का भाव जागृत करें तथा विश्व के समस्त प्राणियों के प्रति सद्भावना का भाव जगाएँ। 21 अक्टूबर को भारतीय स्वतंत्रता के निमित्त नेताजी सुभाष चन्द्र बोस द्वारा गठित 'आजाद हिन्द फौज' का स्थापना दिवस है जबकि 24 अक्टूबर को वैश्विक संगठन संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना का दिवस है। हम सभी का दायित्व है कि संयुक्त राष्ट्र संघ के उद्देश्यों को प्राप्त करने में हम सभी सहायक बनें, इसी दिन रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि की जयंती है।

महर्षि वाल्मीकी जयंती मनाते हुए हम सामाजिक सद्भाव और समरसता की प्राचीन भारतीय परम्परा को छात्र-छात्राओं में सम्प्रेषित करते हुए समाज निर्माण और राष्ट्र निर्माण के यज्ञ में निरन्तर आहुति प्रदान करें। भारत के लोह पुरुष और भारतीय रियासतों के एकीकरण के पुरोधा भारत के प्रथम उप प्रधानमंत्री और गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती 31 अक्टूबर को है। आप सभी से आग्रह है कि एकता, दृढ़ता और स्वाभिमान के पुजारी इस देश के महानायक सरदार पटेल की जयंती को हम सभी 'संकल्प दिवस' के रूप में मनाएँ और संकल्प करें इस देश की प्रगति का, इस देश की एकता का, सामाजिक समरसता का, राष्ट्र निर्माण का और भारत को पुन: विश्व गुरु के रूप में आरूढ़ करने का।

एक बार पुन: आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

जय हिन्द, जय भारत, जय-जय राजस्थान।

(वासुदेव देवनानी)

> "आप सभी से आग्रह है कि एकता, दृढ़ता और स्वाभिमान के पुजारी इस देश के महानायक सरदार पटेल की जयंती को हम सभी 'संकल्प दिवस' के रूप में मनाएँ और संकल्प करें इस देश की प्रगति का, इस देश की एकता का, सामाजिक समरसता का, राष्ट्र निर्माण का और भारत को पुन: विश्व गुरु के रूप में आरूढ़ करने का।"

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 59 | अंक : 4 | आश्विन-कार्तिक कृ. २०७५ | अक्टूबर, 2018

प्रधान सम्पादक
नथमल डिडेल

❁

वरिष्ठ सम्पादक
डॉ. राजकुमार शर्मा

❁

सम्पादक
मुकेश व्यास • गोमाराम जीनगर

❁

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

❁

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ **15**

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 75
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 150
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 200
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
फैक्स : 0151-2201861
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in
shivirasecedubkn@gmail.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- चरित्र निर्माण : अहिंसक समाज 5

विशेष रपट

- राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान-2018 7
  नए राजस्थान के आर्किटेक्ट बनें शिक्षक : मुख्यमंत्री
  महावीर प्रसाद गर्ग

राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान-2017

- डॉ. सुमन जाखड़ : बहुमुखी व्यक्तित्व 13
  अनिता चौधरी
- इमरान खान : एप गुरु 14
  विनोद कुमार जान्दू

आलेख

- बापू और चंपारण की विजय-कथा 15
  भगवती प्रसाद गौतम
- गणेश शंकर 'विद्यार्थी'- एक क्रांतिकारी पत्रकार 17
  कमलनारायण
- शास्त्री जी के प्रेरक जीवन प्रसंग 18
  टेकचंद्र शर्मा
- नन्हें बालक का संकल्प 18
  उत्तम चन्द्र सागर
- राष्ट्र-समाज का सुनहरा कल 19
  हीराराम चौधरी
- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए राज्य की पहल 20
  कमल कुमार जांगिड़
- स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल विद्यालय : अभिनव पहल 21
  अविनाश चौधरी
- बच्चों में रचनात्मकता वृद्धि 30
  प्रमोद दीक्षित 'मलय'
- विज्ञान शिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु 'करके सीखो विधि' 34
  दीपक जोशी
- बालमन को तराशता है-बाल रंगमंच 35
  नारायण दास जीनगर
- भगिनि निवेदिता की परदुःख कातरता 36
  सांवलाराम नामा
- कन्यापूजन से बदलेगी सोच 37
  संदीप जोशी
- ऐसे थे-नीरज 38
  विनीत कुमार लोढ़ा
- बुद्धिमंथन-एक शिक्षण विधि 39
  कृष्ण कुमार राजपुरोहित

मासिक गीत

- देश प्रेम का भाव जगाने... 12
  संकलन : **मधुसूदन व्यास**

विशेष सूचना

- अणुव्रत जीवन विज्ञान अकादमी, लाडनूं द्वारा चित्रकला, निबंध एवं कहानी/कविता/नाटक प्रतियोगिता 24

रपट

- जहाँ नवाचारों से गौरवान्वित है शिक्षा 40
  दिनेश विजयवर्गीय

स्तम्भ

- पाठकों की बात 4,6
- आदेश-परिपत्र 25-28
- शिविरा पञ्चाङ्ग (अक्टूबर, 2018) 29
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 29
- शाला प्रांगण 46-48
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50
- व्यंग्य चित्र-**रामबाबू माथुर** 33-41

पुस्तक समीक्षा 42-45

- अन्तस री पीड़, लेखक : सुधीन्द्र शर्मा 'सुधी'
  समीक्षक : **विश्वनाथ भाटी**
- सनातन रा सिखर, लेखक : ब्र.ना. कौशिक
  समीक्षक : **डॉ. सत्यनारायण स्वामी**
- आँखों में आकाश
  लेखक : मदन गोपाल लढ़ा
  समीक्षक : **राजूराम बिजारणियां**

मुख्य आवरण :

नारायणदास जीनगर, बीकानेर

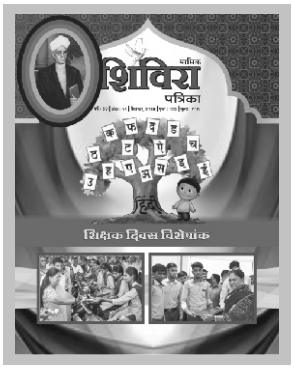

▼ चिन्तन

ऋणशेषं च अग्निशेषं
शत्रुशेषं तथैव च।

व्याधिशेषं च निःशेषं
कृत्वा प्राज्ञो न सीदति।।

अपने ऊपर का कर्ज, रोग तथा अपने शत्रु को पूरी तरह समाप्त कर देना चाहिए। उसी प्रकार आग की कोई चिंगारी भी गलती से अनबुझी नहीं रहनी चाहिए। बुद्धिमान व्यक्ति ऐसा ही करते हैं और इसलिये दुखी नहीं होते। (पंचतंत्र/काकोलूकीयम्-218)

- साहित्यिक रुचि रखने वाले लगभग 160 शिक्षकों की अभिव्यक्ति को एक साथ मंच प्रदान करना सितम्बर-2018 की 'शिविरा' में संपादक की कुशलता का ही सूचक है। शैक्षिक चिंतन, राजस्थानी और हिन्दी विविधा, बाल जगत की सभी विधाओं के साथ शैक्षिक जगत के कर्मचारियों की यह 'शिविरा' शिक्षकों के चिंतन और अभिव्यक्ति को प्रेरित करने वाली है। यह सब संपादकीय टीम की सूझबूझ और संयोजन की कुशलता का ही परिणाम है।

सत्यनारायण शर्मा, बीकानेर

- 'शिविरा' पत्रिका का माह सितम्बर 2018 का चौथा 'शिक्षक-दिवस विशेषांक' आकर्षक मुखपृष्ठ के साथ प्राप्त हुआ। यह माह अनेक जयंतियों, दिवसों व पुण्यतिथि से संबंधित है। भारतीय संस्कृति में आदि काल से गुरु का महत्त्व रहा है। माता-पिता बालक का शारीरिक रूप से पोषण करते हैं किन्तु मानसिक रूप से पोषण शिक्षक ही करता है। खेजड़ली गाँव की घटना त्याग, बलिदान और पर्यावरण के प्रति अगाध प्रेम का प्रतीक है। 'दुलार ही बच्चों का विकास है', 'स्मृति संवर्धन हेतु सूत्र' एवं शिक्षकों से संबंधित सभी लेख पठनीय हैं। 'ज्ञान संकल्प पोर्टल' एवं 'क्लिक्स' अभिनव कार्यक्रमों की जानकारी अद्यतन के लिए नितांत आवश्यक है। स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के अटल व्यक्तित्व को सादर श्रद्धांजलि आलेख भी पठनीय व मननीय है।

महेन्द्र कुमार शर्मा, अजमेर

- आर्यावर्त्त भारतभूमि में समय-समय पर प्रकट विद्वज्जनों ने आचार्य, गुरु, शिक्षक की भूमिका निभाई तथा देश-प्रेम, निर्बल को विचार व आत्मिक बल, आत्मज्ञान प्रदत्त किया। उसी राह पर चलकर सर्वपल्ली गुरु ने शिक्षा ज्योति जगाई व आर्यधरा के सर्वोच्च पद पर पहुँचे। डॉ. राधाकृष्णन् के जन्म दिवस पर सम्मानस्वरूप प्रकाशित 'शिविरा' का सितम्बर 18 अंक विशेषांक के रूप में पाकर मन उद्वेलित, आनन्दित हुआ कि काश वर्षों पूर्व शिक्षक सम्मान को व्यावहारिक बनाते तो गुरुदेव से माड़सा, मास्टर न बनते। खैर, अब भी वक्त है। शिक्षक अपने संरक्षक देवनानी साहब 'शिक्षक' की शिक्षाहित, शिक्षकहित शिक्षार्थी भविष्य निर्माण की विभिन्न योजनाएँ तन, मन व धन (भामाशाह प्रेरणा) से अमल में लाकर पूर्ण कर समाज में प्रकट करें। सितम्बर 18 अंक में विद्वान जगत की प्रेरक अनुभूत रचनाएँ हैं। किसी एक की प्रशंसा उचित नहीं। विशेषांक मुखपृष्ठ से आवरणंत पृष्ठ तक आकर्षक बन पड़ा है। सम्पादक मण्डल बधाई व धन्यवाद का पात्र है। 'दिशाकल्प' व 'अपनों से अपनी बात' मननीय व पालनीय है।

मोहन राम विश्नोई, जैसलमेर

- शिविरा 'शिक्षक दिवस विशेषांक' मनहर चित्रों से सुसज्जित पढ़ा। हर्षातिरेक से अभिभूत हो गया। मात्र शैक्षिक चिंतन के आलेखों तक ही अपने आप को सीमित रखूँगा। 'अपनों से अपनी बात', 'दिशाकल्प' अपना पृष्ठ पढ़े। दोनों स्थायी स्तंभों में आदरणीय शिक्षामंत्री देवनानी व निदेशक माध्यमिक शिक्षा ने शिक्षक दिवस पर सभी शिक्षकों को बधाई दी है और दोनों ही आशान्वित हैं कि हमारी अपेक्षा है कि शिक्षक अपने व्यवहार व चरित्र को समाज व छात्रों के लिए प्रेरक बनावें। भारतरत्न कविरत्न अटल जी, पूर्व प्रधानमंत्री पर सम्पादक श्री गोमाराम जीनगर का आलेख सामयिक, प्रासंगिक व समग्र था। अटल जी के मार्मिक जीवन प्रसंगों को छू रहा था। 'राष्ट्रभाषा हिन्दी', 'हर एक दिन हिन्दी दिवस', शैक्षिक आलेख एक से बढ़कर एक था। इन आलेखों को पढ़कर आनन्दानुभूति हुई। 'मूल्यपरक शिक्षा के निहितार्थ' आलेख ने तो सत्य को उद्घाटित कर दिया कि उपदेश नहीं शिक्षक का आचरण-चरित्र ही छात्र को प्रभावित करता है। श्री ओमप्रकाश सारस्वत तो सिद्धहस्त लेखक हैं ही उनका हर आलेख एक सौगात है। अत्यंत खुशी का विषय रहा कि उभरते नव साहित्यकारों, रचनाकारों ने इस विशेषांक में अपना स्थान बना लिया। उनकी रम्य रचनाएँ मुझे बहुत भायी। उन्हें हार्दिक बधाई! साथ ही साथ सम्पादक मंडल

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सत्यमेव जयते

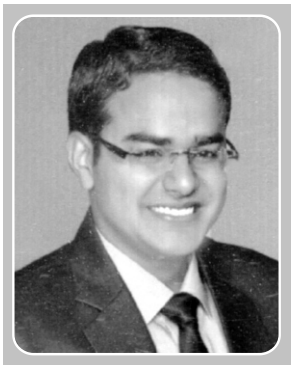

नथमल डिडेल
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

"गाँधी और शास्त्री जयंती मनाना एक दिन का उत्सव भर नहीं है। इस महान अवसर पर हमें दृढ़ संकल्पित होना चाहिए कि जिस विद्यालय, कार्यालय में हम अपनी सेवाएँ दे रहे हैं, वहाँ पूर्ण मनोयोग, निष्ठा और उत्साह से अपनी कार्य ऊर्जा का शत-प्रतिशत देते हुए कर्त्तव्यपालन करें। महात्मा गाँधी की भावनानुसार- युगशिल्पी शिक्षक जब पवित्र साधनों से विद्यार्थी के चरित्र निर्माण की साधना करेंगे तो सफलता रूपी सिद्धि अवश्य प्राप्त होगी।"

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

चरित्र निर्माण : अहिंसक समाज

02 अक्टूबर 2018 से महात्मा गाँधी का 150वाँ जयन्ती वर्ष अपूर्व उत्साह और नए संकल्पों के साथ मनाया जाएगा। 02 अक्टूबर 'अन्तरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस' के रूप में मनाया जाना अखिल विश्व में महात्मा गाँधी के अहिंसा के सिद्धांत की मान्यता को दर्शाता है। विकास और प्रगति के इस आधुनिक समय में शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के लिए अहिंसक समाज की आवश्यकता अधिक संवेदनशीलता के साथ स्वीकारी जा रही है। कहा भी गया है-'चेतना के विकास का अर्थ है मनुष्य का निरन्तर अहिंसक होते जाना।' पर्यावरण और प्रकृति में विकास और प्रगति के साथ अहिंसक बने रह पाने में शिक्षा एक पूरी जीवनदृष्टि विकसित करती है। 'जीओ और जीने दो' का सिद्धांत भी अहिंसा के वटवृक्ष के तले ही फलता-फूलता है।

महात्मा गाँधी और लालबहादुर शास्त्री जैसे महान व्यक्तित्वों के जीवन चरित्र हमें पुनरावलोकन का अवसर देते हैं। प्रेरणादायक महापुरुषों और शिक्षकों ने समाज को नई दिशा प्रदान की है। हमारा सौभाग्य है कि शिक्षा जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य करने का हमें सुअवसर मिला है। हमें अपनी प्राथमिकताओं को पूरी ईमानदारी से निर्धारित करने की महती आवश्यकता है। शासन व्यवस्थाओं को निरन्तर श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम करने का प्रयास करता है। छोटे-छोटे संकल्पों को दृढ़तापूर्वक करने से बड़ी-बड़ी सफलताएँ मिलती है। शिक्षा और विद्यार्थी हित की योजनाओं को प्रभावी रूप से क्रियान्वित करना हमारा कर्त्तव्य है। आज के विद्यार्थी ही कल के राष्ट्र के सुनागरिक बनेंगे। शिक्षकों का आचरण विद्यार्थियों का पाथेय बनता है। अतः शिक्षकों को राष्ट्र हित के उच्च आदर्शों को अपनाने में सदैव प्राथमिकता देनी चाहिए।

शिक्षा ऐसा मंत्र है जो हमें आजीवन सीखते रहने की प्रेरणा देता है। सही अर्थ में हमारे विद्यालय, शिक्षा और संस्कार के ऐसे जीवन्त प्रतिमान हैं, जहाँ विद्यार्थियों का व्यक्तित्व निखरता है, यही विद्यार्थी आगे चलकर राष्ट्र को मजबूत नेतृत्व प्रदान करते हैं। गाँधी और शास्त्री जयंती मनाना एक दिन का उत्सव भर नहीं है। इस महान अवसर पर हमें दृढ़ संकल्पित होना चाहिए कि जिस विद्यालय, कार्यालय में हम अपनी सेवाएँ दे रहे हैं, वहाँ पूर्ण मनोयोग, निष्ठा और उत्साह से अपनी कार्य ऊर्जा का शत-प्रतिशत देते हुए कर्त्तव्यपालन करें। महात्मा गाँधी की भावनानुसार- युगशिल्पी शिक्षक जब पवित्र साधनों से विद्यार्थी के चरित्र निर्माण की साधना करेंगे तो सफलता रूपी सिद्धि अवश्य प्राप्त होगी।

सभी के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ...

(नथमल डिडेल)

(पृष्ठ 4 का शेष)

को इस विशेषांक को सुन्दरतम बनाने के लिए बहुत-बहुत बधाई।

टेकचन्द्र शर्मा, झुंझुनूं

- 'शिविरा' का 'शिक्षक दिवस विशेषांक' को देखकर एक बाल कहानी याद आयी-'मेहनत रंग लाई।' निश्चित रूप से संपादक मण्डल के अथक प्रयास से यह कहानी यहाँ चरितार्थ होती है। 'शिविरा' का यह अंक लाजवाब ही नहीं अपितु संग्रहणीय अंक है। आज जहाँ शैक्षिक-साहित्यिक स्तरीय पत्रिकाओं की कमी खलती है। वहीं 'शिविरा' पत्रिका सुधि पाठकों को भरपूर सामग्री प्रदान कर उनके ज्ञान में अभिवृद्धि करती है। वह भी महंगाई के दौर में न्यूनतम राशि मात्र 75/- वार्षिक शुल्क के रूप में 1 पॉलीथिन कवर्ड के साथ (शिक्षकों के लिए) विशेषांक की जितनी तारीफ करें उतनी कम है। कम पृष्ठों में भरपूर चिंतनीय एवं पठनीय सामग्री ने पूर्व के शिक्षक दिवस के पाँच पुस्तकीय प्रकाशनों की पूर्ति कर दी। यहाँ यही कहा जा सकता है- 'कम संसाधन में रंग चोखा।' आकर्षक मुख पृष्ठ ने 'शिविरा' में चार चाँद लगा दिए। अब तो यही कहा जा सकता है कि शिक्षा विभाग की 'शिविरा' पत्रिका अब अपने निखार पर है, शबाब पर है, यौवन पर है। पत्रिका को पूरे परवान पर चढ़ाने का श्रेय सुधि पाठकों, विद्वज्ञ रचनाकारों के साथ कर्मशील संपादक मण्डल को जाता है। पत्रिका को जाने-अनजाने में चर्मोत्कर्ष पर पहुँचाने में जिनका भी योगदान है। उन सभी को बधाई।

महेश कुमार चतुर्वेदी, छोटी सादड़ी

- 'शिविरा' पत्रिका का माह सितम्बर 2018 का अंक समय पर उपलब्ध हुआ। सितम्बर 2018 का अंक 'शिक्षक दिवस', 'हिन्दी दिवस' के साथ-साथा बाबा रामदेव जयंती, गणेश चतुर्थी आदि अनेक उत्सवों के साथ महत्त्वपूर्ण हो जाता है। चूँकि 'शिविरा' शिक्षा विभाग की प्रमुख साहित्यिक पत्रिका है व शिक्षक दिवस की महत्ता के साथ-साथ शिक्षा विभाग से जुड़े हुए साहित्य में रुचि रखने वालों की, उनकी सृजनात्मकता का परिचय देती हुई उनकी अनेक विधाओं की रचनाओं के साथ यह अंक गरिमापूर्ण हो जाता है। इस अंक का मुखावरण पृष्ठ इसी संदर्भ में बहुत ही आकर्षक बन पाया है। 'अपनों से अपनी बात' में माननीय शिक्षा मंत्री जी का शिक्षक दिवस पर शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों से भावी पीढ़ी को राष्ट्र भक्तों के रूप में संवारने का आह्वान प्रेरणादायी है। यह सत्य है कि एक शिक्षक ही बालक को संस्कारित बनाने में अपना सर्वस्व त्याग करता है जो राष्ट्र निर्माण में सकारात्मक भूमिका अदा करता है। शिक्षा मंत्री जी ने इस माह में पड़ने वाले अन्य महत्त्वपूर्ण दिवसों के महत्व को शानदार ढंग से परिलक्षित किया है। धन्य है हमारे यशस्वी मंत्री जी। 'दिशाकल्प' में माननीय निदेशक महोदय ने राज्य सरकार द्वारा नव चयनित शिक्षकों के सम्मान व 'शिक्षक दिवस' पर गुरुजी का सम्मान करने से शिक्षकों को राष्ट्र निर्माण में अपने योगदान को आँकने की सोच विकसित करने का आह्वान प्रेरणास्पद है। इसी के साथ 'शिविरा' के इस विशेषांक के महत्त्व को भी गौरवान्वित करने से शिक्षक का मान बढ़ेगा। 'पुण्य स्मरण' में श्री गोमाराम जीनगर ने 'भारत रत्न' व भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जीवन चरित्र तथा भारत के निर्माण में उनकी भूमिका को उत्तम ढंग से रेखांकित किया है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी स्व. वाजपेयी ने ऐसा जीवन जीया जो आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देता रहेगा। ऐसे महापुरुषों को सच्ची श्रद्धांजलि उनके आदर्शों पर चलने से ही होगी। 'राष्ट्रभाषा जीवन्त बने' में राष्ट्रभाषा हिन्दी को प्रत्येक भारतीय द्वारा अपने जीवन में जीवनशैली बनाने का विचार परिलक्षित होता है। राष्ट्रों की अखंडता के लिए राष्ट्र भाषा का योगदान महत्त्वपूर्ण होता है। सभी को व्यक्तिगत हित, स्वार्थ से ऊपर उठकर हिन्दी को अपनाना चाहिए। इसी संदर्भ में सुषमा पचार का लेख 'हर एक दिन-हिन्दी दिवस' पाठकोपयोगी व मननीय है। प्रत्येक भारतीय को हिन्दी पर गर्व होना चाहिए। प्रत्येक कार्य में हिन्दी के प्रयोग से ही हिन्दी को सम्मान मिलेगा। इसके अलावा 'शिक्षक दिवस' पर प्रकाशित इस विशेष अंक की प्रकाशित साहित्यिक सामग्री स्तरीय व पठनीय है। शिक्षा विभाग से जुड़े शिक्षक कर्मचारियों ने इस लोकप्रिय 'शिविरा' पत्रिका में शैक्षिक चिन्तन, हिन्दी विविधा, राजस्थानी विविधा तथा बाल साहित्य पर अपने विचारों का सृजन कर सेवा का कार्य किया है। यह अंक साहित्य में रुचि रखने वालों के लिए प्रेरणादायी अंक है। इसके अतिरिक्त सभी स्थायी स्तंभ यथा पाठकों की बात, आदेश परिपत्र, शिविरा पंचांग सितम्बर 2018, विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम पूर्व की भाँति उपयोगी है। साधुवाद की पात्र है शिविरा टीम जिसने अपने अथक प्रयत्नों से इतना बड़ा अंक पाठकों के सामने रखा व 'शिविरा' की गरिमा में चार चाँद लगा रहे हैं। सधन्यवाद!

रामजीलाल घोड़ेला, लूणकरणसर, बीकानेर

- माह सितम्बर 2018 का शिविरा अंक इस बार 'शिक्षक दिवस विशेषांक' के रूप में सुन्दर एवं दर्शनीय आवरण के साथ समय पर प्राप्त हुआ। इस अंक का विमोचन 5 सितम्बर 2018 को राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह, जयपुर में आयोजित भव्य समारोह में माननीया मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे, माननीय शिक्षा मंत्री वासुदेव देवनानी ने हजारों शिक्षकों की साक्षी में किया। शिविरा परिवार के लिए यह गौरव दिवस रहा। यह गौरव और अधिक बढ़ जाता है यदि माननीय मुख्यमंत्री या कार्यक्रम संचालक अथवा निदेशक महोदय शिविरा को लेकर चार लाईन भी मंच से बोल जाते। शिविरा का पाठक परिवार छोटा नहीं रहा कार्यक्रम में उपस्थित अधिकांशः शिक्षक नए थे जिन्हें एक साथ शिविरा पत्रिका की जानकारी मिल जाती तथा वे सदस्यता ग्रहण कर परिवार में शामिल हो जाते। अंक अपने आप में संग्रहणीय ग्रंथ सा है। सामग्री का चयन सम्पादक मण्डल की कार्यश्रेष्ठता को सिद्ध करती है। सम्पादक श्री गोमाराम जी का आलेख 'भारत-रत्न, कवि-हृदयः अटल जी' शिविरा परिवार की ओर से शाब्दिक श्रद्धांजलि सा लगा। शैक्षिक चिन्तन, हिन्दी विविधा में संकलित आलेख पठनीय हैं। साथ ही मायड़ भाषा राजस्थानी में कहानियाँ व आलेख सीख देने वाली हैं। कविताओं एवं बाल साहित्य का समावेश अंक को पूर्णता प्रदान करता है। इस अंक के सभी सृजनशील रचनाकार, साहित्यकार सम्पादक टीम को बहुत-बहुत बधाइयाँ एवं आभार।

अनुराधा जीनगर, बीकानेर

विशेष रपट

राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान-2018

नए राजस्थान के आर्किटेक्ट बनें शिक्षक : मुख्यमंत्री

❐ महावीर प्रसाद गर्ग

शिक्षा विभाग राजस्थान द्वारा डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिवस को प्रतिवर्ष शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष अमरूदों के बाग में वृहद स्तर पर शिक्षकों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। सम्मान समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती वसुन्धरा राजे, माननीय मुख्यमंत्री राजस्थान, अध्यक्षता शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री वासुदेव देवनानी ने की। समारोह में ग्रामीण विकास एवं पंचायतराज मंत्री श्री राजेन्द्र सिंह राठौड़, उच्च एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी, जयपुर सांसद श्री रामचरण बोहरा, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान के अध्यक्ष डॉ. बी.एल. चौधरी तथा मुख्य सचिव देवेन्द्र भूषण गुप्ता विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

इस वर्ष का शिक्षक दिवस सम्मान समारोह प्रथम बार वृहद रूप से अमरूदों के बाग में आयोजित किया गया। समारोह में 50,000 से अधिक शिक्षकों की मौजूदगी में चयनित शिक्षकों को सम्मानित किया गया। इस समारोह में 36 चयनित शिक्षकों, 33 शिक्षकों को 'श्रीगुरुजी सम्मान', से पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त 03 जिला कलेक्टर, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला प्रमुख, पंचायत समिति प्रधान, विकास अधिकारी, जिला शिक्षा अधिकारी, पीईईओ., रमसा व एसएसए. के डीपीसी. व एडीपीसी., केजीबीवी, मॉडल स्कूल व शासन सचिवालय के अधिकारियों को भी इस अवसर पर सम्मानित किया गया।

मंच पर मुख्यमंत्री के साथ अन्य मंत्रीगण मंचासीन होने से पूर्व शिक्षक दिवस पर बड़े मंच से मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे ने शिक्षकों को प्रणाम किया उसके बाद राष्ट्रगीत वन्देमातरम का गायन जयपुर के विभिन्न विद्यालयों के शिक्षकवृन्द ने किया।

डॉ. एस. राधाकृष्णन के चित्र एवं माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर दीप

प्रज्वलन किया गया। इसके पश्चात सरस्वती वंदना की गयी।

कार्यक्रम में पधारे अतिथियों का पुष्पगुच्छ द्वारा स्वागत किया गया। शिक्षा राज्यमंत्री श्री वासुदेव देवनानी द्वारा मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे का स्वागत किया गया।

शिक्षा राज्य मंत्री का स्वागत भाषण : एम.एच.आर.डी. ने दूसरे राज्यों को हमारे शिक्षा मॉडल को लागू करने को कहा।

शिक्षा राज्य मंत्री श्री वासुदेव देवनानी ने अपने उद्बोधन में कहा कि ''शिक्षा विभाग ने पहली बार इतने वृहद स्तर पर शिक्षक सम्मान समारोह आयोजित किया। आज मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे के दूरदर्शी नेतृत्व में प्रदेश ने शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किए हैं। प्रदेश में शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ी है अन्य राज्य भी प्रदेश के मॉडल को अपना रहे हैं। शिक्षा मंत्री ने कहा कि पहली बार प्रदेश में 1 लाख 27 हजार शिक्षकों को पदोन्नति दी गयी है, जो शिक्षा विभाग के लिए गर्व की बात है।''

शिक्षामंत्री ने बताया कि ''राज्य सरकार ने प्रत्येक पंचायत में कक्षा 1 से 12 तक एक उ.मा. विद्यालय को आदर्श विद्यालय के रूप में स्थापित किया है। रमसा. व एसएसए. को मर्ज करके समग्र शिक्षा अभियान शुरू किया है। आंगनबाड़ी केन्द्रों को स्कूलों से जोड़ा गया है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने दूसरे राज्यों को राजस्थान मॉडल को अपनाने को कहा है। स्टाफिंग पैटर्न के बाद काउंसलिंग से पदस्थापन, सरकारी स्कूलों में बी.एड. इंटर्नशिप योजना, आर.टी.ई. में ऑनलाइन प्रवेश प्रक्रिया, शालादर्शन व शालादर्पण का कई राज्य यहाँ आकर अध्ययन कर चुके हैं। विद्यार्थी निजी स्कूलों को छोड़कर सरकारी स्कूलों में आने लगे हैं। सैकण्डरी का परीक्षा परिणाम 58 प्रतिशत से बढ़कर 80 फीसदी पहुँचा।'' शिक्षा विभाग द्वारा जो महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की गई हैं उसे शिक्षा विभाग के अधिकारी व शिक्षकों का परिश्रम बताया तथा आभार व्यक्त किया और भविष्य की चुनौतियों को स्वीकार करने का आह्वान किया।

लैपटॉप, साइकिल व स्कूटी वितरण: मुख्यमंत्री ने ई.बी.सी. की 11 छात्राओं को स्कूटी, 11 छात्राओं को पुरस्कार में एक-एक लाख रुपये का चैक एवं स्कूटी-लेपटॉप योजना में 11 मेधावी छात्राओं को लेपटॉप, 11 छात्राओं को साइकिल, टी.ए.डी. स्कूटी वितरण योजना में 11 छात्राओं को स्कूटी तथा देवनारायण छात्रा स्कूटी वितरण योजना में 11 छात्राओं को स्कूटी वितरित की गई।

शिक्षक सम्मान गीत : शिक्षक दिवस पर सम्मानित होने वाले शिक्षकों के सम्मान में शिक्षक सम्मान गीत जयपुर शहर की विभिन्न विद्यालयों की शिक्षिकाओं ने वाद्ययंत्र के साथ मधुर स्वर में प्रस्तुत किया-

'स्वागतम्, शुभ स्वागतम् शुभस्वागतम, शुभस्वागतम शुभ मूहूर्त मंगलवेला मंगलवेला, मंगलवेला गुरुब्रह्म, गुरु विष्णु....।'

शिक्षक प्रशस्ति पुस्तिका एवं शिविरा विशेषांक का लोकार्पण : शिक्षक सम्मान की मुख्य अतिथि माननीया श्रीमती वसुन्धरा राजे, माननीय शिक्षा मंत्री वासुदेव देवनानी व अन्य अतिथियों ने प्रकाशित 'प्रशस्ति पुस्तिका' का लोकार्पण किया। इस पुस्तिका में विभिन्न संदेश

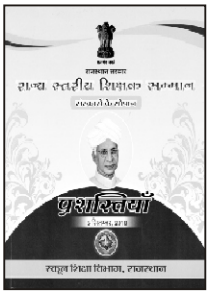

तथा पुरस्कृत होने वाले शिक्षकों द्वारा कराए गए विशेष कार्यों का विवरण मय फोटो के प्रकाशित किया गया है। साथ ही इस अवसर पर शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'शिविरा' के 'शिक्षक दिवस विशेषांक' जिसमें राज्य के 150 से अधिक शिक्षकों की रचनाओं का प्रकाशन किया गया, का भी गरिमामय मंच द्वारा लोकार्पण किया गया।

मुख्यमंत्री का उद्बोधन : नए राजस्थान का आर्किटेक्ट बनें शिक्षक

वसुन्धरा राजे मुख्य अतिथि श्रीमती वसुन्धरा राजे ने शिक्षकों की ओर मुखर होकर कहा कि ''आपकी ही मेहनत और लगन से शिक्षा के क्षेत्र में राजस्थान देशभर में 26वें स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँच गया है। हमने एक उन्नत, समृद्ध और प्रगतिशील राजस्थान का सपना देखा है जो प्रदेश के सभी शिक्षकों के सहयोग और योगदान से पूरा होगा।'' इस अवसर पर उन्होंने शिक्षकों को नए राजस्थान का आर्किटेक्ट बनने का चैलेन्ज दिया जिसे शिक्षकों ने अपने दोनों हाथ उठाकर स्वीकार किया। मुख्यमंत्री ने बचपन का संस्मरण सुनाया कि ''मुझे गणित विषय में कम रुचि थी और कम अंक आते थे। परीक्षाओं से कुछ महीने पहले एक शिक्षिका उनके स्कूल में आई। उन्होंने गणित में कमज़ोर विद्यार्थियों को अलग से कोचिंग दी जिससे गणित में रुचि जागी और अच्छे नम्बर मिले। एक शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों का जीवन बदला जाता है। यही वजह है कि शिक्षक ताउम्र याद रहते हैं।''

मुख्यमंत्री ने कहा कि ''प्रशिक्षण व उन्नयन के लिए शिक्षकों को विदेश भेजा जाएगा, ताकि शिक्षक वहाँ जाकर सीखें व वापस आकर यहाँ लागू करें जिससे बच्चों को बेहतर शिक्षा मिल सकेगी यह प्रयास अगले सत्र से ही शुरू किया जाएगा।''

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि ''पिछले पाँच वर्ष में स्कूलों की स्थिति सुधरी है, बच्चों के अंक पहले 50-60 फीसदी आते थे अब 97 फीसदी तक अंक आ रहे हैं। इसी का नतीज़ा है कि 14 लाख बच्चों ने प्राइवेट स्कूल छोड़कर सरकारी विद्यालय में प्रवेश लिया है।''

श्रीमती राजे ने बताया कि ''शुरू में 50 प्रतिशत पद रिक्त थे, शिक्षा विभाग में 78000 भर्तियाँ की हैं तथा 86 हजार भर्ती लाइन में है। इसके बाद 2-3 प्रतिशत रिक्तियाँ ही बचेंगी। शिक्षा विभाग ने ड्रापआउट मुक्त पर प्रदेश की तीन हजार से अधिक पंचायतों को उजियारी पंचायत घोषित किया है। इसमें बारां जिला अव्वल रहा है। दूसरे नम्बर पर धौलपुर जिला रहा है।''

इस अवसर पर श्रीमती राजे ने शिक्षा को रोजगार से जोड़ने के लिए 720 सैकण्डरी व सीनियर सैकण्डरी स्कूलों में 10 अलग-अलग व्यावसायिक शिक्षा के कोर्स चालू किए हैं।

मुख्यमंत्री ने सम्मानित होने वाले शिक्षकों, जनप्रतिनिधियों व अधिकारियों को बधाई व शुभकामनाएँ दी।

राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान वितरण : प्रारम्भिक, माध्यमिक एवं संस्कृत शिक्षा के चयनित 36 शिक्षकों को अमरूदों के बाग में वृहद कार्यक्रम में सम्मानित किया गया। श्रीमती वसुन्धरा राजे, श्रीमती किरण माहेश्वरी, श्री वासुदेव देवनानी, श्री रामचरण बोहरा, श्री राजेन्द्र सिंह राठौड़ तथा श्री डी.बी. गुप्ता ने सभी शिक्षकों को शॉल, ताम्रपत्र, प्रशस्तिपत्र व 21 हजार का चैक प्रदान किया। पुरस्कार वितरण के दौरान 50,000 से अधिक शिक्षक इसके साक्षी बने तथा पूरा पांडाल करतल ध्वनि से गुंजायमान होता रहा।

शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वालों का सम्मान : आदर्श व उत्कृष्ट विद्यालय योजना में कार्य करने वाले 15 अधिकारियों को प्रशस्तिपत्र, शील्ड व शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।

आभार प्रदर्शन : कार्यक्रम की कड़ी में आयुक्त स्कूल शिक्षा एवं राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद द्वारा शिक्षक सम्मान में पधारे सभी अधिकारियों, कर्मचारियों, सम्मानित होने वाले सभी शिक्षकों का आभार व्यक्त किया गया। विभिन्न व्यवस्थाओं में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से लगे सभी के सहयोग हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया।

राष्ट्रगान जन-गण-मन : कार्यक्रम के अन्त में जनसमूह में उपस्थित सभी ने समवेत स्वर में जन-गण-मन का गायन किया।

कार्यक्रम का मंच संचालन : शिक्षक सम्मान समारोह कार्यक्रम का मंच संचालन डॉ. सुभाष कौशिक, डॉ. ज्योति जोशी, श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा 'हंस' तथा श्रीमती आभा द्विवेदी ने संयुक्त रूप से किया।

आदर्श व उत्कृष्ट विद्यालयों में आधारभूत संरचनाओं व शैक्षिक उन्नयन हेतु जिला परिषद व पंचायत समितियों द्वारा करवाए गए कार्यों के आधार पर प्रथम तीन जिलों के जिला प्रमुख व मुख्य कार्यकारी अधिकारियों तथा प्रथम ग्यारह पंचायत समितियों के प्रधान व विकास अधिकारियों को शील्ड व प्रशस्तिपत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद जयपुर एवं शिक्षा विभाग द्वारा सम्बन्धित गतिविधियों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों, शिक्षकों को भी सम्मानित किया गया। आदर्श स्कूल प्रधानाचार्य (3), उत्कृष्ट विद्यालय प्र.अ. (3), शारदे छात्रावास (1), के.जी.बी.वी. (1), मॉडल स्कूल (1), उजियारी पंचायत (2), माध्यमिक जिला शिक्षा अधिकारी प्रा.शि. (2), शालादर्पण (1), एन.आई.सी. (1), एस.आई.ई.आर.टी. (1), शासन सचिवालय अधिकारी (2) इस प्रकार कुल 59 अधिकारियों को सम्मानित किया गया।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जीवन परिचय

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन (5 सितम्बर 1888-17 अप्रैल 1975) भारत के प्रथम उप राष्ट्रपति (1952-1962) और द्वितीय राष्ट्रपति रहे। वे भारतीय संस्कृति के संवाहक, प्रख्यात शिक्षाविद, महान दार्शनिक और एक आस्थावान हिन्दू विचारक थे। उनके इन्हीं गुणों के कारण सन् 1954 में भारत सरकार ने उन्हें सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से अलंकृत किया था। उनका जन्मदिन (5 सितम्बर) भारत में 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

जन्म एवं परिवार : डॉ. राधाकृष्णन का जन्म तमिलनाडु के तिरुतनी ग्राम में, जो तत्कालीन मद्रास से लगभग 64 कि.मी. दूरी पर स्थित है, में हुआ था। जिस परिवार में उन्होंने जन्म लिया वह एक ब्राह्मण परिवार था। उनका जन्म स्थान भी एक पवित्र तीर्थस्थल के रूप में विख्यात रहा है। राधाकृष्णन के पुरखे पहले कभी सर्वपल्ली नामक ग्राम में रहते थे और 18वीं शताब्दी के मध्य में उन्होंने तिरुतनी ग्राम की ओर निष्क्रमण किया था। लेकिन उनके पुरखे चाहते थे कि उनके नाम के साथ उनके जन्मस्थल के ग्राम का बोध भी सदैव रहना चाहिए। इसी कारण उनके परिजन अपने नाम के पूर्व 'सर्वपल्ली' धारण करने लगे थे।

डॉ. राधाकृष्णन एक गरीब किन्तु विद्वान ब्राह्मण की सन्तान थे। उनके पिता का नाम 'सर्वपल्ली वीरास्वामी' और माता का नाम 'सीताम्मा' था। उनके पिता राजस्व विभाग में काम करते थे। उन पर बहुत बड़े परिवार के भरण-पोषण का दायित्व था। वीरास्वामी के पाँच पुत्र तथा एक पुत्री थे। राधाकृष्णन का स्थान इन सन्ततियों में दूसरा था। उनके पिता काफी कठिनाई के साथ परिवार का निर्वहन कर रहे थे। इस कारण बालक राधाकृष्णन को बचपन में कोई विशेष सुख प्राप्त नहीं था।

मानद उपाधियाँ

- सन् 1931 से 1936 तक आन्ध्र विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर रहे।
- ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में 1936 से 1952 तक प्राध्यापक रहे।
- कलकत्ता विश्वविद्यालय के अन्तर्गत आने वाले जॉर्ज पंचम कॉलेज के प्रोफेसर के रूप में 1937 से 1941 तक कार्य किया।
- सन् 1939 से 1943 तक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के चांसलर रहे।
- 1953 से 1962 तक दिल्ली विश्वविद्यालय के चांसलर रहे।
- 1946 में यूनेस्को में भारतीय प्रतिनिधि के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

1952 में सोवियत संघ से आने के बाद डॉ. राधाकृष्णन उपराष्ट्रपति निर्वाचित किए गए तथा 13 मई 1962 को भारत के राष्ट्रपति निर्वाचित हुए।

भारत रत्न– यद्यपि 1931 में ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा 'सर' की उपाधि प्रदान की गई थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इसका औचित्य नहीं रहा। 1954 में महान दार्शनिक व शैक्षिक उपलब्धियों के लिए देश का सर्वोच्च अलंकरण 'भारत रत्न' प्रदान किया गया।

सन् 1962 से डॉ. राधाकृष्णन् जी के सम्मान में उनके जन्म दिवस 05 सितम्बर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

शिक्षक सम्मान समारोह 05 सितम्बर, 2018 को सम्मानित होने वाले जनप्रतिनिधि/अधिकारियों/शिक्षकों की सूची

माध्यमिक शिक्षा

1. श्री बृजेश कुमार सिंह, बस्सी (चितौ.)
2. श्री गोपाल राम नाई, मोरखाना (बीकानेर)
3. श्री विक्रम सिंह देवड़ा, सुमेरपुर
4. श्री डाल सिंह शेखावत, काशी का बास
5. श्री बाबूलाल भीमवाल, कलसाडा
6. श्री रामवीर सिंह, सोगर (भरतपुर)
7. श्रीमती अनु चौधरी, उतरादाबास (हनु.)
8. श्री कैलाश चन्द्र मीना, धनेटा (अलवर)
9. श्री बालचन्द कारपेन्टर, सलौतिया (झालावाड़)
10. श्री राजेश कुमार, घोडीवारा खुर्द, झुंझुनूं
11. श्रीमती अनुसूइया शर्मा, गाँधीनगर, जयपुर
12. श्रीमती मनीषा त्रिपाठी, मोईनिया इस्लामिया (अजमेर)
13. श्री रतन सिंह भाटी, मूलाना (जैसलमेर)
14. श्री महेन्द्र कुमार शर्मा, न्यौठा (भरतपुर)
15. श्री पदम कुमार पाटनी, अरनियारासा, शाहपुरा
16. डॉ. (श्रीमती) मुकेश कुमारी, अजमेर
17. श्री पुखराज खाती, डेर (नागौर)
18. श्रीमती विमला कटारिया, (झुंझुनूं)
19. श्री शिव प्रकाश शर्मा, फतेहपुरा कलां, (जयपुर)
20. डॉ. राकेश मोंगिया, तेलीपाड़ा (जयपुर)
21. श्री गोविन्द लाल, भांवता, कुचामन सिटी
22. श्री ओम प्रकाश मेहरा, नानोर (झालावाड़)
23. श्री बसन्तकुमार पारीक, आष्टीकलां (जयपुर)
24. श्री जे.एन. शर्मा, मोती कटला (जयपुर)
25. श्री विनोद जैन, डाकन कोटड़ा, उदयपुर
26. श्री रामेश्वर लाल विश्नोई, आरजिया (भीलवाड़ा)

प्रारंभिक शिक्षा

27. डॉ. स्नेहलता अरोड़ा, नागौरी गेट, जोधपुर
28. श्री देवी लाल बलाई, बनेड़ा, भीलवाड़ा
29. श्रीमती अंजलि पण्ड्या, कनबा (डूँगरपुर)

संस्कृत शिक्षा

30. श्री हरि प्रसाद यादव, बा. संस्कृत विद्यालय नवलपुरा (जयपुर)
31. श्री विमल कुमार जैन, गलोद टोंक
32. श्री मनोज कुमार, रामगढ़-नोहर, हनुमानगढ़
33. डॉ. राजेन्द्र कुमार निर्मल, हिण्डोली, बूँदी
34. डॉ. योगेन्द्र सिंह नरूका, मूक बधिर विद्यालय, जयपुर
35. श्रीमती सरोज लोयल, डाइट, सीकर
36. श्री नारायण लाल जगेटिया, प्रतापनगर, भीलवाड़ा

आदर्श व उत्कृष्ट विद्यालय योजना में सम्मानित होने वाले अधिकारियों की सूची

जिला कलक्टर

1. श्री मुक्तानन्द अग्रवाल, चूरू
2. श्री दिनेश चन्द जैन, हनुमानगढ़
3. श्री दिनेश कुमार यादव, झुंझुनूं

डीपीसी.–एसएसए.

4. श्री योगेश चन्द शर्मा, अलवर
5. श्री सम्पत राम बारूपाल, चूरू
6. श्री ओम प्रकाश शर्मा, चित्तौड़गढ़

डीपीसी.–रमसा.

7. श्री हरलाल सिंह हुड्डा, हनुमानगढ़
8. श्री पितराम सिंह काला, चूरू
9. श्री राजकुमार शर्मा, झुंझुनूं

एडीपीसी.–एसएसए.

10. श्री मनोज कुमार शर्मा, अलवर
11. श्री बजरंग लाल सैनी, चूरू
12. श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा, चित्तौड़गढ़

एडीपीसी.–रमसा.

13. श्री रणवीर सिंह शर्मा, हनुमानगढ़
14. श्री गोविन्द सिंह राठौड़, चूरू
15. श्रीमती विनोद जानू, झुंझुनूं

जिला प्रमुख

16. श्री शक्ति सिंह हाड़ा, भीलवाड़ा
17. श्री प्रवेश कुमार सालवी, राजसमंद
18. श्री हरलाल सहारण, चूरू

मुख्य कार्यकारी अधिकारी

19. श्री गजेन्द्र सिंह, भीलवाड़ा
20. श्री गोविन्द सिंह राणावत, राजसमंद
21. श्री अशोक कुमार असीजा, चूरू

प्रधान

22. श्री जयदेव भिड़ासरा, हनुमानगढ़
23. श्रीमती ज्योति कंवर, चूरू
24. श्री ओम प्रकाश रोधा, किशनगढ़बास
25. श्री प्रभूलाल भील, रेलमगरा
26. सुश्री आशा बैरवा, माण्डल
27. श्रीमती लक्ष्मी देवी साहू, भीलवाड़ा
28. श्रीमती शोभा चौहान, रायपुर
29. श्रीमती कारी बाई, प्रतापगढ़
30. श्रीमती घनश्याम कंवर, माण्डलगढ़
31. श्रीमती जशोदा मीणा, निम्बाहेड़ा
32. श्रीमती सरोज गुर्जर, सुवाणा

विकास अधिकारी

33. श्री छगनाराम बरायच, हनुमानगढ़
34. श्री हरीराम माहिचा, चूरू
35. श्रीमती हेमन्त चांदोलिया, किशनगढ़वास
36. श्री जितेन्द्र सिंह राजावत, रेलमगरा
37. श्री गिर्राज सिंह मीणा, माण्डल
38. श्री अमित कुमार जैन, आसीन्द
39. श्री तनुराम राठौड़, रायपुर
40. श्री अनिल पहाड़िया, प्रतापगढ़
41. श्री मुकेश जैमन, माण्डलगढ़
42. श्री भँवर लाल बिश्नोई, निम्बाहेड़ा
43. श्री रूप सिंह गुर्जर, सुवाणा

प्रधानाचार्य, आदर्श स्कूल

44. श्री रतनलाल, राआउमावि. करणपुरा, हनुमानगढ़
45. श्री राजेन्द्र कुमार, भगवान महावीर एवं सेठ मेघराज ठोलिया राआउमावि. निमाज
46. श्रीमती रजनी शेखावत, राबाउमावि. बीजेएस., जोधपुर

प्रधानाध्यापक, उत्कृष्ट स्कूल

47. श्री उम्मेदाराम चौधरी, राउप्रावि. भौमाणी, सियागों की ढ़ाणी, बाड़मेर
48. श्री गिरधर सिंह राठौड़, राउप्रावि. प्रतापपुरा, अजमेर
49. श्री अरुण देव त्रिपाठी, राउप्रावि. मान सिंह का खेड़ा, चित्तौड़गढ़
50. **प्रधानाचार्य, मॉडल स्कूल**
    श्री परमवीर सिंह थिंद, स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल, सूरतगढ़
51. **प्रधानाध्यापिका, केजीबीवी.**
    श्रीमती रजनी बाला शर्मा, केजीबीवी., मौजपुर, लक्ष्मणगढ़, अलवर
52. **वार्डन, शारदे बालिका छात्रावास**
    श्रीमती नीलकमल यादव, शारदे बालिका छात्रावास बासकृमालनगर, अलवर
53. **जिशिअ. प्रा.शि., उजियारी पंचायत**
    श्री मनफूल नागर, जिला शिक्षा अधिकारी, प्रारम्भिक शिक्षा, बारां
54. **अतिजिशिअ. मा.शि., उजियारी पंचायत**
    श्री कन्हैयालाल देदवाल, जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा, बारां
55. **एनआईसी.**
    श्री विनोद कुमार जैन, तकनीकी निदेशक, एनआईसी., शिक्षा संकुल, जयपुर
56. **शालादर्पण**
    श्री अविनाश चौधरी, कार्यक्रम अधिकारी, शालादर्पण, शिक्षा संकुल, जयपुर
57. **एसआईईआरटी.**
    डॉ. जगदीश कुमावत व्याख्याता एसआईईआरटी. उदयपुर
58. **विशेषाधिकारी–शिक्षा (ग्रुप–1)**
    श्री बालकृष्ण गुप्ता, विशेषाधिकारी शिक्षा (ग्रुप–1), जयपुर
59. **प्रा.शि. (आयोजना)**
    श्री सत्यनारायण यादव, अनुसंधान अधिकारी प्रा.शि.(आयोजना), जयपुर

गुरुजी सम्मान पुरस्कार 2018 हेतु प्राशि. में कार्यरत व चयनितों की सूची

1. श्रीमती सरिता यादव, अजमेर
2. श्री अश्वनी कुमार शर्मा, अलवर
3. श्री रमेश चन्द्र बलाई, बाँसवाड़ा
4. श्री हरिनारायण शर्मा, बाराँ
5. श्री चम्पालाल गर्ग, बाड़मेर
6. श्री अनुराग सिंह रजौरिया, भरतपुर
7. श्रीमती कुसुम तोदी, भीलवाड़ा
8. श्री हुकम चन्द चौधरी, बीकानेर
9. श्री गिरधारी लाल गोचर, बूँदी
10. श्री धनराज गायरी, चित्तौड़गढ़
11. श्री मंगेजाराम, चूरू
12. श्री रमेश चन्द्र शर्मा, दौसा
13. श्री राजेश शर्मा, धौलपुर
14. श्री कमलेश कुमार जोशी, डूँगरपुर
15. श्री ईश्वर लाल, गंगानगर
16. श्री सुरजीत कुमार, हनुमानगढ़
17. श्रीमती उषा शर्मा, जयपुर
18. श्री शेरसिंह दैया, जैसलमेर
19. श्री पोकरा राम, जालोर
20. श्री लाल चन्द राठौर, झालावाड़
21. श्री महेन्द्र सिंह, झुंझुनूं
22. श्री संतोष कुमार, जोधपुर
23. श्री मुकेश कुमार सारस्वत, करौली
24. श्री रामफूल मीणा, कोटा
25. श्री श्रवण कुमार सोनी, नागौर
26. श्री हितेश राणावत, पाली
27. श्री दिलीप करणपुरिया, प्रतापगढ़
28. श्री दिनेश चन्द्र श्रीमाली, राजसमंद
29. श्री बाबूलाल बैरवा, सवाई माधोपुर
30. श्री अमीचन्द जाट, सीकर
31. श्री चेताराम दूण, सिरोही
32. श्री देवकीनन्दन गौतम, टोंक
33. श्री प्रकाश चन्द्र लौहार, उदयपुर

देवनारायण छात्र स्कूटी वितरण :

ममता गुर्जर (सांगानेर), रिंकू गुर्जर (आमेर), मोनिका गुर्जर (कोटपूतली), कविता (कोटपूतली), सुमन (बानसूर), किरण गुर्जर (विराटनगर), रोशनी गुर्जर (चौथ का बरवाड़ा), नीतेश (बाड़ी), शीला गुर्जर (कोटपूतली), सावित्री देवी गुर्जर (कोटपूतली), आशा गुर्जर (जमवा रामगढ़)

जनजाति विकास विभाग द्वारा संचालित निःशुल्क स्कूटी वितरण :

सुश्री वर्षा कुमारी अहारी (बांसवाड़ा), टीना कुमारी (बांसवाड़ा), खूशबू (बांसवाड़ा), संतोष (बांसवाड़ा), दीपिका डामोर (बांसवाड़ा), आशा (बांसवाड़ा), सीताकुमारी (उदयपुर), केशर कुमारी (उदयपुर), शीतल खराड़ी (उदयपुर), धूली कुमारी मीणा (उदयपुर), रूपवती मीणा (उदयपुर)

09 पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी सम्मानित :

उजियारी पंचायतों में से सर्वाधिक अनामांकित एवं ड्राप आउट बच्चों को विद्यालयों में नामांकित कराने वाली ग्राम पंचायत के 09 पीईईओ. को इस राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह में सम्मानित किया गया। प्रत्येक को शॉल, प्रशस्तिपत्र व स्मृति चिह्न प्रदान किए गए।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित

'डॉ. राधाकृष्णन् के आदर्शों को आत्मसात करें'–शिक्षा राज्यमंत्री–शिक्षा राज्य मंत्री श्री वासुदेव देवनानी ने बुधवार को शिक्षा संकुल में देश के पूर्व राष्ट्रपति और महान शिक्षाविद् डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को पुष्पांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा कि डॉ. राधाकृष्णन सही मायने में शिक्षा के उजास के संवाहक थे। उन्होंने कहा कि अपना जन्म दिन शिक्षकों को समर्पित कर शिक्षक दिवस की शुरूआत करने वाले डॉ. राधाकृष्णन के आदर्शों को आत्मसात करने की जरूरत है।

श्री देवनानी ने डॉ. राधाकृष्णन के इस जीवन दर्शन को हृदयंगम करने पर जोर दिया जिसमें उन्होंने कहा था कि समाज की बुराइयों को दूर करने का सबसे सबल माध्यम शिक्षा है। शिक्षा राज्य मंत्री ने डॉ. राधाकृष्णन को पुष्पांजलि अर्पित की तथा उनके जीवन से सीख लेने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि यही है कि हम उनके दिए आदर्शों का अनुकरण करते हुए शिक्षित-विकसित समाज के निर्माण के लिए कार्य करें।

राजस्थान के दो शिक्षकों को मिला राष्ट्रीय पुरस्कार :

उपराष्ट्रपति श्री वैंकेया नायडू ने बुधवार को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित शिक्षक दिवस समारोह में राजस्थान के दो शिक्षकों श्री इमरान खान एवं डॉ. सुमन जाखड़ को राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। समारोह में केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री प्रकाश जावड़ेकर व राज्य मंत्री श्री उपेन्द्र कुशवाह भी मौजूद थे।

अलवर के राजकीय संस्कृत उच्च प्राथमिक विद्यालय एवं चूरू जिले की राजगढ़ स्थित राजकीय मोहता बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय की डॉ. सुमन जाखड़ को शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों के लिए यह सम्मान दिया गया। समारोह की पूर्व संध्या पर उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से भी भेंट की।

शिक्षक दिवस पर मुख्यमंत्री की ओर से प्रदेशवासियों को शुभकामनाएँ– श्रीमती वसुन्धरा राजे ने शिक्षक दिवस (5 सितम्बर) के अवसर पर प्रदेश के सभी शिक्षकों को बधाई और शुभकामनाएँ दी। श्रीमती राजे ने अपने संदेश में कहा कि ''शिक्षक विद्यार्थी के जीवन में ज्ञान का प्रकाश फैलाकर उन्हें अपने उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करने के लिए प्रेरित करते हैं। माता-पिता के अलावा शिक्षक ही विद्यार्थियों में सुसंस्कारों की नींव रखकर राष्ट्र निर्माण में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान करते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि जिन देशों में शिक्षकों को सम्मान दिया जाता है वही देश तरक्की के सोपान चढ़कर अग्रिम पंक्ति में अपना स्थान बनाते हैं। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे अपने गुरुजनों के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान की महान भारतीय परम्परा को और अधिक मजबूत बनाएँ।''

शिक्षक दिवस पर राज्यपाल की शुभकामनाएँ– राज्यपाल श्री कल्याण सिंह ने शिक्षक दिवस पर प्रदेश के शिक्षकों को शुभकामनाएँ दी हैं। राज्यपाल ने कहा कि ''शिक्षकों का समाज में सम्मानजनक स्थान है। शिक्षक बच्चे की सोच का निर्माता होता है। एक तरह से शिक्षक मानवता की वैचारिक प्रक्रिया को दिशा प्रदान करते हैं। श्री सिंह ने इस मौके पर शिक्षकों का आह्वान किया है वे युवा पीढ़ी में ईमानदारी, सत्य, न्याय, करुणा, और कर्त्तव्यनिष्ठा जैसे आदर्श मूल्यों को आत्मसात कराएँ।''

पीएम. मोदी भी हुए चूरू की सुमन के मुरीद, संघर्ष की कहानी सुन बढ़ाया हौंसला– प्रधानमंत्री के सामने जब मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार के लिए चयनित 45 अध्यापकों में से छह अध्यापकों को अनुभव बाँटने के लिए चुना तो उनमें एक चूरू के राजगढ़ की राजकीय मोहता बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय की डॉ. सुमन जाखड़ भी थी। डॉ. सुमन की कहानी सुनकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी उनकी तारीफ़ की। सुमन ने बताया कि ''राजगढ़ में अपराध का ग्राफ ज्यादा है। ऐसे में लड़कियों को स्कूल तक खींचने की चुनौती, लेकिन उन्होंने यह चुनौती स्वीकारी और कुछ ही साल में स्कूल में दाखिला 400 से बढ़कर 1300 हो गया।'' उन्होंने प्रधानमंत्री को बताया कि वह घर-घर जाकर बच्चियों को स्कूल में भेजने के लिए लोगों को मनाती है।

इनसे पीएम. ने पूछ लिया कुछ ऐसा– प्रधानमंत्री ने जब लंदन में इमरान का नाम लेकर कहा था, ''हिंदुस्तान अलवर के इमरान में बसता है।'' इस पर मो. इमरान ने कहा ''तब से मैं प्रधानमंत्री से मिलना चाहता था। आज मेरी इच्छा पूरी हो गई। पीएम ने मुझसे पूछा और इमरान कैसे हो। तुमने कितने एप बनाए हैं। यू आर डूइंग वेल!'' राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार के लिए चुने गए देशभर के 45 शिक्षकों में से एक अलवर के श्री इमरान खान मेवाती भी है। उन्हें बुधवार 5 सितम्बर, 2018 को उपराष्ट्रपति वैंकेया नायडू ने पुरस्कार से नवाजा। इससे पहले उन्होंने मंगलवार 4 सितम्बर, 2018 को प्रधानमंत्री से मुलाकात की।

'सृजन एक सांस्कृतिक संध्या'

राजस्थान राज्य के सम्मानित होने वाले शिक्षकों के सम्मान में राज्य के शिक्षक कलाकारों द्वारा मनोहारी 'सृजन एक सांस्कृतिक संध्या' का आयोजन शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या 4 सितम्बर, 2018 सायं 6 बजे बिड़ला सभागार में किया गया। सांस्कृतिक संध्या के मुख्य अतिथि श्रीमती किरण माहेश्वरी मंत्री तकनीकी, संस्कृत शिक्षा एवं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान सरकार तथा कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री वासुदेव देवनानी शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) शिक्षा विभाग राजस्थान सरकार रहे। माननीय अतिथियों ने सरस्वती माँ की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं उनके समक्ष दीप प्रज्वलन किया। सांस्कृतिक संध्या में अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त, अनेक राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित कत्थक नृत्यांगना अलवर की डा. अनुरिता झा द्वारा शास्त्रीय कत्थक नृत्य द्वारा गणेश गुरु वंदना की प्रभावी प्रस्तुति दी गई तथा जयपुर के श्री प्रकाश शर्मा ने जयपुर मण्डल के शिक्षक-शिक्षिकाओं द्वारा बॉलीवुड गीत देवा श्री गणेशा... पर आधारित गणेश वन्दना प्रस्तुत की। जयपुर मण्डल के स्वागत गीत पश्चात शिक्षक कलाकारों द्वारा भावपूर्ण प्रस्तुतियाँ दी गई। शिवतांडव नृत्य ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध-सा कर दिया।

सांस्कृतिक संध्या में झुन्झुनूं के कलाकारों ने राजस्थानी लोक नृत्य तथा श्री गंगानगर के कलाकारों ने गिद्दा की मनभावन प्रस्तुतियाँ दी।

जयपुर मंडल के कलाकारों ने जब 'डिग्गीपुरी का राजा' का सामूहिक गीत प्रस्तुत किया तो सभागार में बैठे श्रोता भी जैसे भाव विभोर हो उनके स्वर में स्वर मिलाने लगे। अजमेर मण्डल द्वारा चरी नृत्य 'बरस बरस म्हारा इन्दर राजा' और कव्वाली की भी शानदार प्रस्तुति रही। चूरू के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत केसरिया बालम गीत विशेष सराहा गया।

निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्री नथमल डिडेल ने शिक्षकों के सम्मान में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले शिक्षकों को शानदार प्रस्तुति के लिए बधाई एवं शुभकामनाएँ दी। सभी का आभार स्वीकार किया। सभी शिक्षक कलाकारों का माननीय शिक्षा मंत्री के साथ ग्रुप फोटो लिया गया तथा राष्ट्रगान जन-गण-मन के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

सांस्कृतिक संध्या का मंच संचालन डॉ. सुभाष कौशिक, ज्योति जोशी तथा श्रीमती आभा द्विवेदी द्वारा किया गया।

प्रधानाचार्य (से.नि.)
4/705, जवाहर नगर, जयपुर
मो. 9414466463

मासिक गीत

देश प्रेम का भाव जगाने...

देश प्रेम का भाव जगाने, ग्राम नगर अभियान चले।
लिए स्वदेशी मंत्र आज फिर, बालक वृद्ध जवान चले।।

आज विदेशी कम्पनियाँ फिर भरत भूमि पर आईं हैं।
भारत की प्रभुसत्ता पर अधिकार जमाने आईं हैं।।
डालर के बल पर स्वदेश में, उद्योग लगाने आईं हैं।
सजग, उठो हे भारत वासी, आजादी का गान चले...।।1।।

करें प्रतिज्ञा भारतवासी, वस्तु स्वदेशी लेंगे हम।
अपना पैसा अपने घर में, देश समृद्ध बनाएँगे हम।।
माटी से सोना उपजाएँ, जाल विदेशी काटें हम।
स्वाभिमान का भाव जगाने, ग्राम नगर अभियान चले...।।2।।

ग्राम-ग्राम उद्योग लगाएँ, हस्तकला सरसाएँ हम।
भरे रहें भण्डार सभी के, अधिक अन्न उपजाएँ हम।।
घर-घर दीप जले लक्ष्मी के, गीत खुशी से गाएँ हम।
भारत भू का भाग जगाने, आज स्वदेशी भाव जगे...।।3।।

अपने पैरों आज खड़े हों, भीख नहीं हम माँगेंगे।
कठिन परिश्रम करके हम सब, आगे कदम बढ़ाएँगे।।
चरण चूमने मंजिल आए, भारत भाग्य बनाएँगे।
मंत्र स्वदेशी तंत्र स्वदेशी का पावन अभियान चले....।।4।।

संकलन : **मधुसूदन व्यास**
माताजी मंदिर के सामने वाली गली,
मूंदड़ों का चौक, बीकानेर
मो. 9602729522

राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान-2017

डॉ. सुमन जाखड़ : बहुमुखी व्यक्तित्व

❐ अनिता चौधरी

बहुमुखी प्रतिभा की धनी डॉक्टर सुमन जाखड़ राजकीय मोहता बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय राजगढ़ (चूरू) की प्रधानाचार्य है। आप एक आदर्श शिक्षक, कुशल प्रशासक, ममतामयी माँ एवं सेवाभावी सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। अपने सद्व्यवहार, दृढ़ इच्छाशक्ति एवं दूरदर्शी सोच के बल पर आपने राजकीय मोहता बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय राजगढ़ (चूरू) की कायापलट कर दी। अपने सरल हृदयी, निष्कपट, ईमानदार, लोक हितैषी व्यक्तित्व के कारण आज आप न केवल संपूर्ण विद्यालय परिवार अपितु समस्त राजगढ़ (चूरू) की चहेती बन गई हैं। बालिका शिक्षा और सुरक्षा को समर्पित डॉ. सुमन जाखड़ ने 'राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2017' प्राप्त कर संपूर्ण राजस्थान को गौरवान्वित किया है।

चूरू जिले (राजस्थान) में सबसे बड़े बीहड़ क्षेत्र वाले ग्राम लीलकी, तहसील राजगढ़ में दिनांक 5 अक्टूबर 1971 को परिवार की प्रथम संतान के रूप में आपका जन्म हुआ। पिता एडवोकेट श्री रणजीत सिंह पचार एवं माता श्रीमती रोशनी देवी ने पुत्रवत् आपका स्वागत किया। अपनी लगन व अध्यनशीलता से आप श्रेष्ठ अंकों के साथ शिक्षा की सीढ़ियाँ चढ़ती गई।

सन् 1993 में शिक्षा स्नातक (B.Ed.) की डिग्री प्राप्त करते ही वरिष्ठ अध्यापक (विज्ञान) के पद पर आपको राजकीय नियुक्ति मिली। अध्ययन की अदम्य लालसा के कारण 1994 में रसायन विज्ञान में स्नात्तकोत्तर, सन् 2000 में शिक्षा स्नात्तकोत्तर (M.Ed.) की शिक्षा ग्रहण की, तत्पश्चात् सन 2011 में अपनी ज्ञान-क्षुधा को शांत करने हेतु ''A Study of psychosocial conditions that affect the attitude of learners towards internet based learning'' नामक शीर्षक से अपना शोध ग्रंथ लिखा और विद्या-वारिधी (पी.एच.डी.) की उपाधि प्राप्त की। अपनी ज्ञानगंगा को प्रवाहमान रखते हुए आपने समय-

समय पर शैक्षिक, पर्यावरण एवं सामाजिक विषयों पर आयोजित राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय सेमिनारों, गोष्ठियों एवं कार्यशालाओं में सक्रिय रूप से सहभागिता निभाई। डॉ. विनोद जाखड़ आपके पति समाज सेवा को समर्पित आयुर्वेदिक चिकित्सक हैं। आपने अपने गृहस्थ जीवन को भी अत्यंत अनुशासन एवं समर्पण से पोषित किया है।

दिनांक 27 फरवरी 2004 को आपने अपना नया कार्यभार राजकीय माध्यमिक विद्यालय, टमकोर (झुंझुनूं) में ग्रहण किया।

तत्पश्चात् दिनांक 7 मई 2013 को विभागीय पदोन्नति द्वारा प्रधानाचार्य पद पर राजकीय मोहता बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय राजगढ़ (चूरू) में आपका शुभागमन हुआ। 500 मीटर की परिधि में 5 निजी शिक्षण संस्थाओं से घिरे, न्यूनतम मानवीय, भौतिक संसाधनों और मात्र 430 विद्यार्थियों युक्त इस विद्यालय में चुनौतीपूर्ण वातावरण में आपने कार्य ग्रहण किया।

कर्मठ, समर्पित शिक्षक एवं कुशल प्रशासक: विद्यालय में कार्यभार संभालने पश्चात् सुनियोजित रूप से नामांकन वृद्धि, ड्रॉपआउट में कमी, भौतिक संसाधनों, जनसहयोग, शैक्षिक व सहशैक्षिक उपलब्धियों आदि का पूर्ण मनोयोग से विकास करते हुए आपने विद्यालय को राष्ट्रीय पटल पर आलोकित किया। उक्त विद्यालय में सर्वाधिक नामांकन वाला बालिका विद्यालय है।

शिक्षा जगत में अपनी कर्मठता एवं विभिन्न उपलब्धियों हेतु डॉक्टर सुमन जाखड़ को ब्लॉक, जिला एवं मंडल स्तर पर भी व्यक्तिशः सम्मानित किया गया। संपूर्ण विद्यालय परिवार डॉक्टर सुमन जाखड़ के कुशल नेतृत्व में एक समर्पित टीम की तरह कार्य करता है। वृहद संख्या में विभिन्न सम्प्रदायों के विद्यार्थियों के अभिभावकों को एक पृथक-पृथक मानसिकता वाले स्टाफ सदस्यों में सामंजस्य एवं समन्वय स्थापित कर विद्यालय विकास में मानवीय शक्ति का अधिकतम व सुन्दर उपयोग करने में आपकी उपलब्धि अनुकरणीय है।

आपका निष्पक्ष एवं सकारात्मक दृष्टिकोण प्रेरणादायक है। जिला समान परीक्षा संचालन समिति की सक्रिय सदस्य के रूप में आपका उल्लेखनीय योगदान रहा है।

सामाजिक सरोकारी व्यक्तित्वः- आप न केवल अपने पद एवं पदभार के प्रति निष्ठ है। वरन एक सामाजिक प्राणी होने के नाते समाज के उत्थान हेतु भी निरंतर प्रयासरत हैं। शिक्षा को समाज सेवा से जोड़ने के लिए आपने प्रशिक्षित प्रभारी जिला सहायक कमिश्नर (गाइड) के तौर पर महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। उनका सक्रियण करते हुए राष्ट्रपति पुरस्कार तक पहुँचाया।

'संस्कार निर्माण केन्द्र ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय' की सक्रिय सदस्य के रूप में आपका योगदान अवर्णनीय है। आपको चूरू जिले की 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' अभियान की ब्रांड एम्बेसडर नियुक्त किया गया है।

आपका हर संभव प्रयास रहता है कि आप शैक्षिक उन्नयन, राष्ट्र निर्माण, चरित्र निर्माण, बालिका-संरक्षण व शिक्षा, सामाजिक समरसता में सक्रिय सहभागी बने। राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित होने के लिए आपको शिक्षा विभाग की ओर से बधाई और सुखी भविष्य की शुभकामनाएँ।

प्राध्यापक
श्री सैन मंदिर के पास, वार्ड नं. 25
रामबास, राजगढ़ (चूरू)-331023
मो: 7073047980

राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान 2017

इमरान खान : एप गुरु

❒ विनोद कुमार जान्दू

शिक्षा में तकनीकी के प्रयोग के हिमायती इमरान खान का जन्म 5 दिसम्बर, 1978 को राजस्थान के अलवर जिले में खोरड़ा नामक स्थान पर हुआ। बाल्यावस्था से ही आप मेधावी और प्रतिभाशाली छात्र रहे। विद्यार्थी जीवन में आप एक वैज्ञानिक बनना चाहते थे। 1999 में आपका चयन राजकीय सेवा में शिक्षक के पद पर हुआ। वर्तमान में राजकीय वरिष्ठ उपाध्याय संस्कृत विद्यालय, अलवर में गणित विषय के शिक्षक के पद पर कार्यरत हैं।

आप प्रारम्भ से ही शिक्षा एवं शिक्षण में नवाचार एवं सूचना तकनीक के प्रयोग के पक्षधर रहे हैं। आपने प्रोग्रामिंग और वेब विकास ऑनलाइन ट्यूटोरियल और छोटे भाई, जो कम्प्यूटर विज्ञान में प्रौद्योगिकी स्नातक करने के बाद गुड़गांव में एक नौकरी करने चले गए के द्वारा छोड़ी गई पुस्तकों के माध्यम से सीखा। तकनीक में विश्वास करने वाले एवं अनेक शैक्षणिक मोबाइल एप्स के निर्माता इमरान खान का मानना है कि शिक्षा एवं शिक्षण में तकनीकी का प्रयोग ही छात्रों को विश्व स्तर पर एक प्लेटफॉर्म उपलब्ध करवा सकता है। साथ ही शिक्षा व्यवस्था को एक नई दिशा की ओर अग्रसर कर सकता है। आपके द्वारा बनाए गए एप्स 85 लाख से अधिक लोगों द्वारा इंस्टॉल किए गये हैं। 'जनरल साइंस हिन्दी' लगभग पाँच लाख डाउनलोड के साथ सबसे ज्यादा डाउनलोड किया गया एप्स है। इन से शिक्षण रुचिकर एवं प्रभावी हुआ है। आपने अपने एप्स

हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार किए हैं। जो कि विभिन्न विषयों यथा विज्ञान, गणित, अंग्रेजी एवं प्रतियोगी परीक्षाओं आदि के लिए बहुत ही सारगर्भित एवं उपयोगी हैं। आपके एप्स से शिक्षण में एक नई क्रान्ति आई तथा आपने अपने एप्स निःशुल्क उपलब्ध कराए हैं अर्थात् आपने अपने एप डिजिटल भारत के लिए देशभक्त योगदान के रूप में मानव संसाधन विकास मंत्रालय को दान दिया है। इसीलिए राजस्थान सरकार ने पहली बार एपदान के लिए आपको भामाशाह पुरस्कार से सम्मानित किया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 2015 में अपने उद्‌बोधन में आपका जिक्र करने से आपको अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि मिली। प्रधानमंत्री ने कहा कि ''My India is in Imran Khan of Alwar'' (मेरा भारत अलवर के इमरान खान जैसे व्यक्तियों में बसता है।) श्री खान ने भी अपने छोटे से प्रयास पर माननीय प्रधानमंत्री द्वारा की गई प्रशंसा पर प्रसन्नता व्यक्त की। आपको रचनात्मक योगदान के लिए भारत संचार निगम लिमिटेड़ से मुफ्त इंटरनेट सेवा प्राप्त हुई हैं साथ ही मानव संसाधन विकास मंत्री व सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री द्वारा भी आपको बधाई प्रेषित की गई।

आपकी उपलब्धियां :–

1. माननीय उपराष्ट्रपति द्वारा विज्ञान भवन में राष्ट्रीय आई.सी.टी. पुरस्कार 2016
2. राजस्थान सरकार द्वारा भामाशाह पुरस्कार 2016
3. भारत सरकार के आई.टी. मंत्रालय ने आपको NIELIT मोबाइल एप्स समिति का सदस्य चुना।
4. राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान 2016
5. CNBC CISCO पुरस्कार 2016 (शहरी विकास मंत्री वैंकैया नायडू द्वारा)
6. राजीव गाँधी ग्लोबल एक्सीलेंस पुरस्कार 2016
7. इण्डिया मार्ट ई.बी.एफ. पुरस्कार 2016
8. शिक्षक गौरव पुरस्कार 2016

आप कठिन परिश्रमी एवं कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति है। आप जैसे व्यक्ति सभी शिक्षकों के लिए प्रेरणास्रोत हैं। सरकारी सेवा में रहते हुए आपकी उपलब्धियाँ निश्चित ही गौरव का विषय है।

व.अ. अंग्रेजी
रा.मा.वि. गिन्नाणी पंवारसर, बीकानेर
मो. 9414967760

अध्ययन के दिनों में गोखले को गुजारे के लिए बहुत कम पैसे मिलते थे। उनके एकमात्र भाई ही उनकी सहायता करते थे। एक दिन गोखले का धनी मित्र कहीं से नाटक के दो टिकट ले आया और उन्हें भी अपने साथ ले गया। दूसरे दिन उसने उनसे टिकट के पैसे माँगे। गोखले को मित्र के इस स्वार्थी व्यवहार पर दुःख भी हुआ और आश्चर्य भी, लेकिन तब भी उन्होंने उससे कुछ न कहते हुए उसे माँगे गए पैसे निकालकर दे दिए। इस आकस्मिक व्यय के कारण आवश्यक खरचों में कटौती करना ही उनके लिए एकमात्र उपाय था। वे माह के शेष दिनों में नगरपालिका के लैंप के प्रकाश में पढ़ते रहे, ताकि लालटेन का तेल बचा सकें। इस तरह संघर्षपूर्ण जीवन जीने के कारण ही वे एक महान क्रांतिकारी बन सके।

(साभार : अखण्ड ज्योति, सितम्बर, 2018, पृष्ठ–28)

चंपारण सत्याग्रह शताब्दी

बापू और चंपारण की विजय-कथा

❒ भगवती प्रसाद गौतम

विगत एक सदी से भी पहले (दिसंबर 1916) की बात है। महात्मा गाँधी राष्ट्रीय काँग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में भाग लेने लखनऊ गए हुए थे। बिहार के एक दृढ़ निश्चयी किसान अनायास ही उनसे वहीं जा मिले और चंपारण आकर वहाँ के पीड़ित लोगों से बात करने-सुनने का आग्रह करने लगे। उसके बाद ही बापू किसी और कार्य से कानपुर गए तो वहाँ भी वह भाई सामने आ खड़े हुए और वही अनुनय-विनय दोहराने लगे-''अब तो हमें समय दीजिए बापू, दिन तय कीजिए।'' बापू बोले- ''भाई, मुझे पहले कलकत्ता (अब कोलकाता) जाना होगा। वहाँ आइए और मुझे ले जाइए।''

बस, फिर क्या था, कलकत्ता में भी पहले से ही डेरा डाले हुए वही व्यक्तित्व... वही रट, वही हट, वही आग्रह...। बापू ने चर्चित 'आत्मकथा, सत्य के प्रयोग' के एक अध्याय 'नील का दाग' में लिखा है- ''आखिर इस अनपढ़-अनगढ़ परंतु निश्चयवान किसान ने मुझे जीत लिया।''

कौन था यह 'निश्चयवान' किसान? ये थे बेतिया राज के मुरली भरहवा वासी राजकुमार शुक्ल जिन्होंने अंग्रेज निहलों द्वारा शोषित किसानों के नील दागों को एक दिन हमेशा-हमेशा के लिए धो डालने की ठान ली थी। दरअसल 1916-17 के दौर में राजा जनक की धरती चंपारण के किसानी अपनी ही जमीन के 3/20 भाग में उनके असली मालिकों के लिए नील की खेती करने को मजबूर थे। बीस कट्ठे का एक एकड़ और उसमें से तीन कट्ठे जमीन में नील बोने का रिवाज... इसी को 'तीन कठिया' के नाम से जाना जाता था।

बापू के पाँव पड़े पटना में:- आखिर 10 अप्रेल 1917 को महात्मा गाँधी राजकुमार शुक्ल के साथ सुबह की बेला में पटना पहुँचे। उनके पाँव यहाँ पहली-पहली बार पड़े थे, एकदम अपरिचय की स्थिति में। शुक्ल जी पूरे विश्वास के साथ उन्हें सीधे राजेन्द्र बाबू (देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद) के आवास पर ले गए। मगर यह क्या? राजेन्द्र बाबू तो पुरी गए हुए थे। बंगले में एक-दो नौकर थे जिन्होंने उन दोनों के साथ किसान मुवक्किल जैसा बर्ताव किया, किन्तु गाँधी जी सहज ही रहे। इस घटना के बारे में वे बिना किसी पूर्वाग्रह के लिखते हैं- ''मेरे लिए इसमें गुस्सा या परेशान होने का कोई कारण नहीं था। इस प्रकार के अनुभव कर-करके मैं बहुत पक्का हो गया था। हाँ, इन मनोरंजक अनुभवों के कारण जहाँ राजकुमार शुक्ल के प्रति मेरा आदर बढ़ा, वहाँ उनके विषय में मेरा ज्ञान भी बढ़ा। पटना में अंततः लगाम मैंने मेरे हाथ में ले ली।''

अब सिलसिला शुरू हुआ तो उन्हें लंदन के पूर्व सहपाठी मौलाना मजहरूल हक, मुजफ्फरपुर के प्रो. कृपलानी, वकील रामनवमी प्रसाद, गया बाबू जैसे कुछ लोग वहाँ मिले, फिर कुछ और भी जुड़े। इसी बीच दरभंगा से ब्रजकिशोर बाबू पहुँचे और पुरी से राजेन्द्र प्रसाद जी भी लौट आए। सारी रात चर्चा में ही गुजर गई। धीरे-धीरे मदद का माहौल दिखाई देने लगा। फिर भी बापू ने अपना मन खोल ही दिया। बोले- ''मुझे आपकी वकालत की ताकत का उपयोग कम ही करना है। आप जैसे लोगों से मैं बस लेखक और दुभाषिए (अनुवादक) का काम लेना चाहूँगा। मैं सोचता हूँ कि इसमें जेल भी जाना पड़ सकता है।... अपने धंधों को अनिश्चित अवधि के लिए बंद करने की माँग करके मैं आप लोगों से कुछ कम नहीं माँग रहा हूँ। यहाँ की हिंदी भाषा-बोली समझने में मुझे कठिनाई होती है। कागज-पत्र सब कैथी या उर्दू में लिखे जाते हैं। यह सब सेवाभाव से और बिना पैसे के होना चाहिए।'' अंत में सर्व सम्मति से निर्णय हुआ कि जिसको जो भी काम मिलेगा, उसे हिल-मिलकर संपन्न करने-कराने के लिए सभी तैयार रहेंगे।

चंपारण में बापू:- चंपारण तिरहुत विभाग (संभाग) का जिला है और उसी का एक खास शहर है मोतीहारी। बेतिया के समीप ही राजकुमार का घर और उसी के आसपास की कोठियों में बसे थे वे किसान जो कंगाली में साँसें गिन रहे थे। शुक्ल यही सब कुछ बापू को दिखाना चाहते थे। बापू भी इसी प्रकार की इच्छा लिए हुए मोतीहारी पहुँचे और एक पत्रकार गोरख प्रसाद के साथ ही ठहरे तो बस उनका घर जैसे धर्मशाला ही बन गया। वस्तुतः चंपारण के बहाने बापू निलहों के विरुद्ध होने वाली शिकायतों में विद्यमान वास्तविक सच्चाई को जाँचना चाहते थे। मगर उससे पहले वे कमिश्नर से मिले और अपना उद्देश्य जाहिर किया तो वह झुंझला उठा और उसने इन्हें तुरंत तिरहुत छोड़ने के लिए कह दिया।

ऐसा ही एक और भी मामला हुआ।

मोतीहारी से लगते एक गाँव पट्टी-जसौली के किसी पीड़ित किसान को देखने जाते समय बीच राह में ही गाँधी जी को पुलिस सुपरिटेंडेंट की ओर से चंपारण छोड़ने का नोटिस प्राप्त हुआ और अगले ही दिन कोर्ट में उपस्थित होने संबंधी समन भी मिल गया। अपने अनुभवों के आधार पर वे ये सब संभावनाएँ पूर्व में ही अपने साथियों को बता चुके थे। इसलिए उन्होंने रात भर में कुछ आवश्यक पत्र लिखे और ब्रजकिशोर बाबू को खास-खास सूचनाओं-सावधानियों से अवगत करा दिया। फिर क्या था, जैसा कि बापू ने आत्मकथा में उजागर किया है-''समन की बात एकदम चारों ओर फैल गई। लोग कहते थे कि उस दिन मोतीहारी में जैसा दृश्य देखा गया वैसा पहले कभी नहीं देखा गया था। गोरख बाबू के घर और दफ्तर पर भीड़ उमड़ पड़ी। मैंने वहाँ ईश्वर का, अहिंसा का और सत्य का साक्षात्कार किया। चंपारण का वह दिन मेरे जीवन मैं कभी न भूलने जैसा था। मेरे लिए और किसानों के लिए वह एक उत्सव था। कमिश्नर ने मेरे विरुद्ध जो जाल बिछाया था, उसमें उसने सरकार को ही फंसा दिया था।''

इतिहास के पन्नों पर विजय-कथा:- मुकदमा चलने की स्थिति बनी तो सरकारी वकील, मजिस्ट्रेट आदि को कुछ सूझ ही नहीं रहा था कि अब क्या किया जाए, क्या न किया जाए। लेकिन बापू ने उन सभी को आश्वस्त कर दिया था कि मुझे तो चंपारण छोड़ने के नोटिस का अनादर करने का अपराध स्वीकार करना है। वक्त के मुताबिक वे इसी आशय का बयान पढ़ गए और फिर जब सजा सुनने के लिए कोर्ट में जाने का समय हुआ, उसके पूर्व ही उनके नाम मजिस्ट्रेट का इस आशय का एक आदेश जारी हुआ कि गवर्नर साहब की आज्ञा से मुकदमा वापस ले लिया गया है। साथ ही उन्हें स्थानीय जिला कलेक्टर मि. हेक का पत्र भी प्राप्त हुआ जिसमें लिखा था कि आप जो भी और जिस तरह भी जाँच करना चाहें, कर सकते हैं। साथ ही यह भी कि उसमें प्रशासन की ओर से जो सहयोग अपेक्षित हो, वह भी आपको मिल सकता है। इस प्रकार सत्य-अहिंसा के प्रति एक निष्ठावान व्यक्ति के संमुख ब्रितानी हुकूमत को बरबस ही झुकना पड़ा। इस अनुभव को गाँधी जी विशेष रूप से रेखांकित करते हुए लिखते भी हैं कि-''दूसरी ओर सारे हिंदुस्तान को सत्याग्रह का अथवा कानून के सविनय अंग (अवज्ञा) का पहला स्थानीय पदार्थ-पाठ मिला। अखबारों में इसकी खूब चर्चा हुई और चंपारण को तथा मेरी जाँच को अनपेक्षित रीति से प्रसिद्धि मिल गई।''

चंपारण सत्याग्रह भारतीय स्वाधीनता संग्राम में एक मील का पत्थर साबित हुआ। गरीब किसानों और खेतीहर मजदूरों पर अंग्रेज मालिक निलहों द्वारा ढाए गए जुल्मों का यह ऐसा अहिंसक करारा जवाब था जिसका सानी दुनिया में कहीं देखने को नहीं मिलता। बापू द्वारा आरंभ किए गए आंदोलनों में यह ऐसा प्रयोग था जो गाँधी विचार और गाँधी शैली के रूप में सबसे पहले चंपारण में प्रकट हुआ और इतिहास के पन्नों पर कालजयी विजय-कथा के रूप में अंकित हो गया।

सत्याग्रह का प्रादुर्भाव:- 'सत्याग्रह' शब्द का प्रादुर्भाव अथवा जन्म कैसे हुआ? इस सवाल के जवाब के लिए हमें पीछे लौटना होगा। वह कालखंड था सन् 1904 का। दक्षिण अफ्रीका के प्रवास-काल में ही एक छापाखाना के संचालक मदन जीत ने 'इंडियन ओपिनियन' साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन शुरू किया। उसके लगभग प्रत्येक अंक में बापू का कोई न कोई लेख जरूर छपता था। जब उन्होंने हिन्दुस्तानी नागरिकों के स्वाभिमान की रक्षा के लिए रंग-भेद नीति के विरुद्ध लड़ाई आरंभ की तो उसकी पहचान के लिए एक नए शब्द की रचना या खोज आवश्यक हो गई। इसी ध्येय से एक छोटी-सी इनामी योजना के अंतर्गत 'इंडियन ओपिनियन' के पाठकों से प्रतियोगिता हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित की गईं। उसी के प्रत्युत्तर में बापू के भतीजे मगनलाल गाँधी ने एक शब्द प्रेषित किया। वह शब्द था-'सत्याग्रह', जिसका संधि-विच्छेद करें तो रूप होगा 'सत+आग्रह'। इसी चुने गए 'सदाग्रह' को और अधिक स्पष्ट व अर्थवान बनाने की दृष्टि से बीच में 'य' वर्ण (अक्षर) जोड़कर बापू ने 'सत्याग्रह' (सत्य+आग्रह) शब्द का निर्माण किया। बस, यही शब्द प्रचलन में आ गया और अहिंसक संघर्ष का पर्याय बन गया।

इस संघर्ष का इतिहास एक प्रकार से दक्षिण अफ्रीका के बापू के जीवन और उनके प्रयोगों का इतिहास ही है जो किस्त रूप में 'नव-जीवन' में छपा और बाद में 'दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास' के नाम से पुस्तक रूप में भी प्रकाशित हो गया। सत्याग्रह मूलतः आत्मबल है। बापू अपनी विचारोत्तेजक कृति 'हिन्द स्वराज' (1909) में लिखते हैं-''सत्याग्रह सबसे बड़ा, सर्वोपरि बल है। सत्याग्रह के लिए जो हिम्मत और बहादुरी चाहिए, वह तोप का बल रखने वाले के पास हो ही नहीं सकती।'' यही नहीं, इससे आगे भी वे जोर देते हुए कहते हैं- ''सत्याग्रह ऐसी तलवार है जिसके दोनों ओर धार है। वह खून नहीं निकालती, लेकिन उससे भी बड़ा परिणाम ला सकती है।''

एक बार सी.एफ. एंड्रयूज, जिन्हें 'दीनबंधु' के नाम से भी जाना जाता है, ने बापू से पूछ लिया था-''क्या आपको लगता है कि हिंदुस्तान में आपके लिए सत्याग्रह करने का अवसर आएगा? और अगर ऐसा लगता है तो कब आएगा?'' तो उनका उत्तर था-''अभी एक वर्ष मुझे कुछ करना ही नहीं, क्योंकि गोखले जी (गोपाल कृष्ण गोखले) ने मुझसे वचन ले लिया है कि मुझे एक वर्ष तक देश में भ्रमण करना है, किसी सार्वजनिक प्रश्न पर न तो अपना कोई विचार बनाना है और न ही प्रकट करना है।'' प्रसंगवश उल्लेखनीय है कि 'हिन्द स्वराज' को पढ़ने के बाद गोखले जी ने हँसी-हँसी में बापू से कहा था-''एक वर्ष हिन्दुस्तान में रहकर देखोगे तो आपके विचार अपने आप ठिकाने आ जाएँगे।''

चंपारण के सच्चे साथी:- सच यही है कि दक्षिण अफ्रीका से वापसी (1915) के बाद बापू ने गाँव-गाँव घूमकर वास्तविक भारत को गहराई से जानने-समझने का जो बीड़ा उठाया था, उसका सबसे महत्त्वपूर्ण परिणाम चंपारण में ही सामने आया। स्वच्छता आंदोलन के लिए अद्वितीय अग्रदूत डॉ. विंदेश्वर पाठक के मुताबिक-''चंपारण में दी गई आहुति ही भारत में ताकतवर ब्रिटिश साम्राज्य को स्वाहा करने की वह शुरूआत थी, जिसकी कल्पना गाँधी जी ने उसी वक्त कर ली थी, जब उन्हें डरबन में एक अंग्रेज ने ट्रेन के फर्स्ट क्लास कंपार्टमेंट से धक्के मारकर बाहर निकाल दिया था।''

इस महान अनुष्ठान में जिन अनेक वकीलों, पत्रकारों, लेखकों, जमीदारों, किसानों, समुदायों ने बापू के विचार को मूर्तरूप देने में महत्ती भूमिका निभाई, उनमें सर्वश्री

(शेष पृष्ठ 19 पर)

जन्म दिवस

गणेश शंकर 'विद्यार्थी'-एक क्रांतिकारी पत्रकार

❒ कमलनारायण

गणेश शंकर 'विद्यार्थी' का जन्म 26 अक्टूबर, 1890 को अपने ननिहाल प्रयाग (इलाहाबाद) में हुआ था। इनके पिता का नाम जयनारायण था जो कि एक अध्यापक थे। गणेश शंकर विद्यार्थी की शिक्षा-दीक्षा मुंगावली (ग्वालियर) में हुई थी। इन्होंने पढ़ाई के दौरान हिन्दी के साथ उर्दू-पारसी का भी अध्ययन किया।

गणेशशंकर विद्यार्थी के पिता की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर थी। जिसके कारण वे एण्ट्रेस तक ही पढ़ सके। किन्तु उनका स्वतंत्र अध्ययन चलता ही रहा। अपनी मेहनत और लगन के बल पर उन्होंने पत्रकारिता के गुणों को भली प्रकार समझ कर अपने में सहेज लिया था। शुरू में गणेशशंकर विद्यार्थी को एक नौकरी भी मिली थी, लेकिन उनकी अंग्रेज अधिकारियों के साथ पटरी नहीं बैठी और उन्होंने नौकरी छोड़कर कानपुर में करेंसी ऑफिस में नौकरी की। यहाँ भी अंग्रेज अधिकारियों के साथ नहीं पटी। अंततः वह नौकरी छोड़कर अध्यापक हो गए।

विद्यार्थी जी की रुचि राजनीति की ओर पहले से ही थी। वह एक वर्ष बाद 'अभ्युदय' नामक पत्र में चले गए और कुछ दिनों तक इन्होंने 'प्रभा' का भी सम्पादन किया। सन् 1913, अक्टूबर पाठ में 'प्रताप साप्ताहिक' के सम्पादक भी हुए। इन्होंने अपने पत्र में किसानों की आवाज उठाई। आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं पर विद्यार्थी जी के विचार बड़े ही निर्भीक होते थे। विद्यार्थी जी ने देशी रियासतों की प्रजा पर किए गए अत्याचारों का भी तीव्र विरोध किया। गणेशशंकर विद्यार्थी कानपुर के लोकप्रिय नेता तथा पत्रकार, शैलीकार तथा निबन्ध लेखक भी थे। वह अपनी देशभक्ति और अनुपम आत्मोत्सर्ग के लिए चिरस्मरणीय रहेंगे।

विद्यार्थी जी ने पहले उर्दू में लिखना प्रारम्भ किया था। उसके बाद हिन्दी में पत्रकारिता के माध्यम से आए और आजीवन पत्रकार रहे। उनके अधिकांश निबन्ध त्याग और बलिदान सम्बन्धी विषयों पर आधारित है।

विद्यार्थी जी एक अच्छे वक्ता भी थे। पत्रकारिता के साथ-साथ इनकी साहित्यिक विषयों में भी गहन रुचि थी। आपकी रचनाएँ सरस्वती, कर्मयोगी, स्वराज्य, हितवार्ता में छपती रही। आपने आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के सहायक के रूप में भी काम किया। हिन्दी में 'शेखचिल्ली' की कहानियाँ आपकी देन है।

गणेशशंकर 'विद्यार्थी' ने अंततोगत्वा कानपुर लौटकर 'प्रताप' अखबार की शुरूआत की। 'प्रताप' भारत की आजादी की लड़ाई का मुखपत्र साबित हुआ। क्रांतिकारी विचारों व भारत की स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति का माध्यम बन गया था-'प्रताप'। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के विचारों से प्रेरित विद्यार्थी जी जंग-ए-आजादी के एक निष्ठावान सिपाही थे। महात्मा गाँधी उनके नेता और वे क्रांतिकारियों के सहयोगी थे। सरदार भगतसिंह को 'प्रताप' से विद्यार्थी जी ने ही जोड़ा था।

गणेशशंकर 'विद्यार्थी' ने 9 नवम्बर, 1913 को 'प्रताप' का पहला अंक प्रकाशित किया था और इसमें उन्होंने स्पष्ट कर दिया था कि हम राष्ट्रीय आंदोलन, सामाजिक, आर्थिक उन्नति, जातीय गौरव, साहित्यिक-सांस्कृतिक विरासत के लिए, अपने हक व अधिकार के लिए संघर्ष करेंगे। विद्यार्थी जी ने अपने इस संकल्प को 'प्रताप' के माध्यम से व्यक्त किया तो अंग्रेजी सरकार तिलमिला उठी। जिसके कारण अंग्रेजों ने उन्हें जेल भेजा, जुर्माना किया और राजद्रोह का आरोप लगाकर 'प्रताप' का प्रकाशन बन्द करवा दिया।

आँखों में वैभव के सपने,
पग में तूफानों की गति हो।
राष्ट्रभक्ति का ज्वार न रूकता,
आए जिस-जिस की हिम्मत हो।।

8 जुलाई, 1918 को फिर जोड़-तोड़ करके विद्यार्थी जी ने 'प्रताप' का पुनः प्रकाशन शुरू किया। प्रताप के इस अंक में विद्यार्थी जी ने सरकार की दमनपूर्ण नीति की ऐसी जोरदार खिलाफत कर दी थी कि आम जनता प्रताप को आर्थिक सहयोग देने के लिए मुक्त हस्त से दान करने लगी। जनता के सहयोग से यह साप्ताहिक 'प्रताप' नियमित रूप से छपने लगा और विद्यार्थी जी की आर्थिक स्थिति ठीक रहने लगी।

अंग्रेजों का कोपभाजन बने विद्यार्थी जी को 23 जुलाई 1921 से 16 अक्टूबर 1921 तक जेल की सजा दी गई। जेल यात्रा करने के बाद भी उन्होंने सरकार के विरुद्ध कलम की धार को कम नहीं किया।

गणेशशंकर विद्यार्थी जी की मृत्यु कानपुर के सांप्रदायिक दंगे में निस्सहायों को बचाते हुए 25 मार्च सन् 1931 में हो गई। विद्यार्थी जी साम्प्रदायिकता की भेंट चढ़ गए। नम आँखों से देश ने विद्यार्थी जी को विदाई दी। वे एक ऐसे साहित्यकार और पत्रकार रहे जिन्होंने देश के क्रांतिकारियों जैसे भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद की खूब मदद की। वे ऐसे साहित्यकार थे जिन्होंने देश में अपनी कलम से सुधार की क्रांति उत्पन्न की।

ऐसे महान् क्रांतिकारी पत्रकार, साहित्यकार और सुधारक को कोटि-कोटि नमन!

सेवानिवृत्त अध्यापक
म.नं. 1/131 हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी
हनुमागनढ़-335512
मो: 9414474636

जयन्ती

शास्त्री जी के प्रेरक जीवन प्रसंग

❐ टेकचंद्र शर्मा

इस आलेख में लाल बहादुर शास्त्री के कुछेक उन जीवन प्रसंगों का उल्लेख है जो विशेषकर छात्रों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।

जन्मा धरा पर, पला धरा पर
और धरा का खास बन गया।।
धरा देखती रही। पुत्र आकाश बन गया।।
वह था गुदड़ी का लाल।
जन कर माता हुई निहाल।।
कर दिखलाया कमाल।
लघुतम से बन गया विशाल।।

पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया। प्रमुख सेनापति ने आकर तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री को सूचित किया और निर्देश चाहा। छोटी कद काठी साधारण देह-यष्टिधारी शास्त्री जी आक्रमण का समाचार सुनकर अपनी कुर्सी से उठकर बोले ''सबसे आगे मैं होऊँगा। पहली गोली मुझे लगेगी। आक्रमण का मुकाबला करो।'' प्रमुख सेनापति तैश में आकर बोले ''सर, आप बैठिए आपका आदेश ही लेने आया था। पाकिस्तानी सेना को मुँहतोड़ जवाब देंगे'' और आखिर में विजय भारत की हुई। पाकिस्तानी सेना को बन्दी बना लिया गया। ऐसे निर्भयी-साहसी थे लाल बहादुर शास्त्री।

जब रेलमंत्री थे। एक भारी रेल दुर्घटना घट गई तुरन्त प्रभाव से मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया; दुर्घटना के लिए अपने आपको जिम्मेदार समझते हुए। हालांकि तत्कालीन प्रधानमंत्री ने इस्तीफा स्वीकार नहीं किया। गृहमंत्री रहते हुए अपना निजका पारिवारिक घर तक नहीं बनाया। किराए के मकान में ही बसर किया। इसीलिए उन्हें 'गृहमंत्री बिना गृह का' कहा जाता है।

केन्द्रीय मंत्री पद पर होते हुए किसी विशेष आयोजन समारोह में जा रहे थे। रास्ते में एक घायल व्यक्ति पड़ा हुआ था। अपने गाड़ी चालक को पहले अपनी गाड़ी से उसे अस्पताल पहुँचाने का आदेश दिया। तत्पश्चात् समारोह में पहुँचे। देर से पहुँचने के लिए क्षमा माँगी, कारण बताया। ऐसे दयालु व करुणार्द्र थे शास्त्री जी।

अपने बच्चों के दाखिले के लिए किसी को भी कुछ नहीं कहा। विद्यालय प्रशासन को बड़ा आश्चर्य हुआ कि लाल बहादुर शास्त्री जी के बच्चों को पंक्ति में खड़ा होना पड़ा। लेकिन उन्होंने कोई संकेत तक नहीं दिया। प्रधानमंत्री होते हुए अपनी पत्नी के लिए साड़ी खरीदने के लिए एक दुकान में गए। दुकानदार ने बहुत ऊँचे स्तर की साड़ियाँ दिखाई जो बहुत कीमती थी। शास्त्री जी ने हँसकर कहा ''साधारण साड़ी दिखाइये। मैं कीमती साड़ी खरीदने की हैसियत नहीं रखता।'' दुकानदार ने कहा ''आप ले जाइए। कोई कीमत नहीं लगेगी।'' लेकिन उन्होंने साफ-साफ इनकार कर दिया और साधारण साड़ी खरीदकर कीमत अदा करके ही माने।

एक बार अनाज संकट उपस्थित हो गया। विदेशों के आगे हाथ पसारने की बजाय निर्देश दिए। हर भारतवासी हर सोमवार को व्रत रखें और एक समय का भोजन-अनाज त्याग दें। पूरे भारत ने ऐसा ही किया और अनाज संकट समाप्त किया। ऐसे कितने ही प्रेरक उदाहरणों से उनका जीवन ओतप्रोत है किन्तु यहाँ कुछेक घटनाओं का उल्लेख ही किया गया है। ताकि विस्तार से बचा जा सके। न उनकी कोई राजनीतिक पृष्ठभूमि थी। न वे राजनीति के खिलाड़ी थे। वे तो जमीं से उठकर शीर्ष पद तक पहुँचे थे। प्रधानमंत्री बने वे अपने विशिष्ट गुणों व विशेषताओं के कारण ही।

सादा जीवन उच्च विचार
ईमानदारी जीवन आधार।।
जन सेवा का व्रतधारी था।
जन मन करता है स्वीकार।।
शास्त्री जी को श्रद्धा सहित नमन।
उनका बारंबार अभिनंदन।
राजनीति में आकर उनके
प्रदूषण का किया शमन।
गृहविहीन गृह मंत्री, रहे जनता में संतरी।
रेल दुर्घटना पर दिया इस्तीफा।
ऐसे थे लाल बहादुर मंत्री।

पूर्व शिक्षा अधिकारी
शर्मा सदन, झुंझुनूं-333001 **मो: 9667212236**

प्रेरक प्रसंग

नन्हें बालक का संकल्प

❐ उत्तम चन्द्र सागर

एक बालक अभी पूरे दो साल का भी नहीं हुआ था कि उसे पिता का देहावसान हो गया। ऐसी कठिन परिस्थितियों में उसकी माँ उसे लेकर अपने मायके में रहने लगी। सभी उसे नन्हा कहकर पुकारते थे। छोटे-से कद का यह बालक शारीरिक रूप से दुर्बल था, किन्तु मानसिक रूप से अत्यन्त मेधावी। उसे जो कुछ भी कहा या सिखाया जाता वह बड़े मनोयोग से उसे ग्रहण करता था। धीरे-धीरे दिन बीतते गए और वह बालक छह वर्ष का हो गया।

एक बार वह अपने कुछ मित्रों के साथ मिलकर किसी बाग में फूल तोड़ने पहुँचा। चूँकि उसका कद छोटा था, इसलिए उसके हाथ फूल तक नहीं पहुँच पा रहे थे। सभी मित्रों ने फूल तोड़ लिए और वह कोशिश करता रहा। बड़े प्रयासों के बाद उसका हाथ एक फूल तक पहुँचा ही था कि माली आ गया और उसे पीटना शुरू कर दिया। नन्हा मार खाता रहा फिर धीमी आवाज में बोला- मेरे पिता नहीं है, इसलिए तुम मुझे इस तरह मार रहे हो? उसकी बात सुनकर माली का हाथ रूक गया। और वह शान्त होकर बोला- बेटा, पिता के न होने से तो तुम्हारी जिम्मेदारी और अधिक हो जाती है कि तुम कोई भी गलत काम नहीं करो। यह सुनते ही नन्हा फूट-फूटकर रो पड़ा और फिर कभी कोई गलत काम न करने का संकल्प लिया।

यही नन्हा बड़ा होकर लाल बहादुर शास्त्री के नाम से विख्यात हुआ और प्रधानमंत्री के रूप में अपने गुण व व्यवहार से सर्वत्र प्रशंसा पाई। सार यह है कि अभिभावकों के अमूल्य मार्गदर्शन के अभाव की स्थिति में बड़े-बुजुर्गों की शिक्षाओं का उपयोग आत्म विकास हेतु करना चाहिए।

प्राध्यापक
रा.उ.मा. विद्यालय मेहरों का गुड़ा (अम्बेरी)
तह. बड़गाँव, उदयपुर (राज.)-313001
मो: 9887787241

(शेष पृष्ठ 16 का शेष)

राजकुमार शुक्ल, मौलाना मजहरूल हक, गोरख प्रसाद, ब्रजकिशोर बाबू, पीर मुहम्मद मूनिख, धरणीधर बाबू, राजेन्द्र प्रसाद, अनुग्रह नारायण सिंह, रामनवमी प्रसाद, विंधेश्वरी बाबू और फिर उनकी समर्पित अर्द्धांगिनी कस्तूर बा के साथ-साथ कई नाम बड़े सम्मान के साथ लिए जा सकते हैं। बापू ने 'आत्मकथा' में उन्हें अपने ही अंदाज में याद भी किया है- ''ब्रजकिशोर बाबू और राजेन्द्र बाबू तो एक अद्वितीय जोड़ी थी। उन्होंने अपने प्रेम से मुझे इतना पंगु बना दिया था कि उनके बिना मैं एक कदम भी आगे नहीं जा सकता था। उनके शिष्य कहिए अथवा साथी, अनुग्रह बाबू, शंभु बाबू, धरणी बाबू, रामनवमी बाबू...ये सभी वकील लगभग निरंतर मेरे साथ रहते थे। कृपलानी स्वयं सिंधी होते हुए भी बिहारी से भी बढ़कर बिहारी थे। मौलाना हक ने सहायक के रूप में अपना हक दर्ज करा रखा था।''

इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि बापू ने चंपारण की विजय-कथा केवल ब्रिटिश सत्ता की दमनकारी नीतियों से मुक्ति के लिए ही नहीं रची, बल्कि इस सत्याग्रह के जरिए चंपारण भू भाग और देश में व्याप्त सामाजिक रूढ़ियों, कुरीतियों, अस्पृश्यता, अस्वच्छता, निरक्षरता जैसी बुराइयों और गरीबी, भूख, बीमारियों जैसी समस्याओं के विरुद्ध जबर्दस्त चेतना का संचार करने में भी वे पीछे नहीं रहे।

सच तो यह भी है कि गाँधीजी किसानों की दशा-दुर्दशा देखकर द्रवित भी थे और मन ही मन आक्रोशित भी। इसीलिए उन्होंने इस सत्याग्रह के संयम की परीक्षा सबसे पहले खुद पर ही आजमाई। फिर उनसे प्रेरित हुए डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जिन्होंने अपने सोच व आचरण में जो बदलाव किया, उसे उन्होंने जीवनभर निभाया। आश्चर्यचकित कर देने वाली बात यह भी है कि बापू ने केवल 2200 (दो हजार दौ सौ) रुपये जैसी धन राशि खर्च कर (सु. इ./अप्रेल2017 /पृ. 9) इस ऐतिहासिक सत्याग्रह का सफल संचालन किया। इसका राज यही था कि समूचा देहाती समाज समुदाय बरबस ही उनके विश्वास पर खरा उतरने वाला समाज-समुदाय हो गया और यह जुड़ाव ही उनकी सबसे बड़ी ताकत का पर्याय बन गया था।

1-त-8 अंजलि, दादाबाड़ी, कोटा (राज)-324009
मो: 09461182571

बालिका शिक्षा

राष्ट्र-समाज का सुनहरा कल

❐ हीराराम चौधरी

संस्कृत में यह उक्ति प्रसिद्ध है, 'नास्ति विद्यासमं चक्षुरनास्ति मातृ समागुरु।' इसका भावार्थ है कि इस दुनिया में विद्या के समान नेत्र नहीं हैं और माता के समान गुरु नहीं है। यह बात पूर्णतया सत्य है कि बालक के विकास पर प्रथम और सबसे अधिक प्रभाव उसकी माता का ही पड़ता है। परिवार नागरिकता की प्रथम पाठशाला है तो उस पाठशाला की प्रथम शिक्षिका माता ही है। यदि प्रथम शिक्षिका ही अशिक्षित है तो परिवार एक अच्छी पाठशाला कैसे सिद्ध हो सकता है? देश के भावी नागरिक योग्य, सुशिक्षित, संस्कारवान और चरित्रवान हो इसलिए उनका पालन-पोषण एक शिक्षित माँ के नेतृत्व में होना चाहिए।

भारत के महान विचारक और युगप्रवर्तक स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि, ''स्त्रियाँ जब शिक्षित होगी, तभी तो उनकी संतानों द्वारा देश का मुख उज्ज्वल होगा। स्त्रियों की स्थिति में सुधार न होने तक विश्व कल्याण का कोई मार्ग नहीं है। किसी पक्षी के केवल एक पंख से उड़ना नितांत असंभव है।'' परिवार की खुशहाली एवं राष्ट्र-समाज की समृद्धि तथा प्रगति में बालिका शिक्षा की अहम भूमिका है। राष्ट्र की आधी आबादी 'नारी शक्ति' की है। हम राष्ट्र को विकसित राष्ट्र की श्रेणी में देखना चाहते हैं तो राष्ट्र की आधी आबादी अर्थात् नारी शक्ति के विकास, शिक्षा एवं स्वास्थ्य की ओर से समुचित ध्यान देना होगा।

बालिका शिक्षा के बिना राष्ट्र के उदय की कल्पना नहीं की जा सकती है। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने बालिका शिक्षा की महत्ता का उल्लेख करते हुए कहा था कि, ''एक बालक को पढ़ाने से एक व्यक्ति शिक्षित होता है जबकि एक बालिका को पढ़ाने से पूरा परिवार शिक्षित होता है।'' विश्व विजेता नेपोलियन बोनापार्ट ने कहा था कि, ''मातृभूमि की प्रगति शिक्षित और समझदार माताओं के बिना असम्भव है।''

उक्त वाक्यांशों से स्पष्ट होता है कि, राष्ट्र उत्थान और मानव समाज के कल्याण के लिए बालिका शिक्षा के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता है।' हमें बालिका शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए उदार मन और बड़ी सहृदयता से आगे आना होगा तथा बेटी को पराया धन या पराई अमानत समझने की वर्षों से चली आ रही धारणा की उपेक्षा कर उसे बेटों के समकक्ष मानना होगा और हमें इस धारणा को भी बदलना होगा कि शिक्षा से बेटी बिगड़ जाएगी। यदि हम 21वीं सदी में भी ऐसी तुच्छ मानसिकता को लेकर चलेंगे तो यह एक बेटी के साथ बहुत बड़ा अन्याय होगा। किसी एक घटना को आधार मानकर बालिका को उसके शिक्षा क्षेत्र में उड़ान भरने से रोककर हम उसका नहीं राष्ट्र-समाज का बहुत बड़ा नुकसान कर रहे हैं।

आज हम किसी भी बोर्ड परीक्षा या प्रतियोगी परीक्षा के परिणाम पर दृष्टि डालते हैं तो हम पाते है कि बेटियाँ बेटों से सदा अव्वल रहती है। जहाँ-जहाँ बेटियों को हमने सुअवसर प्रदान किए हैं, वहाँ-वहाँ उन्होंने अपनी अप्रतिम योग्यता से सफलता के स्तंभ गाड़े हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र-शिक्षा, चिकित्सा, तकनीकी, साहित्य, कला, अंतरिक्ष, राजनैतिक और प्रशासनिक इत्यादि सभी क्षेत्रों में अपना लोहा मनवाया है। आज तो बालिकाएँ अपने ज्ञान कौशल और वीरोचित गुणों से सेना के क्षेत्र में भी अपने कदम बढ़ा रही है तथा एक सच्ची वीरांगना की भाँति अपना युद्ध कौशल भी दिखा रही है। जीवन के हर क्षेत्र में बेटियाँ बेटों से श्रेष्ठ है। भारतीय समाज में नारी को मातृशक्ति के पद पर प्रतिष्ठित रखा है। उसने ऐसे श्रेष्ठ मानव रत्न समाज को दिए है जिनका नाम आज भी अमर है। जब-जब उसे गृहस्वामिनी, गृहलक्ष्मी और कुलमाता के रूप में आदर दिया है तब-तब भारत का नाम विश्व में गूँजा है। कहा भी गया है कि-

**यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्रा फलाः क्रियाः।।**

हम सबको बालिका शिक्षा के प्रति विराट सोच रखनी होगी तथा बेटे-बेटियों की शिक्षा में कोई भेदभाव न रखकर समान अवसर प्रदान करना होगा। बेटियाँ परिवार और समाज की प्रथम श्रेणी की सदस्य है, उनकी उचित शिक्षा में ही अनेक समस्याओं का समाधान है। बालिका शिक्षा में ही हम सबका भला है।

अध्यापक
राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय
सोडावास, जिला-पाली

SIQE (एसआईक्यूई)

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए राज्य की पहल

❒ कमल कुमार जांगिड़

वस्तुतः गुणवत्ता निर्धारण हेतु शिक्षा व शिक्षण में परिवर्तन समय-समय पर होता रहा है। समयानुकूल आवश्यकता भी रही है। परम्परागत शिक्षण प्रक्रियाओं, साधनों और तरीकों में आई नीरसता को समाप्त करने के लिए सरकार द्वारा प्राथमिक शिक्षा के सुदृढ़ीकरण की दिशा में 'एसआईक्यूई.' शिक्षा के मूल उद्देश्यों को रेखांकित करने वाली है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के व्यापक दृष्टिकोण में सर्वांगीण विकास की अवधारणा को बलवती बनाने का प्रयास किया गया है। जहाँ बालक के पुस्तकीय ज्ञान को परिवेशीय सजगता से जोड़कर सीखने-सिखाने का उपक्रम है।

वर्तमान में राज्य सरकार द्वारा संचालित (शासकीय) विद्यालयों की प्राथमिक कक्षाओं के विविध विषयों को समावेशी शिक्षा एवं एक दूसरे के सम्पूरक के रूप में पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने का सराहनीय प्रयास किया गया है। पाठ्यक्रम को परिवेशीय मूल्यों के समायोजन एवं उद्देश्यों के मद्देनजर जीवनोपयोगी बनाने का प्रयत्न किया गया है।

हिंदी भाषा को सिखाने में स्थानीय बोलियों एवं उपभाषाओं के प्रयोग को महत्त्व दिया है वहीं एक भाषा दूसरी भाषा के सानिध्य में फलती-फूलती है। अतः आंग्लभाषा की शब्दावली को भी परिवेशीय संदर्भ में समझने-समझाने का यत्न किया गया है। गणितीय संख्या ज्ञान व संक्रियाओं की समझ का सामान्य अनुप्रयोग भी स्थानीय मानकों व मूल्यों पर आधारित है। इस हेतु गतिविधि आधारित शिक्षण की प्रक्रिया में कक्षा एक व दो के लिए 'किट' का निर्माण किया गया है।

उपर्युक्त भाषा व गणितीय तर्क शक्ति को पर्यावरणीय दृष्टिकोण से समझना समग्रता व 'बहुभाषिकता' के सिद्धान्त को समझने में मदद करता है।

इस सत्र में विषयों की सामान्य मान्यताओं से इतर 'सीखने के प्रतिफल' Learning out Comes पर बल दिया गया है। जिसके लिए

पाठ्यक्रम विभाजन एवं चैकलिस्ट में बिंदुवार इनको वर्गीकृत किया गया है।

सामान्यतः एसआईक्यूई. थीम को 'अधिगम स्तर के निर्धारण (कक्षा स्तर अर्थात् आधार रेखा मूल्यांकन अथवा पदस्थापन) से प्रारम्भ कर पाठ्यक्रम विभाजन के आधार पर समूह निर्धारणानुसार पाठ योजनाओं का निर्माण किया जाता है। जहाँ शिक्षक को यह समझने में सहजता रहती है कि प्रत्येक विद्यार्थी के साथ की जाने वाली गतिविधियों का निर्धारण किया जा सके।

यहाँ यह उल्लेख किया जाना उचित होगा कि 'न्यूनतम अधिगम स्तर (Minimum Level of Learning)' के लिए कक्षा स्तर पर विविध बालकों के सीखने के स्तरों पर व्यक्तिगत कार्य करने के अवसर हैं।

यद्यपि विविध स्तरों के संदर्भ में एक ही कक्षा में कक्षा प्रथम से पंचम तक सभी स्तरों के विद्यार्थी होंगे। सभी के सीखने व समझने में स्वाभाविक अंतर होता है परन्तु सामूहिक, समूह व व्यक्तिगत स्तर पर कार्य करने पर समयानुसार सीखने के स्तर में वृद्धि होती ही है।

यह देखने में आया है कि शिक्षण योजना निर्माण से लेकर वार्षिक अभिलेख संधारण तक शिक्षक साथियों को कुछ चुन्नौतियाँ नज़र आती है एवं परम्परागत परीक्षा प्रणाली के ढर्रे के कारण आकलन व मूल्यांकन की नवीनता वाली पद्धति कठिन, श्रमसाध्य व समय बर्बादी वाली लग सकती है।

वास्तव में ऐसा नहीं है। प्रत्येक अधिगम बिंदु हेतु आकलन की सहज प्रक्रिया है जो स्वाभाविक शिक्षण के दौरान चलती रहती है। परम्परागत परीक्षा प्रणाली से भिन्न 'कार्य पत्रक' व मौखिक, गतिविधियों से सीखने के सिद्धान्त रटने की प्रवृत्ति से मुक्त करवाते हैं। विद्यार्थी के अधिगम स्तर तय होने के पश्चात शिक्षण प्रक्रिया को सामान्य व्यवहार व बोझ रहित शिक्षा के मूल्य को समझाने का प्रयास है।

परिवर्तन सृष्टि का नियम है। 'पाठ्यक्रम' परिवर्तनशील है। 'शिक्षाक्रम' स्थायी है। जीवन जीने की कला सीखने एवं व्यवहारगत परिवर्तन के मायने तभी प्रतिबिंबित होते है जब तक समय के साथ युगीन शिक्षा व उसकी विधियों में परिवर्तन होता रहेगा। जहाँ नवाचार और परिवर्तन नहीं, वहाँ शून्यता है। गतिशीलता आवश्यक तत्व है, अद्यतन रहने हेतु अब तो सेटेलाइट प्रसारणों के माध्यम से विषय विशेषज्ञों की राय व शंका समाधान होने लगे हैं।

नियमित कलस्टर की कार्यशालाएँ एक ऐसा साझा मंच है जिसके माध्यम से परस्पर विचार-विनिमय से विद्यार्थी हितार्थ शिक्षक साथी स्वयं सीखते हैं। प्रत्येक विद्यालय, विद्यार्थी व शिक्षक की अपनी आवश्यकताएँ, समस्याएँ एवं विषमताएँ हो सकती है। 'स्टेट इनिसिएटिव फोर क्वालिटी एड्यूकेशन' विचार सभी अवसर उपलब्ध करवाती हैं एवं सीखने-सिखाने के मूल मंत्र पर सटीक है। पाठ्यपुस्तकें केवल माध्यम अथवा साधन है, साध्य नहीं। पाठ्यपुस्तकों की दुनिया से बाहर पुस्तकालय, खेल का मैदान, सह शैक्षिक गतिविधियाँ, त्योहार, राष्ट्रीय पर्व, जयंतियाँ व उत्सव, स्थानीय मेले आदि बालकों के 'सीखने के प्रतिफल' की थीम का ही अंग है। यही सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की मूल अवधारणा है।

राजकीय जवाहर उच्च माध्यमिक विद्यालय
कुचामन सिटी (नागौर) 341508
मो: 9928278014

शिक्षा का आदर्श प्रतिमान

स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल विद्यालय : अभिनव पहल

❒ अविनाश चौधरी

वर्तमान युग में शिक्षा के बदलते स्वरूप एवं आवश्यकताओं के मद्देनजर इसके प्रत्येक क्षेत्र में इसकी गुणवत्ता को और अधिक सुनिश्चित करना हमारे लिए अधिक चुनौतीपूर्ण बन गया था, इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े ब्लॉक्स में अंग्रेजी माध्यम के इन मॉडल विद्यालयों की स्थापना की गई है। माध्यमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण एवं इसे गुणवत्तापूर्ण बनाने की दृष्टि से भारत सरकार द्वारा केन्द्रीय विद्यालयों के पैटर्न अनुरूप मॉडल स्कूल स्थापित किए गए है। ब्लॉक स्तर पर उच्च गुणवत्ता वाली माध्यमिक शिक्षा सुलभ कराना ताकि देश में प्रत्येक पिछड़े ब्लॉक में कम से कम एक स्कूल ऐसा उपलब्ध हो जो उक्त ब्लॉक में अन्य विद्यालयों के लिए आदर्श रूप में स्थापित किया जा सके। राजस्थान के 186 ब्लॉक्स को इस योजना हेतु चिह्नित किया गया है जिनमें से वर्तमान में 134 ब्लॉक्स में इस योजना के अंतर्गत ये विद्यालय संचालित हो रहे हैं। शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े इन ब्लॉक्स में माध्यमिक स्तर की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करवाने के लिए इन विद्यालयों की अवधारणा विकसित की गई है, इन विद्यालयों का इन्फ्रास्ट्रक्चर और सुविधाएँ न्यूनतम उस स्तर की होगी जो एक केन्द्रीय विद्यालय में होती है। विद्यालयों में आदर्श विद्यार्थी अनुपात, आधुनिकतम सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग, सृजनात्मकता, शैक्षिक वातावरण, उपयुक्त पाठ्यचर्या के सम्बन्ध में मानदंड तय किए गए हैं जिसका प्रमुख लक्ष्य विद्यार्थियों का चहुँमुखी व्यक्तित्व का विकास करना है। उपर्युक्त अवधारणा के अनुरूप इन मॉडल विद्यालयों में निम्नांकित उद्देश्यों को प्राप्त करना निहित है जिनमे;

A. माध्यमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण की दिशा में प्रयास करना।
B. आधुनिकतम तकनीकी एवं विशेष सुविधाओं युक्त माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की स्थापना करना।
C. ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का माहौल उपलब्ध कराना ताकि वे भी अपनी प्रतिभा अनुरूप अपनी क्षमताओं का बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए आगे बढ़े।
D. ग्रामीण प्रतिभा को आधुनिक शिक्षा पद्धत्ति अनुरूप राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर का शैक्षिक मंच प्रदान करना।
E. ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करना एवं विज्ञान के प्रति उनकी अभिरुचि को जाग्रत कर आगे बढ़ाना।
F. वंचित वर्गों के बालक-बालिकाओं की माध्यमिक शिक्षा का स्तर ऊँचा करना।
G. बालक-बालिकाओं के भौतिक, सामाजिक, नैतिक एवं सर्वांगीण विकास हेतु पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराना।

1. संचालित कक्षा स्तर:– वर्तमान समय में प्रदेश में संचालित इन 134 राजकीय स्वामी विवेकानंद मॉडल विद्यालयों में कक्षा 6 से 12 तक की कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है एवं हाल ही में माननीय मुख्यमंत्री महोदया राजस्थान सरकार द्वारा 15 अगस्त के अवसर पर की गई घोषणा उपरांत इन मॉडल विद्यालयों में प्री-प्राइमरी एवं प्राइमरी कक्षाओं का संचालन किया जाना भी शीघ्र सुनिश्चित किया जा रहा है।

2. ढांचागत सुविधाएँ:– 5 एकड़ प्रति इकाई के विशाल परिसर में फैले इन आधुनिक सुविधाओं से युक्त स्वामी विवेकानंद मॉडल विद्यालय के लिए निम्न ढाँचागत सुविधाओं को विकसित किया गया है।

A. **भूमि:–** ब्लाक स्तर पर संचालित इन प्रत्येक विद्यालयों के लिए एकजाई 5 एकड़ का परिसर आवंटित किया गया है जिस पर कक्षा 6 से 12 के लिए दो मंजिला सम्पूर्ण विद्यालयी सुविधाओं से युक्त भवन का निर्माण किया गया है। इस 5 एकड़ परिसर में विद्यालय भवन, विकसित खेल मैदान (क्रिकेट, हॉकी, बास्केटबाल, बैडमिंटन, बॉलीबाल आदि खेले जाने योग्य) पार्किंग, गार्ड रूम, किचन शेड, गार्डन, ग्रीन ग्रास, किचन गार्डन,वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम, ट्यूबवेल, सम्पूर्ण परिसर के चारदीवारी आदि सुविधाओं को विकसित किया गया है।

B. **भवन:–** 3.02 करोड़ रुपयों की प्रति इकाई लागत से निर्मित इन मॉडल विद्यालयों के लिए सम्पूर्ण विद्यालयी गतिविधियों के संचालन हेतु एक पर्याप्त आदर्श भवन का निर्माण किया गया है जिसमें प्रत्येक कक्षा के अध्यापन हेतु पृथक-पृथक कक्षा कक्ष, पुस्तकालयकक्ष, प्रिंसिपल कक्ष, गणित लैब, विज्ञान लैब, कंप्यूटर लैब, केमिस्ट्री लैब, फिजिक्स लैब, लैंग्वेज लैब, स्टेनो रूम, स्मार्ट क्लासरूम, मेडिकल रूम, स्टाफ रूम, एग्जाम सेल रूम, आर्ट गैलरी रूम, म्युज़िक एंड डाँस रूम, आर्ट एंड क्राफ्ट रूम, गेम्स रूम, डाइनिंग हॉल, रिसेप्शन हॉल आदि के लिए पृथक-पृथक कक्षों का निर्माण किया गया है।

3. **मॉडल विद्यालयों में सुविधा एवं विशेषताएँ:**–मॉडल विद्यालयों में विद्यार्थियों के सर्वांगिक विकास के लिए सभी ढाँचागत एवं शैक्षिक वातावरण के निर्माण का ध्यान रखा गया है जिनमें निम्न मूलभूत व्यवस्थाएँ विकसित की गई है–

- विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए इस प्रकार का विद्यालयी वातावरण उपलब्ध करवाया जा रहा है जहाँ विद्यार्थियों में नेतृत्व के गुण, सहयोग की भावना, शेयरिंग एंड केयरिंग के अलावा वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से जूझने के लिए कौशल और योग्यता का निर्माण हो सके।
- इन विद्यालयों में विषयवार शिक्षकों के अतिरिक्त कला, चित्रकला, संगीत, क्राफ्ट, नृत्य आदि के योग्य शिक्षक प्लेसमेंट एजेंसी के माध्यम से उपलब्ध करवाए गए हैं।
- मॉडल विद्यालयों में पर्याप्त सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का शिक्षण कार्य में भरपूर उपयोग किया जाता है। विद्यार्थियों के कम्प्यूटर ज्ञान में दक्षता हेतु पूर्णकालिक कंप्यूटर शिक्षक की उपलब्धता।
- मॉडल विद्यालयों की उच्च माध्यमिक कक्षाओं में वर्तमान में केवल विज्ञान संकाय संचालित किया जा रहा है।
- पूर्ण रूप से फर्नीचर आदि से सुसज्जित सभी कक्षा कक्ष, लैब्स, पुस्तकालय आदि की उपलब्धता।
- इन सभी मॉडल विद्यालयों में शिक्षक–विद्यार्थी अनुपात 1:40 निर्धारित किया गया है इस हेतु प्रत्येक कक्षा के 2 सेक्शन संचालित करते हुए जिनमें प्रति सेक्शन 40 विद्यार्थियों को प्रवेश दिया जाना निर्धारित है।
- कमजोर विद्यार्थियों के लिए अलग से ब्रिज कोर्सेज एवं उपचारात्मक शिक्षण के संचालन की व्यवस्था है।
- अध्यापकों द्वारा शिक्षण कार्य में आधुनिक शिक्षण तकनीक का प्रयोग किया जाना एवं इस हेतु विभिन्न तकनीकी सामग्री की उपलब्धता जैसे स्मार्ट क्लास रूम, इक्विपमेंट, डिजिटल लैंग्वेज लैब, Cyan, E-Content, ऑडियो विजुअल ऐड द्वारा शिक्षण कार्य करवाया जाना।
- विद्यार्थियों हेतु राज्य स्तरीय शैक्षिक भ्रमण करवाया जाना।
- नियमित रूप से कंप्यूटर कक्षाओं का संचालन।
- प्रत्येक सप्ताह विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं व्यक्तित्व निर्माण हेतु स्टेज फंक्शन करवाया जाना, जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी को अवसर मिले।
- विद्यालय में भरपूर खेल गतिविधियों का संचालन करवाया जाना जिससे कि विद्यार्थियों में उत्साह एवं सकारात्मक उर्जा का संचालन हो।
- 20 Computers से सुसज्जित ICT लैब जिसमें हाईस्पीड इन्टरनेट कनेक्टिविटी एवं विद्यार्थियों के उन्नयन के लिए सॉफ्टवेयर जैसे english, science, math quiz, lingua लैब आदि का उपलब्धता एवं विद्यार्थियों को नियमित रूप से इन पर अभ्यास करवाया जाना।
- इन मॉडल विद्यालयों में शिक्षण सामग्री के अभाव से किसी प्रकार से अध्ययन-अध्यापन में बाधा उत्पन्न न हो इसके लिए प्रति विद्यार्थी 4750/– रुपये वार्षिक खर्च का प्रावधान रखा गया है, जो कि विद्यालय में विभिन्न लैब्स, फर्नीचर, Computers, मेडिकल केयर, पुस्तकालय के रख रखाव, अन्य सह–शैक्षणिक गतिविधियों आदि के संचालन एवं विभिन्न लैब्स और ललित कला संबंधित सामग्री की पर्याप्त उपलब्धता के लिए है।
- प्रत्येक मॉडल स्कूल में विद्यार्थियों के स्वास्थ्य परीक्षण के लिए विशेष योजना अनुसार ध्यान रखा जाता है, साथ ही विद्यालय में भी स्थापित मेडिकल रूम में फर्स्ट ऐड सम्बन्धी सभी सुविधाएँ भी उपलब्ध है।
- सभी मॉडल विद्यालयों में सुरक्षा की दृष्टि से CCTV कैमरे, 2 चोकीदार की व्यवस्था है।
- मॉडल विद्यालयों में शिक्षण कार्य की गुणवत्ता को और अधिक सुनिश्चित करने के उद्देश्य से शिक्षकों हेतु 1.30 घंटे के लिए विद्यालय में ठहराव के लिए अतिरिक्त समय का प्रावधान है।
- शुरुआती तौर पर कुछ मॉडल विद्यालयों को डे बोर्डिंग फैसिलिटी के रूप में भी विकसित किया जा रहा है।
- विद्यार्थियों के स्व–अध्ययन हेतु एक विशाल पुस्तकालय की उपलब्धता जिसमें देश–विदेश के कई जाने–माने लेखकों की ज्ञानवर्धक पुस्तकें संकलित की गई हैं।
- विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास (पर्सनालिटी डवलपमेंट) एवं english speaking के लिए विशेष योजनानुसार अतिरिक्त कक्षाओं की व्यवस्था करवाया जाना।
- राज्य में संचालित सभी मॉडल विद्यालयों में क्षेत्रीय आवश्यकता अनुसार अधिकतम क्षमता के RO/ वाटर प्यूरीफायर सुविधा उपलब्ध है।
- मॉडल विद्यालयों में विद्यार्थियों के पढ़ने हेतु दैनिक पत्र पत्रिकाएँ, मैगजीन, रोचक एवं ज्ञानवर्धक कहानियों की पुस्तकें अंग्रेजी एवं हिंदी में निरंतर रूप से उपलब्ध करवाई जाती है एवं नियमित रूप से एक कालांश पुस्तकालय का रखा जाता है।
- विद्यार्थियों के सर्वांगिक विकास की संकल्पना के अंतर्गत नियमित रूप से विद्यालय में सह शैक्षणिक गतिविधियों का संचालन किया जाना जैसे इंटर हाउस एवं इंटर स्कूल खेल–कूद, वाद–विवाद, लेखन, क्विज आदि प्रतियोगिताएँ एवं विज्ञान मेलों का आयोजन के साथ ही नृत्य, संगीत, आर्ट एंड क्राफ्ट, स्कूल बैंड, स्काउट एंड गाइड, सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि के लिए कालांश संचालित किए जाते हैं।
- **निर्धारित आदर्श मानदंड (स्टाफिंग पैटर्न)** अनुसार कक्षा 6 से 12 हेतु निम्नानुसार अध्यापकों की उपलब्धता मॉडल विद्यालयों में सुनिश्चित करवाई गई है।

क्र संख्या	पदनाम	संख्या	सेवा का प्रकार
1	प्रधानाचार्य	1	राजस्थान शिक्षा विभाग से
2	प्राध्यापक	7	
3	व. अध्यापक	12	
4	पुस्तकालयाध्यक्ष	1	
5	Lab Assistant	3	
6	Junior assistant	1	
7	Senior assistant	1	
8	Drawing, music, WE teacher	3	संविदा पर
9	Office assistant	4	
10	PTI cum yoga instructor	1	

4. राजस्थान में स्थित मॉडल विद्यालयों की जिलेवार संख्यात्मक सूचना

जिला	कुल विद्यालय
AJMER	4
ALWAR	10
BANSWARA	6
BARAN	6
BARMER	5
BHARATPUR	0
BHILWARA	11
BIKANER	1
BUNDI	4
CHITTAURGARH	10
CHURU	0
DAUSA	4
DHAULPUR	1
DUNGARPUR	5
GANGANAGAR	2
HANUMANGARH	0
JAIPUR	2
JAISALMER	3
JALOR	2
JHALAWAR	4
JHUNJHUNUN	0
JODHPUR	9
KARAULI	4
KOTA	0
NAGAUR	9
PALI	6
PRATAPGARH	1
RAJSAMAND	7
S.MADHOPUR	5
SIKAR	0
SIROHI	2
TONK	5
UDAIPUR	6
Total	**134**

5. प्रवेश प्रक्रिया:–स्वामी विवेकानंद मॉडल विद्यालयों में प्रत्येक वर्ष 1 मार्च से सभी कक्षाओं हेतु प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ कर 1 अप्रैल से पूर्व पूर्ण कर ली जाती है। मॉडल विद्यालयों में प्रति कक्षा प्रति वर्ग 40 विद्यार्थियों को प्रवेश दिए जाने के मापदंड निर्धारित किए गए हैं जिसमें कक्षा 6 से 8 तक के प्रवेश राज्य सरकार द्वारा निर्धारित मापदंडानुसार विद्यालयी स्तर पर गठित प्रवेश समिति द्वारा दिया जाता है साथ ही बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इन विद्यालयों में कुल प्रवेश योग्य सीट्स की 55 प्रतिशत सीट्स बालिकाओं के प्रवेश हेतु आरक्षित रखी गई है एवं कक्षा 8 से कक्षा 9 के लिए अपात्र (कक्षा 8 की बोर्ड परीक्षा में ग्रेड B अथवा 45 प्रतिशत अंक प्राप्त न करने वाले विद्यार्थी) विद्यार्थियों के स्थान पर निर्धारित प्रवेश परीक्षा नीति से कक्षा 9 में रिक्त सीट्स पर प्रवेश दिए जाते हैं (विस्तृत प्रवेश दिशा निर्देश हेतु **www.rajrmsa.nic** पर देखें)

6. नामांकन क्षमता:– वर्तमान में मॉडल विद्यालय में कक्षा 6 से 12 तक के लिए संचालित की जा रही है जिसके अंतर्गत प्रत्येक कक्षा के अधिकतम 2 सेक्शन होंगे जिनमे प्रति सेक्शन 40 विद्यार्थी रखे गए हैं इस प्रकार लगभग 560 विद्यार्थी प्रति मॉडल स्कूल इस योजना से लाभान्वित हो रहे हैं।

7. बोर्ड सम्बद्धता:– मॉडल विद्यालयों में शिक्षण माध्यम अंग्रेजी है अत: सभी मॉडल विद्यालयों की बोर्ड सम्बद्धता सीबीएसई. बोर्ड दिल्ली से प्राप्त है।

8. स्टॉफ सिलेक्शन प्रक्रिया:– मॉडल विद्यालयों में अध्यापन कार्य हेतु राजस्थान शिक्षा विभाग से शिक्षकों का चयन वॉक इन इंटरव्यू द्वारा एक वर्ष की प्रतिनियुक्ति पर किया जाता हैं एवं उनके अकेडमिक परफॉरमेंस के आधार पर उनकी प्रतिनियुक्ति को आगे के लिए बढ़ाया जाता है।

9. पाठ्यक्रम:– इन मॉडल विद्यालयों में सीबीएसई. बोर्ड नई दिल्ली द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम संचालित किया जाता है।

10. विद्यालय में संचालित अन्य सरकारी योजनाएँ:– इन मॉडल विद्यालयों में किसी प्रकार का कोई भी शिक्षण शुल्क नहीं लिया जाता है एवं राज्य सरकार के अन्य विद्यालयों में लागू लगभग सभी सरकारी योजनाएँ एवं लाभ इन विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए लागू किए जाते हैं जिनमें से कुछ प्रमुख योजनाएँ निम्नलिखित है–

A. निशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण
B. ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना
C. अन्नपूर्णा दुग्ध योजना
D. मिड डे मील योजना
E. लैपटॉप योजना
F. विभिन्न स्कालरशिप योजनाएँ
g. सेनिटरी नैपकिन वितरण योजना आदि।

निष्कर्ष एवं प्रभाव:– आज के परिवेश में शिक्षा हर बालक का मूल अधिकार है तथा इसी कड़ी में राजकीय विद्यालयों के साथ राज्य में मॉडल स्कूल एक नवीन सोच व पहल का ही परिणाम है ।वास्तव में एक ऐसा आदर्श प्रतिमान है जो शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिकता के साथ बालक–बालिकाओं के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करने की एक महत्त्वपूर्ण अवधारणा है। राजस्थान में मॉडल स्कूल के स्थापना के पश्चात् शिक्षा में एक गुणात्मक परिवर्तन देखा गया है इससे राजस्थान की शिक्षा व्यवस्था को एक नई दिशा मिली है साथ ही अभिभावक अपने बच्चों के सुनहरे भविष्य को राजस्थान की शिक्षा व्यवस्था रूपी हाथों में सुरक्षित महसूस कर रहे हैं।

सहायक निदेशक, शाला दर्पण प्रकोष्ठ
राधाकृष्णन् शिक्षा संकुल, ज.ला. नेहरु मार्ग, जयपुर
मो: 9549373123

विशेष सूचना

अणुव्रत जीवन विज्ञान अकादमी, लाडनूं द्वारा चित्रकला, निबंध एवं कहानी/कविता/नाटक प्रतियोगिता

भारतीय संस्कृति अमिट है। निरंतरता इसकी विलक्षणता है। इस विलक्षणता की पृष्ठभूमि में शाश्वत मूल्यों का हाथ है। वे शाश्वत मूल्य हैं-अध्यात्म, अहिंसा, समन्वय, सहिष्णुता आदि। ये शाश्वत मूल्य आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने अतीत में थे। वर्तमान काल अनेक संस्कृतियों का संक्रमण काल है। इसमें भारतीय संस्कृति की अक्षुण्णता के लिए इन मूल्यों को नई पीढ़ी को हस्तांतरित करना अत्यंत आवश्यक है। इस दिशा में राष्ट्रसंत आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रतिपादित 'अणुव्रत आन्दोलन' एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रणीत 'जीवन विज्ञान' के माध्यम से किए गए प्रयास स्तुत्य एवं अनुकरणीय हैं।

अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास, नई दिल्ली द्वारा 'अणुव्रत जीवन विज्ञान अकादमी' के माध्यम से उक्त आचार्यों के आयामों-'अणुव्रत' एवं 'जीवन विज्ञान' को युवामनीषी आचार्य श्री महाश्रमण जी के पावन आध्यात्मिक सान्निध्य एवं अंगुली निर्देश से विविध विधाओं यथा- प्रतियोगिता, व्याख्यान, सम्पर्क, प्रशिक्षण द्वारा शिक्षण संस्थानों तक पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है। इस हेतु न्यास द्वारा आयोजित आगामी विभिन्न प्रतियोगिताओं का विवरण इस प्रकार है-

1. **प्रतियोगिता का नाम** ● 23वीं अणुव्रत **चित्रकला** प्रतियोगता (केवल विद्यार्थियों हेतु)
   विषय ● मेरी कल्पना का समृद्ध भारत
   विशेष विवरण : इस प्रतियोगिता में सरकारी, अर्द्धसरकारी एवं निजी शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। ड्राइंग शीट का आकार- कनिष्ठ वर्ग के लिए 15"×20" तथा वरिष्ठ वर्ग के लिए 20"×30" होना चाहिए।
2. **प्रतियोगिता का नाम** ● 23 वीं अणुव्रत **निबंध लेखन** प्रतियोगिता (केवल विद्यार्थियों हेतु)
   विषय ● सर्वांगीण विकास का आधार जीवन विज्ञान।
   ● विश्व में बढ़ता भारत का प्रभाव।
   विशेष विवरण : इस प्रतियोगिता में सरकारी, अर्द्धसरकारी एवं निजी शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषा में सुपाठ्य अक्षरों में हस्तलिखित अथवा टंकित।
   शब्द सीमा- कनिष्ठ वर्ग के लिए 350 से 600 शब्द तथा वरिष्ठ वर्ग के लिए 750 से 1000 शब्द है। चयनित निबंध को लेखक के नाम सहित पुस्तक में स्थान दिया जाएगा।
3. **प्रतियोगिता का नाम ● कहानी/कविता/नाटक लेखन** प्रतियोगिता (केवल शिक्षकों के लिए)
   विषय : ● चारित्रिक एवं नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा।
   ● विश्वमैत्री की भावना का साकार रूप।
   ● वर्ण, जाति, रंग भेद से मुक्त स्वस्थ समाज की संरचना।
   विशेष विवरण : इस प्रतियोगिता में सरकारी, अर्द्धसरकारी एवं निजी शिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षक भाग ले सकते हैं। हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषा में सुपाठ्य अक्षरों में हस्त लिखित अथवा टंकित।
   शब्द सीमा 500 से 1000 शब्द। चयनित रचना को लेखक के नाम सहित पुस्तक में स्थान दिया जाएगा।

नियमावली

1. प्रतिभागी द्वारा प्रेषित केवल मौलिक एवं अप्रकाशित रचना ही स्वीकार की जाएगी। अतः प्रतिभागी रचना के प्रथम पृष्ठ पर 'मौलिक एवं अप्रकाशित रचना' लिखकर अपने हस्ताक्षर प्रमाणित करें।
2. रचना का माध्यम हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषा हो सकता है। अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की रचना स्वीकार्य नहीं होगी।
3. प्रत्येक प्रतियोगिता की श्रेष्ठ तीन रचनाओं को क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्रदान करते हुए उचित पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा। कुछ श्रेष्ठ रचनाओं के लिए भी प्रोत्साहन पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र दिए जाएँगे।
4. समस्त प्रविष्टियाँ 'अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास' की सम्पत्ति होगी, जिन्हें मुद्रित एवं प्रकाशित करवाने का अधिकार 'अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास' के पास सुरक्षित रहेगा।
5. कक्षा 3 से 8 तक के विद्यार्थी कनिष्ठ वर्ग तथा कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थी वरिष्ठ वर्ग के अन्तर्गत माने जाएँगे।
6. प्रतिभागी शिक्षक/विद्यार्थी अपनी रचना के प्रथम एवं अन्तिम पृष्ठ पर अपना नाम, विद्यालय का नाम, कक्षा (केवल विद्यार्थियों के लिए), डाक का पूरा पता, ई-मेल एवं टेलिफोन/मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।
7. प्रतियोगी अपनी प्रविष्ठियाँ अंतिम तिथि (31 अक्टूबर, 2018) से पूर्व-प्रबन्ध न्यासी, अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 के पते पर भेजें।
8. सभी प्रतियोगिताओं की प्रविष्ठि जमा करवाने की अंतिम तिथि **31 अक्टूबर 2018** है।
9. प्रतियोगिताओं के परिणाम घोषणा की संभावित तिथि दिसम्बर, 2018 है।

हनुमानमल शर्मा
(सहायक निदेशक)
अणुव्रत जीवन विज्ञान अकादमी,
जैन विश्व भारती केम्पस,
लाडनूं-341306 (नागौर)

आदेश-परिपत्र : अक्टूबर, 2018

1. **विद्यार्थियों हेतु शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा 2018-19 के सम्बन्ध में निर्देश।**
2. **माध्यमिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए भारत/राजस्थान दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा का आयोजन करने के संबंध में योजना।**

1. विद्यार्थियों हेतु शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा 2018-19 के सम्बन्ध में निर्देश।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/छात्रवृत्ति/सेल-इ/शैक्षिक भ्रमण/18-19 दिनांक-07.09.2018 ● 1. समस्त उपनिदेशक (माध्यमिक) शिक्षा विभाग 2. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक-प्रथम ● विषय : विद्यार्थियों हेतु शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा 2018-19 के सम्बन्ध में निर्देश।

विद्यार्थियों हेतु शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा के संबंध में योजना एवं वित्तीय प्रावधान राज्य सरकार के पत्रांक प. 17 (2) शिक्षा-1/2011/ दिनांक 22.1.2011 के द्वारा स्वीकृत किया गया। इसकी पालना में सत्र 2018-19 के लिए निर्देश निम्नानुसार है। योजनानुसार राजकीय विद्यालयों के कक्षा 9 व 10 के विद्यार्थियों के लिए अन्तर जिला एवं कक्षा 11 एवं 12 के लिए अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण का कार्यक्रम निर्धारित किया गया है। वित्तीय वर्ष 2018-19 के लिए अन्तर जिला और अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण हेतु जो राशि स्वीकृत हुई है उसे अलग से जारी किया जा रहा है।

अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण का जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/माध्यमिक-प्रथम) को नोडल अधिकारी बनाया जाता है। अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण हेतु उपनिदेशक, माध्यमिक शिक्षा, उदयपुर को नोडल अधिकारी बनाया जाता है। ये नोडल अधिकारी निम्नांकित कार्यक्रम के अनुसार क्रमशः अन्तर जिला और अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण की क्रियान्विति करेंगे।

अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण प्रस्तावित तिथियाँ (कक्षा 9 व 10 के विद्यार्थियों के लिए)

क्र. सं.	कार्यक्रम	तिथि/ अवधि
1.	छात्र/छात्राओं द्वारा संस्था प्रधान के माध्यम से जिशिअ. (मा.) प्रथम को आवेदन प्रस्तुत करना	27.09.18
2.	जिशिअ. (मा.) प्रथम द्वारा वरीयता से छात्र/ छात्राओं का चयन कर संबंधित को सूचना करना	03.10.18
3.	पाँच दिवसीय अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण की अवधि	29.10.18 02.11.18 के मध्य

अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण प्रस्तावित तिथियाँ (कक्षा 11 व 12 के विद्यार्थियों के लिए)

1.	छात्र/छात्राओं द्वारा संस्थाप्रधान के माध्यम से जिशिअ. (मा.) प्रथम को आवेदन प्रस्तुत करना।	27.09.18
2.	जिशिअ. (मा.) प्रथम द्वारा वरीयता से छात्र/ छात्राओं का चयन कर परिक्षेत्र के उपनिदेशक (मा.) को नाम व आवेदन भेजना।	03.10.18
3.	परिक्षेत्र के उपनिदेशक (मा.) द्वारा जिलों से प्राप्त छात्र/छात्राओं के नाम व दल प्रभारी के रूप में एक शिक्षक का नाम नोडल अधिकारी को प्रेषित करना।	15.10.18
4.	नोडल अधिकारी द्वारा निदेशालय से शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम की अनुमति प्राप्त करना।	22.10.18
5.	दस दिवसीय अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण की अवधि।	28.10.18 से 06.11.18 के मध्य

योजना की क्रियान्विति सुनिश्चित करें। शैक्षिक भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों की सुरक्षा व उचित देखभाल को ध्यान में रखते हुए यथोचित व्यवस्था सुनिश्चित करें। इसी क्रम में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के दिनांक 28.7.14 के पत्र की छायाप्रति संलग्न करते हुए लेख है कि उक्त पत्र में वर्णित मानक सुरक्षा मानदण्डों की पालना सुनिश्चित की जाए तथा इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं बरती जाए।

● संलग्न- उपर्युक्तानुसार

● **(नथमल डिडेल) (आई.ए.एस.)** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग
शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110115

● कार्यालय प्रमुख शासन सचिव स्कूल शिक्षा विभाग शासन सचिवालय, जयपुर।

Dear

1. Recent tragedy involving students on study tour has once again underlined the need for putting in place s set of standard safety measures by the institutions that undertake such tours.
2. States have been organising study tours for its students and teachers in schools under various schemes of the States as well as Government of India such as the SSA, RMSA etc. There is a need to ensure basic safety measures before a school embarke on such tours.
3. States are requested to kundly issue appropriate guidelines so that necessary safety measures are in place across all schools. Please find enclosed a set of

recommendations on the subject that you may like to consider while formulating the state guidelines.

● Yours Sincerely **(Radha Chauhan)**

Standard safety measures

i. The Head of the Institution should ensure that the tour undertaken is required for the benefit of students and is related to the curriculum of the course in which such students are enrolled.

ii. The Head of the Institution should ensure issuing security i-cards to all such students and maintain a separate data base of the personal details like guardian/local guardian, home address, mobile, email etc. of such students and the same is carried by the Student on his person.

iii. The Head of the Institution should ensure that written permission) of one of the parents or the local guardian is submitted on behalf of every such student wanting to participate in an educational tour.

iv. The Head of the Institution should ensure that there is a senior teacher accompanying the students on such an educational tour. Further, a senior lady teacher should accompany if there are girl students Participating in the educational tour.

v. The Head of the Institution should ensure that prior permission of the organisation is obtained in advance such educational tours are undertaken.

vi. If the tours is undertaken to public places, dam, cities, power plants, sea beaches etc., a written communication must be made to the District magistrate of concerned authorities.

vii. If the educational tour has more than 10 particiapants it is necessary to hire a local tour operator who is well aware of the local conditions and can advise accordingly.

viii. The Head of the Institution should ensure that an undertaking is taken from every participating student that they would abide by all the rules and also that they have submitted the permission by their parents of local guardian before they participate in the educational tour.

ix. The Head of the Institution should also certify in the form of an undertaking that the institute will provide all necessary help in case of emergency or otherwise to all such students who are part of the educational tour.

2. माध्यमिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए भारत/राजस्थान दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा का आयोजन करने के संबंध में योजना।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● विषयः माध्यमिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए भारत/राजस्थान दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा का आयोजन करने के संबंध में योजना।

विद्यार्थियो को शैक्षिक ज्ञान के साथ साथ राज्य एवं देश के परिवेश, भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक स्थिति, ऐतिहासिक स्थल एवं सांस्कृतिक स्थलों की व्यावहारिक जानकारी उपलब्ध करवाई जानी भी आवश्यक है। इसके लिए विद्यार्थियों के शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम उपयोगी सिद्ध हो सकते है, इस हेतु योजना निम्नानुसार हैः–

1. उद्देश्य :–

1. देश/राज्य के ऐतिहासिक/सांस्कृतिक/प्राकृतिक धरोहरों से परिचित कराना।
2. स्थापत्य कला की जानकारी कराना।
3. विद्यार्थियों को प्राकृतिक धरा का आनंद उठाने का अवसर प्रदान करना।
4. विद्यार्थियों को सामुदायिक जीवन से जोड़ना।
5. विद्यार्थियों के लिए पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त अन्य ज्ञान की वृद्धि करना।

2. शैक्षिक भ्रमण :–

(अ) अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण एवं विद्यार्थी योग्यताः–

1. राजकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 9 व 10 के विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष विभाग द्वारा निर्धारित समय पर राज्य के अन्य जिले में पाँच दिवसीय राजस्थान दर्शन कार्यक्रम अन्तर्गत शैक्षिक भ्रमण हेतु भेजा जाएगा।

2. योग्यताः–

- राजकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 9 व 10 के विद्यार्थी जिन्होंने गत परीक्षा (कक्षा 8 एवं 9) में न्यूनतम 70 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हो।
- राष्ट्रीय/राज्य स्तर पर सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं खेलकूद प्रतियोगिता में भाग लेकर सहभागी/विजेता रहे हों।

(ब) अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण एवं विद्यार्थी योग्यताः–

1. राजकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 11 एवं 12 के विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष विभाग द्वारा निर्धारित समय पर अन्य राज्य में 10 दिवसीय भारत दर्शन कार्यक्रम अन्तर्गत शैक्षिक भ्रमण हेतु भेजा जाएगा।

2. योग्यता

- राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 11 एवं 12 के विद्यार्थी जिन्होंने गत परीक्षा (कक्षा 10 एवं 11) में न्यूनतम 70 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हो।
- राष्ट्रीय/राज्य स्तर पर सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं खेलकूद प्रतियोगिता में भाग लेकर सहभागी/विजेता रहे हो।

3. विद्यार्थियों एवं अध्यापकों की संख्याः–

अ. अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण–प्रत्येक जिले के 20 विद्यार्थी (कक्षा 9 के 10 एवं कक्षा 10 के 10) एवं 02 अध्यापक।

ब. अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमणः– अधिकतम 66 विद्यार्थी (प्रत्येक जिले से कक्षा 11 का 01 एवं कक्षा 12 का 01 विद्यार्थी) एवं 09 अध्यापक (प्रत्येक मण्डल से 01)

4. मेरिट का निर्धारण :–

अन्तर जिला/अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण के लिए विद्यार्थियों का चयन पूर्णतः वस्तुनिष्ठ प्रणाली (Objective Pattern) के आधार

पर किया जाएगा। छात्र/छात्रा द्वारा गत वर्ष की परीक्षा में प्राप्तांक प्रतिशत को 80 प्रतिशत श्रेयांस Weightage दिया जाएगा तथा राष्ट्रीय/राज्य स्तर पर खेलकूद/सांस्कृतिक, साहित्यिक प्रतियोगिताओं में सहभागिता (Participation) के लिए खेलकूद के 15 अंक (राष्ट्रीय स्तर 15, राज्य स्तर 10) सांस्कृतिक/साहित्यिक के 05 अंक (राष्ट्रीय स्तर 05, राज्य स्तर 03 अंक) दिए जाएँगे।

5. विद्यार्थियों से आवेदन प्राप्त करना एवं चयन प्रक्रिया–

अ. **अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण:–**जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक प्रथम) द्वारा जिले में संस्था प्रधान के माध्यम से प्रतिवर्ष विभाग द्वारा निर्धारित समय पर प्राप्त आवेदन पत्रों का अवलोकन कर निर्धारित मेरिट प्रक्रिया के द्वारा शैक्षिक भ्रमण हेतु विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा। चयनित विद्यार्थियो को निर्धारित समय पर राज्य के अन्य ज़िलों के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व के स्थानों पर पाँच दिवस के लिए भ्रमण पर भेजा जाएगा।

ब. **अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण:–** राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा अपने संस्था प्रधान के माध्यम से प्रतिवर्ष जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक–प्रथम) को आवेदन किया जा सकता है। जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक–प्रथम) द्वारा प्राप्त आवेदन पत्रों की जाँच कर निर्धारित मेरिट प्रक्रिया के द्वारा कक्षा 11 का 01 एवं कक्षा 12 के 01 विद्यार्थी का चयन किया जाएगा तथा चयनित विद्यार्थियों के नाम एवं आवेदन पत्र की प्रति मय पूर्ण विवरण अपने परिक्षेत्र के उप निदेशक (मा) को भेजेंगे। उप निदेशक (माध्यमिक) द्वारा जिलों से प्राप्त चयनित छात्र/छात्राओं के नाम, आवेदन पत्र की प्रति मय पूर्ण विवरण सहित एवं प्रभारी के रूप में 01 अध्यापक का नाम **उप निदेशक (मा) उदयपुर** (नोडल अधिकारी) को भेजेंगे। नोडल अधिकारी द्वारा समस्त जिलों से प्राप्त चयनित विद्यार्थियों को अन्य राज्यों के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व के स्थानों पर विभाग द्वारा निर्धारित समय पर 10 दिवसीय यात्रा पर भेजा जाएगा। यात्रा दल के साथ एक संस्था प्रधान (माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय) को दल प्रभारी के रूप में नोडल अधिकारी द्वारा लगाया जाएगा। नोडल अधिकारी समस्त कार्यक्रम तैयार कर पूर्ण अनुमति निदेशक, माध्यमिक शिक्षा से प्राप्त करेंगे।

6. यात्रा व्यय– विद्यार्थियों की यात्रा का संपूर्ण व्यय राज्य सरकार वहन करेगी। इस हेतु बजट राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध करवाया जाएगा। यह बजट संबंधित नोडल अधिकारी को आंवटित किया जाएगा जो संबंधित दिशा निर्देशों एवं वित्तीय नियमों की पालना करते हुए व्यय करेगा। अध्यापक की यात्रा का संपूर्ण व्यय यात्रा भत्ता नियमों के तहत राजकीय मद से देय होगा। यह विद्यार्थियो के व्यय में सम्मिलित नहीं होगा तथा समस्त लेखे विधिवत संधारित करते हुए व्यय विवरण उप निदेशक (योजना) एवं लेखाधिकारी (बजट) माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर को नियमानुसार यथासमय प्रस्तुत करेंगें।

7. नोडल अधिकारी–

अ. अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमणः जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक–प्रथम)

ब. अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमणः उप निदेशक (माध्यमिक) शिक्षा विभाग, उदयपुर

8. प्रतिवेदन– अन्तरजिला एवं अन्तरराज्य दर्शन हेतु शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा में भाग लेने वाले सभी विद्यार्थी एवं अध्यापक विधिवत यात्रा वृतान्त लिखेंगे, इस हेतु उन्हें एक डायरी एवं एक बॉलपैन उपलब्ध कराया जाएगा। सभी अध्यापक संभागियों में से किसी एक को मुख्य प्रतिवेदक यात्रा के प्रबंधक नोडल अधिकारी द्वारा नामित किया जाएगा जो यात्रा उपरान्त सभी यात्रा सहभागी अध्यापकों/विद्यार्थियों से उनकी रिपोर्ट प्राप्त कर समेकित प्रतिवेदन तैयार कर संबंधित नोडल अधिकारी को प्रस्तुत करेंगे।

● **(नथमल डिडेल) आई.ए.एस.** निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

आवेदन पत्र

राजस्थान दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा हेतु
छात्र/छात्रा हेतु आवेदन
(अन्तर जिला)

1. छात्र/छात्रा का नाम.....
2. पिता का नाम .....
3. जन्म तिथि .....
4. कक्षा (जिसमें अध्ययनरत है) .....
5. विद्यालय का नाम .....

फोटो प्रमाणित

6. विद्यालय स्कॉलर रजिस्टर क्रमांक .....
7. घर/पत्र व्यवहार का पता .....
8. घर का फोन नम्बर ..... मोबाइल नं.....
9. शैक्षिक सत्र 2017–18 में उत्तीर्ण परीक्षा का वर्णन–

कक्षा	कुल अंक	प्राप्तांक	उत्तीर्ण प्रतिशत
कक्षा 8 (कक्षा 9 में अध्ययनरत)			
कक्षा 9 (कक्षा 10 में अध्ययनरत)			

10. शैक्षिक सत्र 2017–18 में शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित खेलकूद गतिविधि में सम्भागित्व

(प्रमाण पत्र की प्रमाणित प्रति संलग्न करें) :–

स्तर	गतिविधि का नाम	आयोजन स्थल
1. राज्य स्तर		
2. राष्ट्र स्तर		

11. शैक्षिक सत्र 2017-18 में शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित साहित्यिक/सांस्कृतिक गतिविधि में सम्भागित्व (प्रमाण पत्र की प्रमाणित प्रति संलग्न करें) :-

स्तर		गतिविधि का नाम	आयोजन स्थल
1.	राज्य स्तर		
2.	राष्ट्र स्तर		

आवेदन पत्र के साथ मेरे द्वारा आवश्यक प्रमाणित प्रमाण-पत्र संलग्न कर दिए गए हैं। आवेदन पत्र में अंकित सभी तथ्य पूर्णतया सत्य हैं। मैं अन्तरजिला शैक्षिक भ्रमण हेतु जाना चाहता हूँ/चाहती हूँ।

छात्र/छात्रा के हस्ताक्षर

अभिभावक द्वारा सहमति

मैं (नाम).....अपने पुत्र/पुत्री (नाम.....) को विभाग द्वारा आयोजित अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण पाँच दिवसीय राजस्थान दर्शन यात्रा पर भेजने के लिए अपनी सहमति प्रदान करता हूँ।

हस्ताक्षर

(नाम अभिभावक)

संस्था प्रधान द्वारा प्रमाणित

आवेदन पत्र में अंकित सभी सूचनाओं एवं प्रलेखों की सत्यता की जाँच स्वयं मेरे द्वारा कर ली गई है। छात्र/छात्रा के अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण के लिए अनुशंसा की जाती है।

हस्ताक्षर संस्था प्रधान (मय मोहर)

आवेदन पत्र

भारत दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा हेतु
छात्र/छात्रा हेतु आवेदन
(अन्तर राज्य)

1. छात्र/छात्रा का नाम.....
2. पिता का नाम .....
3. जन्म तिथि .....
4. कक्षा (जिसमें अध्ययनरत है) .....
5. विद्यालय का नाम .....
6. विद्यालय स्कॉलर रजिस्टर क्रमांक .....
7. घर/पत्र व्यवहार का पता .....
8. घर का फोन नम्बर ..... मोबाइल नं.....
9. शैक्षिक सत्र 2017-18 में उत्तीर्ण परीक्षा का वर्णन-

फोटो प्रमाणित

कक्षा	कुल अंक	प्राप्तांक	उत्तीर्ण प्रतिशत
कक्षा 10 (कक्षा 11 में अध्ययनरत)			
कक्षा 11 (कक्षा 12 में अध्ययनरत)			

10. शैक्षिक सत्र 2017-18 में शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित खेलकूद गतिविधि में सम्भागित्व

(प्रमाण पत्र की प्रमाणित प्रति संलग्न करें) :-

स्तर	गतिविधि का नाम	आयोजन स्थल
1. राज्य स्तर		
2. राष्ट्र स्तर		

11. शैक्षिक सत्र 2017-18 में शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित साहित्यिक सांस्कृतिक गतिविधि में सम्भागित्व (प्रमाण पत्र की प्रमाणित प्रति संलग्न करें) :-

स्तर		गतिविधि का नाम	आयोजन स्थल
1.	राज्य स्तर		
2.	राष्ट्र स्तर		

आवेदन पत्र के साथ मेरे द्वारा आवश्यक प्रमाणित प्रमाण पत्र संलग्न कर दिए गए हैं। आवेदन पत्र में अंकित सभी तथ्य पूर्णतया सत्य हैं। मैं अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण हेतु जाना चाहता/चाहती हूँ।

छात्र/छात्रा के हस्ताक्षर

अभिभावक द्वारा सहमति

मैं (नाम).....अपने पुत्र/पुत्री (नाम.....) को विभाग द्वारा आयोजित अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण दस दिवसीय यात्रा पर भेजने के लिए अपनी सहमति प्रदान करता हूँ।

हस्ताक्षर

(नाम अभिभावक)

संस्था प्रधान द्वारा प्रमाणित

आवेदन पत्र में अंकित सभी सूचनाओं एवं प्रलेखों की सत्यता की जाँच स्वयं मेरे द्वारा कर ली गई है। छात्र/छात्रा के अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण के लिए अनुशंसा की जाती हैं।

हस्ताक्षर संस्था प्रधान (मय मोहर)

- कार्य की अधिकता से नहीं, आदमी उसे भार समझकर अनियमित रूप से करने पर थकता है।
- जो जैसा सोचता है और करता है वह वैसा ही बन जाता है।
- दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार न करो जो तुम्हे अपने लिए पसन्द नहीं।

माह : अक्टूबर, 2018	विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम	प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
1.10.2018	सोमवार	जोधपुर	10	सामाजिक विज्ञान	6	केन्द्र सरकार
2.10.2018	मंगलवार	बीकानेर	गैरपाठ्यक्रम	गाँधी जयंती व शास्त्री जयंती (उत्सव)		
3.10.2018	बुधवार	उदयपुर	3	पर्यावरण अध्ययन	4	स्वच्छता की आदत
4.10.2018	गुरुवार	जयपुर	8	सामाजिक विज्ञान	8	पर्यटन और परिवहन
5.10.2018	शुक्रवार	जोधपुर	3	हिन्दी	6	आदमी का धर्म
6.10.2018	शनिवार	बीकानेर	12	हिन्दी अनि. सृजन	10	भय : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
दिनांक 8.10.2018 से विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम का समय दोपहर 12.40 से 1.00 बजे तक						
8.10.2018	सोमवार	उदयपुर	8	विज्ञान	5	जैव विविधता
9.10.2018	मंगलवार	जयपुर	6	विज्ञान	8	सूक्ष्म जीव
11.10.2018 से 13.10.2018 तक द्वितीय परख						
15.10.2018	सोमवार	जोधपुर	9	संस्कृत	9	संस्कृत गीतम्
16.10.2018	मंगलवार	बीकानेर	10	हिन्दी क्षितिज	12	महावीर प्रसाद द्विवेदी (स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खण्डन)
18.10.2018	गुरुवार	उदयपुर	9	सामाजिक विज्ञान	9	भारत का संविधान
20.10.2018	शनिवार	जयपुर	3	पर्यावरण अध्ययन	9	भोजन में विविधता
22.10.2018	सोमवार	जोधपुर	10	हिन्दी क्षितिज	10	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न)
23.10.2018	मंगलवार	बीकानेर	3	हिन्दी	13	अजमेर की सैर
24.10.2018	बुधवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम	संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस उत्सव		
25.10.2018	गुरुवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम	इन्दिरा गाँधी पुण्य तिथि (संकल्प दिवस)		
26.10.2018 से 27.10.2018 तक राज्य स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन (शिक्षकों के लिए अवकाश)						
31.10.2018 बुधवार मध्यावधि अवकाश- इन्दिरा गाँधी पुण्य तिथि (संकल्प दिवस-उत्सव)						

कार्य दिवस- 21, (प्रसारण-16, अन्य-5) **अवकाश-10** (रविवार-4, अन्य- 06) **उत्सव-03 ● निदेशक,** शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान, अजमेर।

शिविरा पञ्चाङ्ग

अक्टूबर-2018

रवि		7	14	21	28
सोम	1	8	15	22	29
मंगल	2	9	16	23	30
बुध	3	10	17	24	31
गुरु	4	11	18	25	
शुक्र	5	12	19	26	
शनि	6	13	20	27	

अक्टूबर 2018 ● कार्य दिवस-21, रविवार-04, अवकाश-06, उत्सव-03 ● 1 अक्टूबर-विद्यालय समय परिवर्तन - 1. एक पारी विद्यालय- विद्यार्थियों हेतु प्रात: 09:35 से 3:40 बजे तक। (शिक्षकों हेतु प्रात: 9:30 से 3:40 बजे तक, संस्थाप्रधान हेतु प्रात: 9:20 से 3:40 बजे तक), **2. दो पारी विद्यालय-** प्रात: 07:30 से सायं 05:30 बजे तक (प्रत्येक पारी 5:00 घंटे), **2 अक्टूबर-**गाँधी जयंती व शास्त्री जयंती (उत्सव), **3 से 4 अक्टूबर-**जिला स्तरीय जीवन कौशल विकास बाल मेला (SIERT), **3 से 5 अक्टूबर-** संभाग स्तरीय केजीबीवी. खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन-SSA, **3 से 7 अक्टूबर-**तृतीय समूह की जिला स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन (अधिकतम 04 दिवस), **5 से 25 अक्टूबर-**विशेष आवश्यकता वाले बालक-बालिकाओं हेतु अंग-उपकरण वितरण कैम्प-SSA, **8 से 9 अक्टूबर-**राज्य स्तरीय रोल प्ले एवं लोकनृत्य प्रतियोगिता (SIERT), **10 अक्टूबर-**नवरात्र स्थापना (अवकाश), **11 से 13 अक्टूबर-**द्वितीय परख, **17 अक्टूबर-**दुर्गाष्टमी (अवकाश), **19 अक्टूबर-** विजयादशमी (अवकाश), **20 से 25 अक्टूबर-**तृतीय समूह की राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन, **24 अक्टूबर-**संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस (उत्सव), **26 से 27 अक्टूबर-**राज्यस्तरीय शैक्षिक सम्मेलन, **29 अक्टूबर से 09 नवम्बर-**मध्यावधि अवकाश, **31 अक्टूबर 1.** इन्दिरा गाँधी पुण्य तिथि (संकल्प दिवस-उत्सव), **2.** श्रेष्ठ राजकीय विद्यालय पुरस्कार- 2018 के प्रस्तावों की समीक्षा कर मण्डल अधिकारी द्वारा निदेशक, माध्यमिक शिक्षा को भेजना। **नोट-** माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा शिक्षकों के व्यावसायिक कौशल एवं उन्नयन प्रतियोगिता का जिला स्तर पर आयोजन। **SSA से सम्बन्धित कार्यक्रम-अक्टूबर से नवम्बर :** **1.**10 दिवसीय एच.एम. लीडरशिप एस.आर.जी. प्रशिक्षण, **2.** कक्षा 5 मूल्यांकन परीक्षा आवेदन पत्र ऑनलाईन।

बी आरसी. में सह-समन्वयक होने के नाते प्रायः विद्यालयों में अनुश्रवण एवं अनुसमर्थन के लिए जाना होता ही है। शिक्षकों और बच्चों से न केवल मुलाकात होती है बल्कि विभिन्न मुद्दों पर बातचीत भी होती है। कक्षा में बातचीत के दौरान यह अनुभव आया कि बच्चे सक्रिय सहभागिता नहीं करते। समुचित उत्तर नहीं दे पाते। एक प्रकार के संकोचभाव में दबे सिर झुकाए, अनमने-से बैठे बस सुनते रहते हैं। हालांकि उनका यह सुनना भी भाषायी कौशल की दृष्टि से 'सुनना' नहीं कहा जा सकता। ऐसा क्यों होता है? कारणों की तह में जाएँ तो कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य उभरते हैं। यथा बच्चों के साथ कभी खुलकर संवाद के मौके नहीं दिए गए। उनके मन की बातों, अर्जित अनुभवों को कक्षा में प्रकट होने के मौखिक और लिखित सहज अवसर नहीं खोजे-बनाए गए हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 की अपेक्षा है कि रचनात्मक सन्दर्भ में, सीखना ज्ञान के निर्माण की एक प्रक्रिया है विद्यार्थी सक्रिय रूप से पूर्व प्रचलित विचारों से उपलब्ध सामग्री, गतिविधियों के आधार पर अपने लिए ज्ञान की रचना करते हैं (अर्जित अनुभव)। हर बच्चा सीखना चाहता है और उसके सीखने के कई तरीके होते हैं। बच्चे अपने परिवार, पड़ोस और परिवेश में बहुत कुछ सीखते हैं और सोचते भी हैं। वह अपने अनुभव बाँटना भी चाहते हैं लेकिन विद्यालय उनके लिए अवसर नहीं जुटाता। विद्यालय में तो शिक्षकों का पूरा जोर पुस्तकें पढ़ाने और पाठ्यक्रम को समय से पूरा कराने में ही रहता है। फलतः शिक्षक ज्ञान के एकमात्र स्रोत के रूप में उभर आता है और कक्षा या विद्यालय में उसकी सत्ता स्थापित हो जाती है, जहाँ बच्चों के करने-कहने के लिए न तो जगह होती है और न ही स्वतंत्र सृजनात्मक माहौल। बच्चे सामग्री को ज्यों का त्यों उगल दें। ज्ञान निर्माण में उनकी सक्रिय भूमिका नहीं होती। तो फिर प्रश्न उठता है कि बच्चों में रचनात्मकता आए तो आए कैसे? इस प्रश्न के उत्तर में कई शैक्षिक और सह-शैक्षिक गतिविधियों के नाम लिए जा सकते हैं यथा बाल सभा, बाल शोध मेला, खेलकूद, गाँव भ्रमण, वन विहार कार्यक्रम, वार्षिकोत्सव एवं दीवार पत्रिका का प्रकाशन।

दीवार पत्रिका

बच्चों में रचनात्मकता वृद्धि

❐ प्रमोद दीक्षित 'मलय'

बच्चों की रचनात्मकता के विकास के लिए जरूरी है कि विद्यालय उन्हें उनके अर्जित अनुभवों को प्रकट करने के सुगम अवसर उपलब्ध कराए। इस सम्बन्ध में दीवार पत्रिका एक महत्त्वपूर्ण संसाधन के रूप में उभरी है। दीवार पत्रिका को उत्तराखण्ड में एक अभियान के रूप में गति दे रहे 'शैक्षिक दखल' के सम्पादक शिक्षक महेश पुनेठा कहते हैं, 'दीवार पत्रिका भाषायी दक्षता और रचनात्मकता के विकास का माध्यम ही नहीं है बल्कि अपने आप में पूरी पाठ्यचर्या है। दीवार पत्रिका निर्माण की प्रक्रिया से गुजरना ज्ञान सृजन और मूल्य निर्माण की प्रक्रिया से गुजरना है। इस प्रक्रिया से जुड़कर बच्चे एक साथ सभी विषयों की दक्षता और कौशलों को प्राप्त करते हैं। यह सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का एक बेहतरीन टूल भी है। निश्चित रूप से दीवार पत्रिका विद्यालय को एक ऐसा रचना स्थल बनाने में सहायक है जहाँ बच्चे भयमुक्त और बालमैत्रीपूर्ण परिवेश में खुशी-खुशी जीवन का सबक सीख सकते हैं।'

क्या है दीवार पत्रिका : किसी चार्ट पर साहित्य की विविध विधाओं की बच्चों की मौलिक रचनाओं, चित्रों एवं गतिविधियों को चिपका एवं सजा-संवार कर प्रस्तुत करना ही दीवार पत्रिका है। किसी दीवार पर टंगी होने के कारण ही इसे 'दीवार पत्रिका' कहते हैं। इसे 'बाल मैग्जीन' और 'बाल अखबार' के नाम से भी जाना जाता है। वास्तव में दीवार पत्रिका किसी विद्यालय का एक ऐसा भौतिक संसाधन है जिसे रोचक, अर्थपूर्ण एवं गतिविधिपरक सामग्री से सज्जित कर प्रदर्शित किया जाता है जिसमें बच्चों की अभिव्यक्ति के लिए असीम संभावना और अवसर होते हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में सुझाव दिए गए हैं कि विद्यालय रटन्त प्रणाली की बजाय बच्चों को मौलिक कल्पना एवं चिन्तन मनन करने के अवसर देते हुए स्कूली ज्ञान को बच्चों के स्थानीय परिवेश से उपजे ज्ञान से जोड़े जहाँ बच्चे सभी विषयों में परस्पर सह-संबंध स्थापित करते हुए सीखने-सिखाने के नए सुगम अवसर तलाश सके। दीवार पत्रिका इस कसौटी पर खरी उतरती है। विद्यालयों में बच्चों की भाषायी दक्षता और रचनात्मक कौशलों के विकास में दीवार पत्रिका महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सामान्यरूप से कविता, कहानी, चुटकुले, कुछ चित्र और विद्यालय की कुछ गतिविधियों के समाचार जैसी बच्चों की रचनाओं को एकत्र कर किसी चार्ट पेपर या नये/पुराने कलैण्डर में चिपका कर और थोड़ी-सी साज-सज्जा के साथ प्रकाशित करना ही दीवार पत्रिका है। ऊपरी हिस्से में स्केच पेन से मोटे-बड़े अक्षरों में एक शीर्षक लिखकर सूतली आदि से बाँध कर किसी ऐसी दीवार पर उचित ऊँचाई पर टांग दिया जाता है जहाँ बच्चे आसानी से पढ़ सकें। चार्ट के किनारों को लेमिनेटेड करने और ऊपर-नीचे बांस की खपच्ची या कोई पतली टहनी बाँध देने से पत्रिका को सुरक्षित रूप से टाँगना आसान हो जाता है। यह बच्चों की अभिव्यक्ति का सस्ता और सर्व सुलभ साधन है। एक बार समझ बन जाने पर इसे बेहतर बनाने के अन्य प्रयोग भी किए जा सकते हैं।

दीवार पत्रिका कैसे बनाएँ : दीवार पत्रिका बहुत कम लागत पर तैयार की जा सकने वाली एक सरल और रुचिपूर्ण गतिविधि है जिसे बच्चे डेढ़-दो घण्टे में बना सकते हैं। पत्रिका बनाने के लिए एक या दो चार्ट, रंगीन पेंसिलें, गोंद, कैंची, पटरी, सूतली, टेप आदि की जरूरत पड़ती है। चार्ट के अभाव में पुराने कैलेण्डर या अखबारों का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। एक चार्ट लें और उसके ऊपर की ओर दो इंच चौड़ा अन्य चार्ट से काटा गया टुकड़ा चिपका दें। सूखने पर उस हिस्से पर पत्रिका का नाम और अन्य जानकारियाँ जैसे वर्ष, पत्रिका के अंक की संख्या, प्रकाशन तिथि, विद्यालय का नाम आदि स्केच पेन या मार्कर से स्पष्ट और स्वच्छ तरीके से अंकित कर दें, इसे 'हेडर' कहते हैं। बच्चों से कागज पर रचनाएँ मंगाकर एकत्रित कर उनमें से उपयोगी रचनाओं को चुनकर पूरे चार्ट पर 'हेडर' के नीचे करीने से चिपका दी जाती हैं। रंगीन

पेंसिल से कागजों के चारों ओर बार्डर बना दें। चार्ट के चारों ओर बार्डर बनाना भी ठीक रहेगा। नीचे की ओर सम्पादकीय टीम के नाम भी लिख लें। यदि रचनाएँ अधिक आ गई हैं तो एक दूसरा चार्ट लेकर पहले चार्ट के नीचे चिपका कर आकार बड़ा कर लें। अब चार्ट के ऊपरी हिस्से में दो छेद कर आईलेट लगा सूतली फंसा कर तैयार पत्रिका को किसी दीवार में बच्चों की ऊँचाई अनुसार टांग दें जहाँ बच्चे आसानी से पढ़ सकें। तैयार पत्रिका को प्रार्थना सत्र या बाल सभा के दौरान प्रदर्शित करने से बच्चों में उत्साह और कुछ नया रचने-करने का भाव जन्मता है। गाँव के सार्वजनिक स्थान या किसी चौपाल पर भी दीवार पत्रिका को कुछ समय के लिए लगाया जा सकता है ताकि ग्रामवासी बच्चों की रचनाधर्मिता से परिचित हो सकें। यदि चार्ट मुड़ या हवा में उड़ रहा हो तो बांस की एक-एक खपच्ची या दफ़्ती का टुकड़ा चार्ट के ऊपर-नीचे पीछे की ओर धागे से टांक दें। बच्चों में दीवार पत्रिका की समझ विकसित करने के लिए उन्हें कोई बाल पत्रिका या अखबार पढ़ने को दें और उसके विविध स्तम्भों पर बातचीत करें, इस प्रक्रिया से बच्चे पत्रिका या अखबार के स्वरूप को समग्रता में समझ पाएँगे। शुरू में अखबारों की बालोपयोगी कतरनों को चस्पा करना उचित रहेगा। एक-दो अंक निकालने के बाद बच्चों से उनकी पाठ्यपुस्तक, किसी पत्रिका, अखबार आदि से देखकर लिखी गई सामग्री मंगवाई जाए। इस तरह धीरे-धीरे बच्चों में स्वयं लिखने की भावना जागेगी। प्रकाशन साप्ताहिक, पाक्षिक या मासिक किया जा सकता है। निरन्तरता बनी रहने से पत्रिका का स्वरूप बेहतर होता जाएगा। बच्चों की रुचि और संख्या के आधार पर किसी विद्यालय में एक से अधिक दीवार पत्रिकाएँ प्रकाशित की जा सकती है।

सम्पादक मण्डल का चयन करना : सुगमकर्त्ता शिक्षक/शिक्षिका को चाहिए कि सबसे पहले सभी कक्षाओं से पढ़ने-लिखने में रुचि रखने वाले बच्चों को चिह्नित कर उनके साथ अलग बैठें और दीवार पत्रिका के सम्बन्ध में विस्तृत बातचीत कर एक डमी दीवार पत्रिका तैयार करें। प्रशिक्षण के समय समाचार पत्रों से बच्चों से सम्बंधित सामग्री की कटिंग्स का प्रयोग कर सकते हैं। तत्पश्चात उन्हीं बच्चों में से एक सम्पादक मण्डल बनाएँ जिसमें सम्पादक, सह सम्पादक, कला सम्पादक, प्रबन्ध सम्पादक, समाचार संवाददाता आदि काम के लिए बच्चों को चुन कर दायित्व दे दें। सुगमकर्त्ता कोई निर्णय न सुनाएँ बल्कि बच्चों को निर्णय लेने को प्रेरित करते हुए आजादी दें। बच्चों के निर्णय को स्वयं भी उदार मन से स्वीकार करे। सम्पादक मण्डल अपनी पत्रिका का नाम स्वयं या विद्यालय के बच्चों के साथ चर्चा करके चुनें, ऐसा करने से पत्रिका के प्रति बच्चे अपनापन महसूस करेंगे।

पत्रिका में कैसी सामग्री हो : एक दीवार पत्रिका में कविता, कहानी, गीत, पहेलियाँ, कार्टून, रोचक गतिविधियाँ, चित्र, स्कूल और गाँव के समाचार, लेख, साक्षात्कार, चुटकुले, सम्पादकीय, पाठकों के पत्र आदि विविध सामग्री होने से पत्रिका अधिक उपादेय होने के साथ ही एक सुवासित गुलदस्ते का एहसास करायेगी। पत्रिका में स्थानीय इतिहास, भूगोल, जंगल, पर्यावरण, संस्कृति, पर्यटन, पुरातात्विक स्थल एवं शिल्प मेले-उत्सव आदि पर भी सामग्री दी जा सकती है। समय-समय पर विशेषांक भी निकाले जा सकते हैं। जैसे हिन्दी भाषा, गणित, सामाजिक विषय, कला, विज्ञान आदि विषयगत विशेषांक। वहीं जड़ी बूटी, गैर कृषि एवं स्थानीय उत्पाद, लोकगीत एवं लोकपर्व, बाल शोध मेला आदि सहित अन्य मुद्दों पर भी विशेषांक तैयार किए जा सकते हैं।

दीवार पत्रिका निर्माण में चुनौतियाँ एवं सावधानी : जब भी कोई नया काम प्रारम्भ होता है तो लोग उसे संशय की दृष्टि से देखते हैं और प्रायः विरोध भी करते हैं। दीवार पत्रिका वैसे बहुत सरल एवं कम लागत पर तैयार होने वाली एक सह-शैक्षिक गतिविधि है पर समझ के अभाव में अपेक्षित सफलता नहीं मिलती और उपहास का पात्र भी बनना पड़ता है। पत्रिका निर्माण में आने वाली कुछ सामान्य चुनौतियाँ इस प्रकार है। यथा, सुगमकर्त्ता शिक्षक को दीवार पत्रिका की अवधारणा स्पष्ट न होने से वह बच्चों तक सम्यक् जानकारी नहीं पहुँचा पाएगा। इस कारण बच्चे काम में रुचि नहीं लेंगे और पत्रिका एक अनावश्यक थोपा हुआ काम या बोझ बन जाएगी। विद्यालय के अन्य शिक्षकों का सहयोग न करना और उपहास करना, बच्चों की मौलिक रचनाएँ न मिल पाना, धन एवं समय की बर्बादी समझना आदि चुनौतियों से पार पाने के लिए दीवार पत्रिका पर काम कर रहे शिक्षक के लिए दीवार पत्रिका की अवधारणा की समझ बिल्कुल स्पष्ट होनी चाहिए। बेहतर होगा कि बच्चों के बीच काम करने से पहले उसने विधिवत प्रशिक्षण ले लिया हो या दीवार पत्रिका बनाने में कहीं सहभागिता की हो। अन्यथा अधकचरी समझ से बनी दीवार पत्रिका अपने उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर पाएगी और असमय काल कवलित हो जाएगी। ऐसी स्थिति में पुनः काम प्रारम्भ करना कठिन हो जाता है। बच्चों से गलतियाँ होना स्वाभाविक है, ऐसी स्थिति में सुगमकर्त्ता को धैर्य, विवेक एवं शान्ति से काम लेना चाहिए। यह हमेशा ध्यान रहे कि दीवार पत्रिका बनाना हिन्दी भाषा की कक्षा नहीं हैं। हस्तलेख खराब होने, लिखावट को काटने, वर्तनी की अशुद्धियों के लिए बच्चों को डाटें नहीं। काम करते हुए बच्चे स्वयं एकदूसरे को उनकी कमियों की ओर संकेत करेंगे और उनका सीखना निर्बाध सम्भव हो सकेगा।

दीवार पत्रिका बच्चों की प्रगति का संकेतक : दीवार पत्रिका बच्चों की रचनात्मकता को बढ़ाने के साथ ही उनकी प्रगति का संकेतक भी होती है। बच्चों को अपने कौशलों को निखारने का अवसर तो मिलता ही है बल्कि वे अपने कार्य की जाँच परख भी कर लेते हैं। दीवार पत्रिका का निर्माण करना सही मायनों में लोकतांत्रिक परिवेश में ज्ञान निर्माण करना और उस अर्जित सीख को आगे ले जाना है। लोकतंत्र के प्रभावी स्तम्भ मीडिया की समझ भी विकसित होती है। बच्चे सभी काम मिलजुल कर करते हैं, इससे बच्चों में सामाजिकता का विकास होता है। बच्चे रचनाओं के चयन में विचार-विमर्श करते हैं तो उनमें मुद्रित सामग्री को पढ़ने, समझने, अवलोकन करने की समझ विकसित होती है। बहुत सारी वस्तुओं में से उपयोगी वस्तुओं के चयन करने का हुनर पैदा होता है। चूंकि पूरा काम समूह में होता है और परस्पर विचार विनिमय होने से उनमें अपना पक्ष रखने और दूसरों की बात सुनने का कौशल अर्जित होता है। एक टीम के रूप में काम करना आता है और किसी कार्य की सफलता में टीम की भूमिका एवं महत्त्व को समझ पाते हैं। ये सब बातें कक्षा में नहीं सिखायी जा सकती क्योंकि बच्चे बहुत सारी

चीजें देख सुन और स्वयं करके सीखते हैं। किया काम कभी भूलता नहीं है। दीवार पत्रिका का काम करने से बच्चों में चार भाषायी कौशलों में से दो लिखना एवं पढ़ना का जहाँ वय एवं कक्षानुसार वांछित स्तर का विकास हो जाता है वहीं अन्य दो कौशल सुनना एवं बोलना में भी पकड़ मजबूत होती है। सम्पादन प्रक्रिया में नये शब्दों, वाक्यों, विधाओं, शैली और बनावट से परिचय होता है जो बच्चे की सीखने की गति को तीव्रतर करता है। नई-नई चीजें सीखने के लिए बच्चे न केवल पुस्तकालय जाना प्रारम्भ करते हैं बल्कि पुस्तकों एवं पत्रिकाओं से दोस्ती भी करते हैं और पुस्तकों से यह दोस्ती उनमें पढ़ने की एक संस्कृति विकसित करती है। यह बच्चे की भाषा को तो समृद्ध करता ही है साथ ही उसकी भावाभिव्यक्ति को प्रभावी भी बनाता है। यह विद्यालयी ज्ञान को परिवेशीय ज्ञान से तारतम्य स्थापित करती है। यह अभिव्यक्ति की आजादी का बच्चों का अपना एक मंच है जहाँ सभी के लिए अपने मन की बात कहने के एक समान अवसर हो लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति आस्था, संवैधानिक मूल्यों यथा समता, स्वतंत्रता, न्याय, मानवीय गरिमा, करुणा, धर्मनिरपेक्ष सामाजिक व्यवहार और प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व के साथ जीने की कला भी दीवार पत्रिका में काम करते हुए बच्चे अनायास सीख जाते हैं। जीवन कौशलों एवं मानवीय मूल्यों का विकास स्वतः होता जाता है।

शिक्षकों के साथ काम : प्रयोग के तौर पर 2013 में मैंने अपने कार्यक्षेत्र अन्तर्गत लगभग 15 स्कूलों में दीवार पत्रिका पर काम शुरू करवाया। उन विद्यालयों से एक-एक शिक्षक/शिक्षिका चुनकर एक दिन का प्रशिक्षण दिया। बड़े समूह में दीवार पत्रिका पर संवाद हुआ। प्रश्नोत्तर हुए और एक साझी समझ का निर्माण किया। फिर पाँच-पाँच शिक्षकों के छोटे समूह बनाकर दीवार पत्रिका बनवाई गई। कार्यशाला से बनी समझ का इस्तेमाल करते हुए उन लोगों ने अपने विद्यालयों में काम शुरू किया। उन सबके लिए यह एक नया काम था लेकिन बच्चों में भाषायी विकास का सपना संजोए वे इसे करना चाहते थे। हालांकि कतिपय कारणों से लगभग आधे स्कूलों में दो-तीन अंक निकलने के बाद पत्रिका प्रकाशन सम्भव नहीं हो सका पर आज 7 विद्यालयों में दीवार पत्रिका कहीं पाक्षिक तो कहीं मासिक रूप से नियमित निकल रही हैं। एक स्कूल में तो छप रही हैं। 'चकमक' (मासिक पत्रिका, एकलव्य द्वारा प्रकाशित भोपाल), पुस्तक 'दीवार पत्रिका और रचनात्मकता' (लेखक महेश पुनेठा, लेखक मंच प्रकाशन, नई दिल्ली) में बच्चों के अनुभव छपे हैं। उनमें भाषायी कौशलों का विकास हुआ। दीवार पत्रिका बच्चों को एक बेहतर नागरिक के रूप में भी विकसित कर रही है जो अपने आसपास में हो रहे परिवर्तनों को गहराई से समझ रहे हैं।

मैं हमेशा से दीवार पत्रिका को बच्चों में भाषायी दक्षता विकसित करने के एक सहज साधन के रूप में देखता-मानता रहा हूँ। दीवार पत्रिका को मैंने इस पर काम करने वाले बच्चों में लेखन क्षमता, कल्पना और चिन्तन शक्ति, कलात्मक अभिरुचि, सामूहिकता, सामग्री चयन करने से संपादकीय कौशल के विकास के साथ-साथ उनमें एक अच्छे नागरिक के रूप में बढ़ने-गढ़ने के अवसर के रूप में देखा है। लेकिन इधर के तीन-चार वर्षों में जब से मैंने दीवार पत्रिका पर बच्चों के साथ गम्भीरता से काम करना शुरू किया है, इसके एक नये रूप से मैं परिचित हुआ हूँ और वह है दीवार पत्रिका से होने वाले बदलाव। ये बदलाव बच्चों और विद्यालय के शैक्षिक वातावरण में ही नहीं हैं अपितु विद्यालय की बाहर की दुनिया में भी हैं।

अब दीवार पत्रिका केवल कहानी, कविता, चुटकुले के संक्षिप्त कलेवर से बाहर निकल न केवल नई विधाओं की रचनास्थली बनकर उभरी है बल्कि लोक जीवन के विविध पक्षों को अपने में समेटने-सहेजने को उत्कंठित और उत्साहित भी दिखी है। चुप्पी की संस्कृति को तोड़ती एवं व्यवस्था में पिसते लोक का स्वर नव आयाम लेकर अब प्रकट होने लगा है। बच्चों के घर-परिवार और उनकी मन की बातें, विद्यालय और गाँव की गतिविधियों के समाचार एवं समस्याएँ, गाँव का अपना इतिहास-भूगोल, नजरी-नक्शा, खेती का काम कर रहे किसान-श्रमिक, बुनकर, बांस से डलिया और मिट्टी से बर्तन बनाने वाले, लुहारगिरी से जुड़े कला दक्ष लोगों के साक्षात्कार से दीवार पत्रिका अन्य बच्चों, शिक्षकों और अभिभावकों का ध्यान अपनी ओर खींच रही है। इस नये रूप को देख-समझकर बच्चों में उत्साह हिलोरें लेने लगा है और उन्हें नए अंक की बेसब्री से प्रतीक्षा होने लगी है। हमारी दीवार पत्रिका बच्चों के साथ हँसी-ठिठोली, संवाद करते एवं सवाल खड़े करती आगे बढ़ रही थी कि एक घटना ने हम सबको अन्दर तक हिला दिया।

बदलाव की आधारभूमि बनती दीवार पत्रिका : एक दिन मैं जब स्कूल जा रहा था। गाँव के समीप ही रास्ते में एक रजबहे (छोटी नहर) की पुलिया पर बैठे आठ-दस लोगों के समूह में से दो-तीन लोगों ने एक साथ लगभग चिल्लाते हुए आवाज दी, 'अरे मास्साब! रुकिए। आपसे कुछ जरूरी बात करनी है।' मैं कुछ भी समझ नहीं पा रहा था क्योंकि इसके पहले गाँववालों ने कभी भी मुझे इस तरह से रोका-टोका नहीं था। पल भर में ही तमाम अनजाने सवाल मेरे दिमाग में तैर गए। मेरे रुकते ही लगभग सभी लोग बोल पड़े कि आप स्कूल में बच्चों से यह सब क्या करवा रहे हैं? अभी भी मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। मुझे चुपचाप खड़ा देख उनमें से एक वृद्ध बोला, 'वा जो आप बच्चों से सोहर, दादरा, गारी, फाग, चैती लिखवा रहे हऊ न, तो या कौन सी पढ़ाई आये। मास्साब! हमरे जमाना मा तो अस पढ़ाई न होते रहे। हम लरिकन का नाक-भली चार बात पढ़ैं खातिर इस्कूल भेजित है सोहर, गारी सिखैं का नाही।'

अब पूरा सन्दर्भ मेरे आँखों के सामने घूम गया और मैंने उनके साथ पूरा विवरण साझा किया। हुआ यह था कि एक विद्यालय में कक्षा तीन की हिंदी-पुस्तक 'कलरव' पढ़ाते हुए 'लोकगीत' शीर्षक नाम से एक पाठ मिला। उस पाठ में आठ-दस पंक्तियों में लोकगीत के बारे में चर्चा की गई थी और इस निर्देश और अपेक्षा के साथ पूरा पृष्ठ खाली छोड़ दिया गया था कि बच्चे अपने-अपने क्षेत्र के कोई एक-दो लोकगीत उसमें लिखें। बच्चों से बातचीत में यह बात भी निकली कि शिक्षकों ने न कभी इस पाठ को पढ़ाया और न ही इस पर कोई चर्चा की। उस दिन, दिन भर मैं विचार करता रहा कि यह पाठ क्यों रखा गया होगा। इसके क्या मायने हैं? क्या दूसरी कक्षाओं की हिंदी पुस्तकों में भी ऐसे पाठ होंगे? खोजने पर मैंने सभी कक्षाओं की पुस्तकों

में भी इसी प्रकार के लोक संस्कृति को उभारने वाले पाठ पाए। मैं किसी निर्णय पर नहीं पहुँच पा रहा था। मैंने सभी पाठों को एकत्र कर शिक्षकों के स्वप्रेरित नवाचारी समूह 'शैक्षिक संवाद मंच' की एक बैठक में विचार-विमर्श के लिए रखा। विचार-विमर्श से निकली बातों का सार हमारे सामने था कि भौतिकता की चकाचौंध में लोग अपनी ग्राम्य संस्कृति को न केवल भूलते जा रहे हैं बल्कि उसे दोयम दर्जे का भी मान रहे हैं। बढ़ते शहरीकरण ने गाँवों तक पैर पसार लिए हैं। बाजार ने गाँव के हर घर की चौखट पर दस्तक देकर हर व्यक्ति के हाथ पर लोभ-लालच का 'लालीपॉप' थमा दिया है। फलतः लोक में व्याप्त जिन गीत और कथा-कहानियों में लोकजीवन सांसे ले रहा था उसे समाज ने धीरे-धीरे बिसरा दिया है। फलतः फूहड़ और द्विअर्थी फिल्मी गीतों ने आहिस्ते-आहिस्ते घुसपैठ कर उसकी जगह ले ली और हमें पता भी नहीं चला तो हो सकता है कि भावी पीढ़ी को लोक संस्कृति से परिचित कराने और अपनी विरासत बचाने के लिए इन पाठों को पुस्तकों में जोड़ा गया हो और यदि ऐसा है तो हमें इस दिशा में काम करने की जरूरत है। साथियों ने सुझाव रखा कि क्यों न जूनियर विद्यालय की दीवार पत्रिका का अगला अंक लोकगीतों पर ही केंद्रित किया जाय। सभी को यह पसंद आया।

मैं उस विद्यालय गया और बच्चों के साथ इस सम्बन्ध में खुलकर पूरी बात की, उनका नज़रिया जाना। फिर आपसी निर्णय से दीवार पत्रिका के उस अंक को 'लोकगीत विशेषांक' के रूप में निकालने की योजना बनी। मैंने यह प्रश्न भी रखा कि हम इन लोकगीतों को लेकर क्यों काम कर रहे हैं? इनकी हमारे जीवन में क्या उपयोगिता हो सकती है? बच्चों ने अपनी-अपनी समझ से विचार रखे। यह भी तय हुआ कि प्रतिदिन के अनुभवों को अपनी-अपनी डायरी में भी दर्ज किया जाएगा। गीतों को केवल लिखना भर नहीं है बल्कि उनके गानें की लय, अर्थ और प्रसंग को भी समझना है। अंक पन्द्रह दिनों बाद निकलने वाला था और इन पन्द्रह दिनों में बच्चों ने उन गीतों को न केवल खोजने की कोशिश की बल्कि उनके महत्त्व को भी गहराई से समझा। मैंने अनुभव किया कि बच्चे अपनी लोक परम्परा से जुड़ रहे हैं। दीवार पत्रिका का यह अंक उनके लिए चुनौतीपूर्ण और रोचक था। सभी बच्चों के अनुभव इस मायने में लगभग एक जैसे थे कि उनकी बड़ी बहिनों, भाभियों और भाइयों को ऐसे लोकगीत नहीं आते। बच्चों ने उन गीतों को अपनी दादियों-नानियों से सुना-सीखा-लिखा। जब दीवार पत्रिका को अंतिम रूप देने की बारी आई तो हम सब साथ बैठे। मैंने उनके अनुभव जानने की कोशिश की। उनके अनुभवों में इन गीतों के संरक्षण की छटपटाहट थी और आँखों में लोकस्वर की पहिचान का सपना भी। केशकली ने कहा कि मैंने ये गीत कभी नहीं सीखना चाहा क्योंकि मैं इन्हें पिछड़े लोगों के गीत मानती रही हूँ। लेकिन अब मुझे एहसास हो रहा है कि मैं नासमझ थी। वहीं वंदना, सुमन, भारती एवं आरती का विचार है कि इन गीतों को सीखकर इस धारा को आगे बढ़ाएँगी। मनोज और पुष्पेन्द्र इस काम से उत्साहित होकर कहते हैं कि हमें तो खज़ाना ही मिल गया है। इन गीतों के प्रति हमारी सोच बदली है और एक नई समझ विकसित हुई है।

दीवार पत्रिका के उस अंक के लोकार्पण में अभिभावकों को बुलाया गया, उनमें बड़ी संख्या में महिलाएँ भी थीं। बच्चों को ही कार्यक्रम का संयोजन-संचालन करना था। दीवार पत्रिका के लोकार्पण के बाद बच्चों ने सिलसिलेवार पूरी बातें सामने रखीं, अपने अनुभव साझा किए। यह भी बताया कि यह विषय क्यों चुना गया और उनकी अब क्या समझ बनी है। वहाँ उपस्थित फाग की गायक मातादीन ने कहा कि हमारे इन गीतों में माटी की सोंधी खुशबू है। ये केवल बोल भर नहीं हैं इनमें हमारा अतीत विविध रूपों में सामने आता है। ये हमें समाज में जीना-रहना सिखाते हैं। हमने इनकी कद्र नहीं की और आज ये मर रहे हैं। वहीं मुन्नीलाल ने नयी पीढ़ी द्वारा इन गीतों को सीखने में रुचि न दिखाने पर पीड़ा व्यक्त करते हुए कहा कि हमारी पीढ़ी के बाद ये सब नष्ट हो जाएगा। तब उस पीढ़ी को एहसास होगा कि उन्होंने क्या खोया है। भूरा ने कहा कि हमारे घरों में विवाह के बाद बहू के साथ महिलाएँ मिल बैठ कर हँसती-गाती है। कई सालों से मैं गाँव में देख रही हूँ कि आने वाली बहुएँ ऐसे अवसरों पर फिल्मी गाने गाती हैं। यह हमें अच्छा लगता था कि हमारी बहुएँ नये चलन के गाने गा रही हैं और हमें गर्व महसूस होता था। लेकिन यह कभी न समझ पाई कि हम अपनी जड़ों से कटे जा रहे हैं। लड़कियाँ भी इन गीतों को नहीं सीखतीं। वे कहती हैं कि ये देहाती गाने हैं, इन्हे गाने में शर्म आती है। जब इन बच्चों ने लिखने के लिए हम लोगों से गीत सुनाने को कहा तो हमें एक बार तो गुस्सा आया। अब हम समझ गए कि हम कितने खोखले हैं। आज सबके सामने मैं कहती हूँ कि अब यह मेरी जिम्मेदारी होगी कि मैं बच्चों को ये गीत सिखाने का माहौल बनाऊँगी। इन बच्चों ने जो यह रास्ता दिखाया है। अब हमें सचेत हो जाना चाहिए नहीं तो हम अपनी पहिचान खो बैठेंगे।

दीवार पत्रिका का यह रूप मेरे लिए किसी आश्चर्य से कम नहीं था क्योंकि हमने कभी सोचा ही नहीं था कि यह बदलावों की आधार भूमि भी बन सकती है और तभी यह निर्णय भी लिया गया कि अब प्रत्येक अंक को गाँव के प्रमुख स्थानों पर कुछ समय के लिए लगाया जाएगा ताकि गाँव के लोग भी पढ़ सकें। अब गाँव के प्रमुख स्थानों पर हम बच्चों की जिम्मेदारी पर दीवार पत्रिका टांगते हैं। लोग न केवल पढ़ते हैं बल्कि अपनी प्रतिक्रिया भी देते हैं। गाँव के लोग प्रतीक्षा करते हैं कि नया अंक कब आने वाला है और उसमें क्या क्या होगा। मुझे लगता है इसे दीवार पत्रिका की एक बड़ी उपलब्धि के तौर पर हम देख सकते हैं।

79/18, शास्त्री नगर,
अतर्रा-210201, जिला-बांदा, उ.प्र.
मो: 9452085234

विज्ञान-शिक्षण

विज्ञान शिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु 'करके सीखो विधि'

❒ दीपक जोशी

सामान्य शब्दों में विज्ञान की व्याख्या की जाए तो इस प्रकार होगी 'विशिष्ट ज्ञान जो तर्कसंगत हो, विज्ञान है।' विज्ञान मुख्यतः 3WH सिद्धांत पर केन्द्रित ज्ञान है, जिसमें 1. W- What, 2. W- Where, 3. W- Why, 4. H-How अर्थात् क्या, कहाँ, क्यों और कैसे।

हमारे शरीर में अथवा हमारे आसपास चारों ओर पर्यावरण में घटित प्रत्येक क्रिया प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विज्ञान के सिद्धांतों से सम्बन्धित है। हम हमारे जीवन के क्षण मात्र को भी वैज्ञानिक सिद्धांतों से चाहकर भी पृथक नहीं कर पाएँगे। यह विज्ञान ही है जिसने मानव जीवन को इतना सरल, सहज व सुलभ बनाया है। ऐसे में विज्ञान शिक्षक का उत्तरदायित्व काफी महत्त्वपूर्ण है, विद्यार्थी और समाज दोनों के लिए। प्रकृति को विज्ञान की सर्वश्रेष्ठ शिक्षिका कहा जाए तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं। विश्व के प्रत्येक वैज्ञानिक ने प्रकृति से ही सीखकर विभिन्न वैज्ञानिक सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है चाहे वो न्यूटन, आर्केमिडिज या आइन्सटीन ही क्यों न हो। प्रकृति की घटनाओं के संदर्भ में सिद्धांत प्रतिपादित करना मात्र गृहकार्य ही तो है।

विज्ञान शिक्षक का उत्तरदायित्व मात्र पाठ्यक्रम पूर्णता तथा उसके अधिगम तक ही सीमित नहीं है बल्कि विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं कौशल का विकास करना भी है। क्योंकि किसी भी राष्ट्र की प्रगति उसके वैज्ञानिक व तकनीकी विकास से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी रहती है। जिसकी प्राप्ति हेतु हमें प्रकृति के अनुसरण की आवश्यकता है। प्रकृति अपने प्रत्येक व्याख्यान को प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा उदाहरण सहित सम्पूर्ण करती है अर्थात् 'करके सिखाती' है, जो हमारे लिए सहज, सरल व रोचकतापूर्ण होता है, हमें आकर्षित और प्रेरित करता है। प्रकृति की ही भाँति प्रत्येक विज्ञान शिक्षक अगर 'करके सीखो' 'Learning By Doing' शिक्षण विधि का उपयोग करे तो विज्ञान के क्षेत्र में सकारात्मक क्रांतिकारी परिवर्तन व परिणाम निश्चित है।

विज्ञान शिक्षण हेतु 'करके सीखो' विधि न केवल शिक्षण कार्य को सरल, सहज एवं रोचक बनाती है बल्कि विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा वैज्ञानिक कौशल दक्षता भी उत्पन्न करती है, जो कि किसी भी राष्ट्र के वैज्ञानिक व तकनीकी विकास की आधारशिला है। अगर हम चाहें तो अत्यन्त ही कम व्यय पर विज्ञान के कठिन से कठिन सिद्धांतों को 'Learning By Doing Method' द्वारा विद्यार्थियों को सहजता से सिखा सकते हैं।

करके सीखो विधि के सोपानः–

1. वैज्ञानिक प्रक्रिया का चयन।
2. वैज्ञानिक गतिविधि का परिचय एवं भूमिका का व्याख्यान।
3. कक्षा-कक्ष, प्रयोगशाला या प्रकृति में गतिविधि का अनुभव।
4. आवश्यक सावधानियों का उल्लेख।
5. शिक्षक एवं विद्यार्थियों द्वारा सामूहिक प्रायोगिक क्रियाविधि।
6. 3WH सिद्धांत की पूर्ति, तथ्यों व परिणामों का आदान-प्रदान।
7. गतिविधि से जुड़े वैज्ञानिक सिद्धांतों का सरलीकरण एवं व्यावहारिक अनुप्रयोग।
8. मूल्यांकन।
9. वैज्ञानिक तथ्यों का संग्रहण।

शिक्षक की भूमिकाः–

- मार्गदर्शक, प्रदर्शक।
- वैज्ञानिक।
- विद्यार्थियों से गतिविधि करवाना।
- प्रत्येक विद्यार्थी की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना।
- गतिविधि से सम्बन्धित वैज्ञानिक तथ्यों एवं सिद्धांतों का अधिगम सुनिश्चित करना।
- सम्बन्धित वैज्ञानिक सिद्धांतों का सरलीकरण व्यावहारिक अनुप्रयोग।
- सूक्ष्म निगरानी रखना।
- गतिविधि से सम्बन्धित सावधानियों का ध्यान रखना।
- मूल्यांकन।
- विद्यार्थियों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं कौशल का विकास।

महत्त्वः–

- वैज्ञानिक दृष्टिकोण की उत्पत्ति।
- सक्रिय भागीदारी।
- सरल, सहज एवं रोचक शिक्षण अधिगम।
- कौशल विकास।
- स्वस्थ शिक्षक-विद्यार्थी सम्बन्धों का विकास।
- विद्यार्थियों के पारस्परिक सामंजस्य में वृद्धि।
- वैज्ञानिक सिद्धांतों का सरलीकरण एवं उनका दैनिक जीवन में व्यावहारिक अनुप्रयोग।
- स्थायी अधिगम।
- मस्तिष्क सक्रियता में वृद्धि।

उदाहरणः–

- पुष्प की संरचना का प्राकृतिक अधिगम।
- प्रिज्म द्वारा प्रकाश का वर्ण विक्षेपण।
- अपवर्तन एवं परावर्तन के अनुप्रयोग।
- आर्केमिडिज एवं गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत से सम्बन्धित अनुप्रयोग।
- फलों व सब्जियों द्वारा विद्युत उत्पादन।
- गतिविधि द्वारा धातु एवं अधातु में अंतर।
- सम्पर्क एवं असम्पर्क बल में गतिविधि द्वारा अन्तर।
- दहन की प्रक्रिया।
- ऊर्जा रूपांतरण से सम्बन्धित अनुप्रयोग।
- गति के नियमों के अनुप्रयोग।
- विभिन्न रासायनिक अभिक्रियाओं का प्रदर्शन आदि।

व. अ. (विज्ञान)
रा.उ.मा.वि., डांडूसर, बीकानेर

बालपन

बालमन को तराशता है-बाल रंगमंच

❒ नारायण दास जीनगर

बच्चों को बेहतर नागरिक बनाना और बनाए रखना वर्तमान दौर में राष्ट्र का प्राथमिक कर्त्तव्य होना चाहिए। हर माता-पिता भी इसी उधेड़बुन में जीवन भर लगे रहते हैं कि हमारे बच्चे एक अच्छे व जिम्मेदार नागरिक के रूप में जाने जाएँ। शिक्षक व गुरु भी अपने अध्ययन काल में बच्चों को श्रेष्ठ नागरिक बनाने में अपने शिक्षण का प्रभावी तरीके से उपयोग करते देश भर के शिक्षण संस्थाओं में नजर आ जाएँगे। श्रेष्ठ व सभ्य नागरिक न केवल देश का स्वाभिमान बढ़ाता है बल्कि विदेशों में भी गौरव प्रदान करता है। इसलिए बच्चों को बेहतर नागरिक बनाकर ही हम देश व समाज को विकासशील व गौरवशाली पथ पर आगे बढ़ा सकते हैं।

आज के युवाओं की मनमर्जी, उच्छृंखलता, उद्दण्डता, अनैतिक क्रिया कलापों में संलिप्तता, नशाखोरी, मानसिक व शारीरिक व्यभिचार, हताशा, कुण्ठा आदि अनेक कारण यही दर्शाते हैं कि ये जब बच्चे रहें तब इनके बाल मन को बेहतर ढंग से तराशने में हमसे कोई चूक हो गई है। प्रयास जरूर हुए पर शायद इनको तराशते समय समाजहित व राष्ट्रहित को प्राथमिकता में सही ढंग से नहीं रख पाए। बालमन कहा जाता है कि कच्ची मिट्टी की तरह होता है उसे कुम्हार जैसा चाहे बना सकता है। एक बार बन जाने के बाद उसके मूल आधार में परिवर्तन करना संभव नहीं होता। उसको रंगपेंट आदि से सजाकर सुन्दर तो बनाया जा सकता है परन्तु उसके मूलाकार में परिवर्तन करना संभव नहीं है। इसीलिए गुजरात के शिक्षाविद् गिजुभाई बच्चों के मन को तवज्जो देते हुए जीवनभर बच्चों के हिमायती बनकर कार्य करते रहे। उनका मानना है आज के बच्चे ही भविष्य का भारत है। हर आज अपने भविष्य के लिए खुद जिम्मेदार है। कुछ वर्षों पूर्व बच्चों को बेहतर नागरिक बनाने के ध्येय से कभी पूरे भारतवर्ष में अनेकानेक संस्थाओं ने विविध विषयों के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में कार्य किया जिसमें रंगमंच का योगदान भी महत्त्वपूर्ण रहा। रंगमंच पर न केवल नाटक किया जाता है बल्कि साहित्य, गीत, संगीत, नृत्य एवं अभिनय आदि विधाओं का स्वत: ही समावेश हो जाता है। उस समय रंगमंच ने सक्रियता के साथ अलग-अलग प्रदेशों के छोटे-छोटे शहरों में अनेक विभिन्न क्षेत्रों में बाल रंगशालाएँ आयोजित की। बच्चों को नए-नए आयामों के माध्यम से उनके

बालमन को तराशने हेतु अभिनय करने के लिए प्रेरित किया। बंगाल, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान आदि राज्यों में हिन्दी व स्थानीय भाषाओं में नाट्यदलों द्वारा नियमित रूप से बाल नाटक खेले जाने लगे। इसका मुख्य कारण शायद यही रहा कि जाने माने लेखक, साहित्यकार तथा रंग निर्देशकों ने बच्चों के रंगमंच में रुचि वाले एवं बाल मानसिकता का समाज व राष्ट्रहित के अनुरूप श्रेष्ठ नागरिक बनाने के उद्देश्य से बाल नाटकों का लेखन कर राष्ट्र के नवसृजन में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। नि:संदेह अभिनय एक सशक्त माध्यम है जिससे बालमन को वरिष्ठ एवं बुद्धिजीवी वर्ग चाहे तो समाज व राष्ट्रहित में मोड़ सकता है। परन्तु इस विषय पर लगातार व नियमित रूप से तब तक कार्य करने की आवश्यकता रहती है जब तक बालमन युवा नहीं बन जाता। युवा बनने पर उसके परिणाम सामने आते हैं।

केवल रंगमंच तो बालमन को तराशने का माध्यम नहीं हैं अपितु केन्द्र व राज्य सरकारों के अनेक विभाग एवं मंत्रालय जैसे-शिक्षा विभाग, समाज कल्याण विभाग, मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय, कला एवं संस्कृति मंत्रालय, अकादमियाँ तथा कला एवं सृजन से जुड़े एन.जी.ओ. भी रंगमंच का उपयोग कर इस अत्यावश्यक विषय पर कार्य कर नई पीढ़ी को श्रेष्ठ नागरिक बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। कला एवं संस्कृति को समाजसेवा की श्रेणी में रखा जाता है, उसके संरक्षण एवं संवर्धन को बढ़ावा देने हेतु भामाशाहों के माध्यम से आयोजन किए जाते हैं। आज साहित्य, रंगमंच, निर्देशन, फिल्म, टीवी, सीरियल आदि व्यावसायिक हो गया है। रोजगार के साधन के रूप में स्थापित हो गया है। वर्तमान में कला एवं संस्कृति का कार्य निष्पादन 'लाभ-हानि' का मुख्याधार बन रहा है। जबकी पहले 'सही-गलत' ही मुख्याधार होता था। उनकी प्राथमिकता समाज व राष्ट्रहित रहती थी न कि व्यक्तिगत व समूह के आर्थिक लाभ के लिए। इसी कारण रंगमंच का तो अनेकानेक क्षेत्रों में विकास हुआ पर बालमन को तराशने का विषय गौण होता गया और आज वह हाशिए पर सिमट कर कहीं कौने में दबा बैठा है। कोई संभालने वाले संरक्षक का इन्तजार करते बालक की तरह अनाथ-सा। उसकी आशा भरी आँखें हमें अपने कृत्यों पर पुन: चिन्तन मनन करने को बाध्य करती है। शिक्षा के क्षेत्र में जब हम पढ़ते थे तो साप्ताहिक बाल सभाओं, राष्ट्रीय पर्वों पर आयोजित उत्सवों एवं वार्षिकोत्सवों आदि पर बाल-नाटकों की बहुतायत रहती थी। बच्चे महिनों पूर्व ही तय करते कि कौन से नाटक का मंचन आगामी आयोजन पर करना है और तैयारी में जुट जाते। शिक्षकवृन्द भी रुचि लेकर चयन करने से लेकर प्रदर्शन तक हर संभव मदद करते। कहीं-कहीं तो शिक्षक विद्यालय से बाहर अपने निर्देशक मित्रों को बुलवाकर सहयोग ले लेते। आज किसी के पास कला व संस्कृति के माध्यम से बालमन को टटोलने का समय नहीं है। कार्याधिकता भी एक कारण हो सकता है परन्तु किस विषय में रुचि लेना एवं किस विषय को प्राथमिकता देना हमारा अपना निर्णय होता है।

पाठ्यक्रमों में भी बालमन को तराशने हेतु ही विषय सामग्री का चयन शिक्षाविदों द्वारा किया जाता है। हिन्दी साहित्य में कहानी, कविता, गीत, दोहे, गजल, नाटक, एकांकी आदि विधाओं का समावेश विषयवस्तु को रोचक व मंचन योग्य समझते हुए ही शामिल किया जाता है परन्तु इनका सदुपयोग तभी हो सकता है जब शिक्षक उसे उसी रूप में शिक्षण के दौरान उपयोग ले। कला शिक्षक इन विषय वस्तुओं का उपयोग कर बालमन को तराशने में विद्यालय स्तर पर श्रेष्ठ प्रदर्शन कर सकता है।

संस्थाप्रधान रुचि लेकर समय समय पर शिक्षक गणों से वार्ता कर विषयवस्तु एवं माध्यमों का चयन कर उत्सव, पर्व, आयोजन में अथवा प्रतियोगिताओं के माध्यम से बालमन को तराशने में योगदान दे सकते हैं। मूल यही है कि बालमन को समझने एवं भविष्य के युवाओं की समाज एवं राष्ट्रहित में भूमिका को ध्यान में रखकर ही आज के शिक्षक, साहित्यकार, कलाकार, सृजन से जुड़े सृजनकर्मी तथा केन्द्र व राज्य सरकारें अपने कार्यव्यवहार को परिष्कृत करें और इस पर गम्भीरता के साथ अपना प्रदर्शन करें तो आने वाली युवापीढ़ी श्रेष्ठ एवं सभ्य नागरिक के रूप में प्रकट होगी । जिस पर देश व समाज को गर्व होगा। हमें संतोष मिलेगा कि हमने अपना कार्य राष्ट्रहित में व समाज हित में किया।

आज की युवा पीढ़ी को भी इसी मार्गदर्शन की आवश्यकता हैं क्योंकि नई बालपीढ़ी तो जब युवा बनेंगे तब सामने आएँगे, उनके लिए तो तराशने का कार्य लगातार किया ही जाना चाहिए पर इस युवा पीढ़ी के मन को भी जहाँ-जहाँ वे समाजविरोधी एवं राष्ट्रविरोधी गतिविधियों में लिप्त होकर क्रियाशील हैं ऐसे विषयों पर युवाओं को रंगमंच, चित्रकला, लोककला, भाषण, वाद-विवाद आदि प्रतियोगिताओं के माध्यम से राष्ट्रहितैषी निर्णय करने योग्य सार्थक व सकारात्मक प्रयासों की आवश्यकता है। आज भारत में सबसे अधिक युवा पीढ़ी है जो कल बुजूर्ग बनने वाली है। यदि येही युवा इसी तरह कार्यव्यवहार करेंगे तो नई पीढ़ी को तराशने के प्रति भी लापरवाह हो सकते हैं। फिर जब नई पीढ़ी युवा होगी तो वर्तमान युवापीढ़ी जो बुर्जूग हो जाएँगी तब उनकी देखभाल-सारसंभाल भी शायद नहीं कर पाए या इसमें कोई रुचि न ले। तब इस भारत की क्या दशा होगी । इसलिए हम सबको समय रहते युवा व बालमन को टटोलने एवं उसे समाज एवं राष्ट्रहित में कार्य करते रहने की अति आवश्यकता है। आशा है कि सभी पाठक इस दिशा में कार्य करने की मानसिकता बनाते हुए जितना हो सके जैसा हो सके या जहाँ हो सके अपनी ओर से पहल करेंगे। 'एकला चलो रे' के ध्येय वाक्य से शुरूआत करें लोग मिलते जाएँगे और कारवाँ बन जाएगा। फिलहाल हो सकता है आपसे अच्छा नहीं हो पा रहा हो इसलिए आप करने से दूर रह रहे हैं या करने से झिझक रहे हो। किसी ने कहा है कि- 'अच्छा कार्य करना अच्छी बात है, पर जब तक ऐसा करना नहीं आता तब वैसा ही कीजिए जैसा आपको आता है, पर कीजिए जरूर। एक दिन आप अवश्य ही अच्छा करने लगेंगे। तब नई पीढ़ी आपके सामने नतमस्तक होकर आभार व्यक्त करेंगी कि आपने हमें सही मार्ग दिखाया, सुअवसर दिए ताकि हम श्रेष्ठ नागरिक बन सकें। अत: नई पीढ़ी के तराशने के महत्त्वपूर्ण कार्य को समाजहित एवं राष्ट्रहित में करने हेतु सभी प्रयासरत सज्जनों को अग्रिम हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ अध्यापक
जीनगर मौहल्ला, गोपश्वर बस्ती,
गंगाशहर, बीकानेर (राज.)-334401
मो:9414142641

भगिनि निवेदिता की परदु:ख कातरता

❒ सांवलाराम नामा

विधवा एवं निराश्रित बालिकाओं की शिक्षा के लिए भगिनि निवेदिता के सतत प्रयासों के कारण ही वह अपनी छात्राओं के बीच बहुत लोकप्रिय थी। नीचे उद्धृत संस्मरण उनके परदु:ख कातरता के भाव को प्रगट करता है।

स्वामी विवेकानन्द ने भगिनि निवेदिता की कई विशेषताओं को देखकर उन्हें समाज सेवा में दीक्षित किया, उनमें प्रमुख थीं उनकी त्याग की भावना एवं नि:स्वार्थ सेवा। सामाजिक कार्यों में सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य था स्त्रियों को शिक्षित करना, समाज में उन्हें बराबर का स्थान दिलाना, उन्हें सामर्थ्यवान बनाना- यह विचार हमेशा स्वामी जी के मन में रहता। विदेश में जब वे एक बार बीमार पड़े तो उन्होंने भगिनि निवेदिता से कहा था-''कभी मत रुको, पहले स्त्रियाँ और फिर बाद में और लोग, इन शब्दों को हमेशा याद रखना।''

स्वामी जी के इसी कथन से प्रभावित होकर निवेदिता ने अपनी पाठशाला में पढ़ने आई बालिकाओं से मातृवत व्यवहार करतीं। उनकी पाठशाला में कई विधवा बालिकाएँ भी पढ़ने आती थीं। तत्कालीन हिन्दू समाज में विधवाओं को कई विधि निषेधों का पालन करना पड़ता था। इसलिए कई बार विधवा बालिकाएँ बिना भोजन किए पाठशाला में आ

जाती।

निवेदिता मुँह देखकर समझ जाती कि किस बालिका ने भोजन नहीं किया है। ऐसी बालिकाओं को भोजन कराने के लिए वे व्यग्र हो उठती। प्रफुल्ल देवी नामक एक अल्पवयस्क विधवा निवेदिता की ऐसी ही छात्रा थी। भगिनि निवेदिता प्रत्येक एकादशी को उसे अपने सामने बैठाकर मिठाई खिलाती, शरबत पिलाती और स्वयं इन चीजों को स्पर्श न करती। एक दिन स्कूल समाप्त होने पर उसे भोजन कराने की बात भूलकर वे वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र वसु के घर चली गई। अचानक उन्हें स्मरण हुआ कि आज तो एकादशी का दिन है और प्रफुल्ल को भोजन नहीं कराया। वे शीघ्र घर लौट आई तथा प्रफुल्ल को उसी समय अपने घर बुला लाई। उसे भोजन खिलाकर दु:ख व्यक्त करती हुई कहने लगी- ''मेरी बच्ची मैं आज तुम्हें भोजन कराना भूल गई थी, कैसा अन्याय! तुम्हें खाने को नहीं दिया और मैंने खुद खा लिया! कैसा अन्याय!''

भगिनि निवेदिता द्वारा शुरू की गई पाठशाला धनाभाव के कारण सुचारू रूप से चल नहीं पा रही थी। इस पाठशाला के लिए भगिनी को स्वामी जी के साथ यूरोप प्रवास जाना पड़ा। स्कूल की छोटी-छोटी बच्चियाँ भगिनि निवेदिता के साथ इतना घुल-मिल गई थी कि जब उन्हें पता चला कि उनकी दीदी उन्हें छोड़कर विदेश जा रही हैं तो उन्हें बड़ा ही दु:ख हुआ। भगिनि निवेदिता ने उन्हें यह आश्वासन दिया कि वे बहुत जल्द ही वापस आएगी।

से.नि. व्याख्याता
निकट बड़ा चौराहा, भीनमाल,
जालोर-343029

अद्भुत पहल

कन्यापूजन से बदलेगी सोच

❒ संदीप जोशी

सामान्य भारतीय जीवन में स्त्री को बहुत सम्मान से देखा जाता रहा है। यहाँ तक कहा गया कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता': अर्थात् जहाँ नारी का सम्मान और पूजन होता हैं वहाँ देवता भी वास करते हैं। कन्याओं को तो साक्षात् देवी स्वरूप मान कर उनकी पूजा होती थी।

कोई भी समाज अथवा कोई भी काल कभी भी सौ प्रतिशत आदर्श नहीं हो सकता है किंतु वैसा बनने का प्रयत्न करने में कोई बुराई नहीं है। सामने बड़ा लक्ष्य होता है तो उसके अनुरूप जीवन जीने की इच्छाएँ, वैसा वातावरण, वैसे संस्कार, उसी अनुरूप परंपराएँ धीरे धीरे जनमानस में विकास करती रहती हैं। अनादि काल से हमारी सांस्कृतिक परंपरा में ऐसी तमाम बातें रही हैं जिन्होंने मानव मन की विकृतियों को मनोवैज्ञानिक ढंग से ठीक करने का कार्य किया है। अधिकांश भारतीय पर्व एवं त्योंहार मानव के मन एवं प्रकृति से जुड़े हैं। मानव जीवन में जिन सोलह संस्कारों की कल्पना रखी गई ,उनका भी अपना वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक आधार है।

रक्षाबंधन, भाईदूज, कन्यापूजन, संयुक्त परिवार व्यवस्था, विवाह संस्कार, करवा चौथ, कजरी तीज यह सब परंपराएँ मानव के भावनात्मक पक्ष को मजबूती देने वाली परंपराएँ हैं।

भारतीय संस्कृति में कन्यापूजन हमारी सनातन परम्परा का एक अंग है। हजार बारह सौ वर्षों की गुलामी के कालखंड के दौरान भारतीय जनमानस संघर्षरत रहा। इसका प्रभाव हमारी विभिन्न सांस्कृतिक विरासत और परंपराओं पर भी पड़ा। काल के प्रवाह में कन्यापूजन की परम्परा कुछ शिथिल हुई, विज्ञापनों और टीवी चैनलों ने स्त्री का अलग ही स्वरूप दर्शाना शुरू किया, पश्चिमी देशों की आधुनिकता सिर चढ़ी तो परिणाम सब देख ही रहे हैं, भुगत भी रहे हैं....।

लगातार स्त्री शोषण-अत्याचार की घटनाएँ चार पाँच साल की बच्चियों तक से दुष्कर्म....। कभी कभार तो अत्यंत निकट के विश्वासपात्र भी.... परिवार के लोग भी इस प्रकार के घृणित अपराधों में लिप्त पाए गए हैं।

शासन से लेकर आमजन तक सब चिंतित हैं, डरे हुए से हैं, अज्ञात अनहोनी के खौफ में....। एक शिक्षक और एक अभिभावक के रूप में मुझे कन्यापूजन में इस विकृत मानसिकता का एक प्रभावी और असरकारी, कारगर समाधान मिला है। कहते हैं जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि।

व्यक्ति का देखने और सोचने का नज़रिया यदि ठीक होगा तो वह कोई भी गलत कार्य करने से पहले सौ बार सोचेगा। नारी के प्रति, लड़कियों के प्रति दृष्टि में सकारात्मक बदलाव लाया जाए तो इस प्रकार की घटनाओं पर एक सीमा तक नियंत्रण किया जा सकता है और उसका उपाय है विद्यालय और गली मोहल्लों में कन्यापूजन जैसे सार्वजनिक आयोजन।

मनुष्य और पशु में बड़ा अंतर भावनाओं और समझ का ही है। आदि काल से हम गाय को माँ मानते हैं तो वैसी ही पवित्र सोच गाय के प्रति जनसामान्य की बन गयी। ऐसे ही लगातार कन्यापूजन कार्यक्रमों के आयोजनों से ही स्त्री के प्रति, सहपाठी छात्राओं के प्रति भी अच्छी दृष्टि बनने लगेगी। तब ही 'मातृवत परदारेषु' चरितार्थ होगा, ये सब घटनाएँ रुकेगी। 'मातृवत परदारेषु' यदि सिद्धांत है तो कन्यापूजन उसका प्रायोगिक स्वरूप है। कन्यापूजन के इस एक कार्यक्रम से कई संदेश मिलेंगे-

बेटी बचाओ का संदेश .....

बेटी पढ़ाओ का संदेश ....

जातिगत भेदभाव से मुक्ति का संदेश....

सभी समुदाय की कन्याओं का पूजन, पूरा स्टाफ और सारे छात्र पूजक....

सामाजिक समरसता का संस्कार....

लिंग आधारित भेदभाव से मुक्त होने का संदेश....

विद्यालय में परिवार भाव का विकास करना....

सबसे महत्त्वपूर्ण कन्यापूजन से लड़कियों के प्रति दृष्टि बदलने का प्रयास

नारी के प्रति भोग्या की बजाय पूज्या के भाव का विकास करना और स्त्री के प्रति यह मातृभाव ही नारी सम्मान और सुरक्षा की 'गारंटी' है।

कुछ वर्ष पूर्व मैंने विद्यालयों में कन्यापूजन कार्यक्रम का आयोजन प्रारम्भ किया था। पहला कार्यक्रम स्वयं के विद्यालय से प्रारंभ करते हुए आगे बढ़ा। सोशल मीडिया के सहयोग से वर्ष 2015 में 100 से अधिक विद्यालयों में आयोजन के समाचार मिले। वर्ष 2016 में लगभग 400 विद्यालयों में आयोजन हुआ। पिछले वर्ष 2017 में राजस्थान के 18 जिलों में 500 से अधिक विद्यालयों में कन्यापूजन के कार्यक्रम संपन्न हुए, वह भी बिना किसी सरकारी आदेश और बिना किसी सरकारी बजट के। इन 500 स्कूलों में यदि औसतन 50 कन्याओं का भी पूजन हुआ हो तो यह संख्या 25000 हो जाती है, जिन लड़कियों का विद्यालय परिवार ने सम्मानपूर्वक परिवार भाव से पूजन किया है। प्रति विद्यालय यदि 10 शिक्षक ही मान लें तो लगभग 5000 शिक्षकों ने इस अनूठी संस्कार परंपरा में तन मन धन से अपना सहयोग किया है। राजस्थान के शिक्षकों की गौरवशाली परंपरा की सर्वत्र सकारात्मक चर्चा हुई है।

सभी विद्यालयों में स्टाफ के लोगों ने

परिवार भाव से बहुत उत्साह और उमंग के साथ इन कार्यक्रमों का आयोजन किया। विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रमों में जनप्रतिनिधियों, विभागीय अधिकारियों एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने भी सहभागिता की और इस अभियान की सराहना की। कन्यापूजन एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। जो छात्र कन्यापूजन करेंगे, वे छेड़छाड़ की हरकत तो नहीं करेंगे। अतः इस आलेख के माध्यम से आप सबसे निवेदन करते हैं कि सब अपने-अपने विद्यालयों में कन्यापूजन कार्यक्रम अवश्य करें।

आइए! जरा इस प्रक्रिया को समझें कि कन्यापूजन कैसे करते हैं? विद्यालय में पढ़ने वाली 9 वर्ष तक की आयु वाली कन्याओं का ही पूजन करना हैं अर्थात् पहली कक्षा से चौथी पाँचवी कक्षा की बालिकाओं का पूजन करना हैं। इन कक्षाओं की सब बालिकाओं का पूजन कोई जातिगत भेदभाव नहीं।

इन छोटी कन्याओं को माला पहनाएँ, तिलक करें, मौली बाँधें और मीठा मुँह करवाएँ।

संभव हो तो आरती भी कर लें, झिझक हो तो आरती भले न करें। बहुत स्थानों पर स्टाफ के लोगों ने और गाँव के वरिष्ठ लोगों ने इन छोटी कन्याओं के पैर भी थाली में रखकर धोए हैं। फिर उपस्थित सभी छात्र एवं स्टाफगण इन कन्याओं को प्रणाम करें।

अच्छा लगे तो चरण स्पर्श भी करें। उपहार स्वरूप पेन, पट्टी, पेन पैकेट, कॉपी, कलर, स्लेट, फल कुछ भी उपयोगी सामग्री दे सकते हैं। अनेक स्थानों पर स्टाफ साथियों ने मिलकर सब के लिए विशेष भोजन की व्यवस्था भी की। एक दो गुरुजन इस विषय पर विस्तार से संबोधन दे सकते हैं। बस इतना ही। न्यूनतम खर्च का और बेहतरीन परिणाम वाला एक छोटा-सा प्रयास। नवरात्रि में किसी भी कार्य दिवस में यह आयोजन किया जा सकता है। छेड़छाड़ और दुष्कर्म मन के विकार हैं। कन्यापूजन मन का संस्कार हैं। संस्कार से ही विकार दूर होंगे।

रक्षाबंधन और कन्यापूजन ये दो मनोवैज्ञानिक उपाय ही समाधान हैं -

कन्या भ्रूण हत्या का
छेड़खानी की घटनाओं का
बलात्कार-दुष्कर्म का
महिला अत्याचार का।

स्त्री के पूज्या भाव का जागरण होने से समाज की दृष्टि बदलेगी और इस प्रकार की घटनाओं पर रोक लगेगी। कन्यापूजन का कार्यक्रम केवल छात्रों को ही संस्कारित नहीं करता है वरन उन छोटी बच्चियों के मन में भी आत्मविश्वास का संचार करता है। पिछले वर्ष अपने विद्यालय में कार्यक्रम के बाद उन छोटी बालिकाओं से पूछा कि उन्हें कैसा लगा तो एक का उत्तर था कि ''हमें बड़ा गर्व लग रहा है कि विद्यालय के सब लोग और गाँव के प्रबुद्ध जन हमारा इतना सम्मान कर रहे हैं, हमारा पूजन कर रहे हैं, हमारा भी कोई विशेष अस्तित्व है, ऐसा हमारे मन में लगता है।'' बिना किसी भेदभाव के सब बालिकाओं का एक साथ होने वाला पूजन समाज को छुआछूत और जातिगत भेदभाव से भी बहुत दूर ले जाएगा और सामाजिक समरसता का एक विशेष संदेश भी देता है।

पूर्ण विश्वास रखिए कि समाज में व्यापक परिवर्तन का केंद्र विद्यालय ही बनेंगे। शिक्षण केवल वृत्ति नहीं है, एक दायित्व है। यह एक माध्यम है समाज और देश के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने का। इसलिए निरंतर कुछ-न-कुछ अच्छा करने का प्रयास जारी रहना ही चाहिए।

सामान्य अनुभव की बात यह भी है कि हम किसी भी कार्य अथवा विषय में जितना गहरा उतरते हैं, उससे संबंधित नए विचार, नए प्रयोग, नए आइडिया अपने आप हमारे सामने आते रहते हैं। आप इसमें आध्यात्मिकता के भाव भी देख सकते हैं। अपने काम में तल्लीन होना, अपने कार्य के साथ एकाकार होना, उसी में डूब जाना, प्रतिपल उसी का चिन्तन, उसी दिशा में बढ़ना, यहाँ तक कि उस काम का पर्याय बनना यह भी ईश्वर की अनुभूति करने जैसा है।

व्याख्याता
रा.आ.उ.मा.वि रेवत, जिला-जालोर
मो: 9414544197

एकाग्रता, साहस, परिश्रम, लगन और धैर्य सफलता प्राप्ति का मूलमंत्र है।

स्मृति-शेष

ऐसे थे - नीरज

❐ विनीत कुमार लोढ़ा

आँसू जब सम्मानित होंगे
मुझको याद किया जाएगा।
जहाँ प्रेम की चर्चा होगी
मेरा नाम लिया जाएगा।।

ऐसी कालजयी पंक्तियाँ लिखने वाले 'पद्म विभूषण' कवि गोपालदास 'नीरज' का जन्म उत्तर प्रदेश के इटावा जिले के पुरावली ग्राम में हुआ। 1941 में काव्य रचना शुरू करने वाले 'नीरज' को 'कारवाँ गुजर गया' 'गुबार देखते रहे' कविता से वैश्विक लोकप्रियता मिली। हिन्दी साहित्य के वे जाने-माने कवियों में से एक थे। 'बादलों से सलाह लेता हूँ', 'पुष्प पारिजात के', 'नीरज की दोहावली', 'नदी किनारे', 'आसावरी', 'मुक्तकी' इत्यादि उनकी प्रमुख कृतियाँ है। प्रेम के बड़े कवियों में से एक 'नीरज' को गीत ऋषि कहा गया है। उन्होंने हिन्दी फिल्मों के लिए सैकड़ों गीत लिखे, जिनमें लिखे जो खत तुझे... काल का पहिया घूमे रे.... जीवन की बगिया महकेगी... तथा मेरा नाम जोकर का प्रसिद्ध गाना कहता है जोकर सारा... जैसे गीत शामिल हैं। उन्होंने भोजपुरी, उर्दू में भी लेखन किया उन्होंने कई प्रसिद्ध गज़लें लिखीं, जिनमें तमाम उम्र में इक.... हम तेरी चाह में ए यार वहाँ तक पहुँचे.... जितना कम सामान रहेगा..... आदि ख्यातनाम है।

'नीरज' उत्तरप्रदेश भाषा संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष, मंगलायन व अलीगढ़ विश्वविद्यालय के कुलाधिपति भी रहे। नीरज को 'गीत सम्राट' 'भारती तिलक', कैफी आजमी अवार्ड, हिन्दी साहित्य भूषण जैसे सम्मान तथा तीन बार फिल्म फेयर अवार्ड से अलंकृत किया गया। 1991 में उन्हें पद्मश्री तथा 2007 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। 'नीरज' का देहावसान 19 जुलाई 2018 को हुआ। उनका जाना हिन्दी साहित्य की अपूरणीय क्षति है। 'नीरज' की लिखी ये पंक्तियाँ यहाँ स्मरणीय है।

हम तो मुसाफिर है कोई सफर हो हम तो गुजर जाएँगे ही
लेकिन लगाया है दाव हमने वो जीतकर आएँगे ही।।

निस्संदेह 'नीरज' हिन्दी साहित्य और फिल्म जगत की एक बहुत बड़ी हस्ती थे।

अध्यापक
रा.मा.वि. हाजीवास, कोटड़ी जिला-भीलवाड़ा

Brain storming

बुद्धिमंथन-एक शिक्षण विधि

❒ कृष्ण कुमार राजपुरोहित

विचारोत्तेजना तकनीक का सर्वप्रथम प्रयोग एलेक्स आसबोर्न ने सन् 1930 में किया था। इस विधि का प्रयोग समूह द्वारा किया जाता है जिसमें सृजनात्मक समस्या समाधानों की विस्तृत स्वीकार्यता तथा सहभागिता अपेक्षित होती है।

सृजनशीलता तथा नए विचारों का समावेश किसी संगठन, शिक्षण संस्थान की योजनाओं तथा उनके क्रियान्वयन के लिए पूर्व आवश्यक जरूरतें हैं। इनकी नित्य प्रतिदिन जीवन में भी आवश्यकता रहती है।

ब्रेन स्टॉर्मिंग, ब्रेन राइटिंग तथा ब्रेन मैपिंग अच्छे शुरूआती बिन्दु कहे जाते हैं, ये सभी मनुष्यों में छिपी हुई सृजनात्मक क्षमता को बाहर लाने का माध्यम है। आइए, बढ़ते है कब, कहाँ और किस तरह हम ब्रेन स्टॉर्मिंग के लिए सृजनात्मकता, समस्या समाधान व नए विचारों को प्राप्त कर सकते है।

आपस में संबंध स्थापित करना Association की क्षमता पर आधारित यह तकनीक है। शब्द Fun, humour friend, relaxation में एक व्यक्ति की क्षमता सीमित होती है। समूह से क्षमता कई गुना बढ़ जाती है।

यह सर्व विदित है कि मस्तिष्क जब सबसे अधिक दक्षता से कार्य करता है, जब बाँया-दायाँ गोलार्द्ध एक साथ कार्य करते है, यह अवस्था तब रहती है जब व्यक्ति शाँत, प्रसन्न, तनाव रहित, विश्वास व सहयोग के माहौल में सहज महसूस करे। ऐसा बहुत कम ही होता है, तनाव व व्यस्तता हमें ऐसा प्रायः रहने नहीं देती है।

अतः 'विचारोत्तेजना' की दूसरी प्राथमिक पूर्व आवश्यकता यह है कि सृजनात्मक अभिरुचि को सहयोग देने के लिए तथा व्यक्ति से सर्वश्रेष्ठ प्राप्त करने के लिए सहज वातावरण होना परम आवश्यक है।

विचारोत्तेजना सत्र का आयोजन

किसी सत्र या बैठक के कुछ महत्त्वपूर्ण नियम होते हैं जिनकी पालना करना भी 'विचारोत्तेजना' सत्र के अच्छे परिणाम प्राप्त हो, इस हेतु आवश्यक है। सत्र को तीन भागों में बाँटा गया है-

1. पूर्व तैयारी अवस्था
2. विचारोत्तेजना सत्र
3. मूल्यांकन व परिणाम का क्रियान्वयन

1. पूर्व तैयारी अवस्था : इसमें निम्न प्रश्नों का उत्तर देना

1. विचारात्तेजना सत्र का उद्देश्य अर्थात् विषय क्या है?
2. कितने संदर्भ व्यक्तियों को इसमें भाग लेना है?
3. कब और कहाँ सत्र का आयोजन होना है?

- विषय विशिष्ट होना चाहिए तथा सुझावों का बहाव रोकने वाला नहीं होना चाहिए।
- समस्या से जुड़े सीधे व्यक्तियों के स्थान पर विविध क्षेत्रों के व्यक्तियों की प्रतिभागिता बेहतर परिणाम दे सकती है, संख्या 6-12 अच्छी कही जा सकती है।
- सत्र का आयोजन साफ-सुथरे, शाँत, हवादार, समुचित प्रकाश वाले स्थल पर करना चाहिए 'U' आकार टेबल, फूलों के गुलदस्ते तथा मध्य में सबको दिखाई देने वाले क्लिप चार्ट के साथ होना चाहिए। (सूजी बहेल के अनुसार 'ईश्वर की साँसें फूलों की महक के रूप में प्रकृति में विचरती हैं।')

समय कभी भी रखा जा सकता है लेकिन दोपहर के भोजन के तुरन्त बाद नहीं, क्योंकि बायोरिदम्स के कारण इस समय मस्तिष्क की सक्रियता घट जाती है। मोबाइल स्विच ऑफ कर दिए जाएँ। कोई रुकावट नहीं होनी चाहिए, समय अवधि 20-30 मिनट उपयुक्त।

2. 'विचारोत्तेजना' सत्र का आरम्भ : Sense of humour के साथ करना बेहतर विकल्प है-

A. 'विचारोत्तेजना' सत्र के नियम

1. प्रस्तुत विचारों की आलोचना करना या निर्णय देना किसी भी हालत में नहीं होना चाहिए क्योंकि निर्णय सृजनात्मक प्रक्रिया को रोक देते है, तनाव उत्पन्न कर देते है, विचारों की उत्पत्ति को रोक देते है।
2. प्रतिभागियों को अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए। पद, प्रतिष्ठा, विचारों के प्रवाह को न रोके, यह सुनिश्चित किया जाए। प्रतिभाशाली व्यक्ति के भी सभी विचार हमेशा उपयोगी हो यह जरूरी नहीं है।
3. सभी विचारों को क्लिप चार्ट पर लिखने चाहिए तथा भरने पर दीवार पर लगाने चाहिए जिसमें प्रतिभागी उन्हें दिखा सके।
4. कुछ समय अवधि के बाद परिणाम का मूल्यांकन होना चाहिए।

B. 'विचारोत्तेजना' सत्र

1. सर्वप्रथम मॉड्रेटर को विषय व सत्र के उद्देश्यों की जानकारी देनी चाहिए।
2. सत्र के नियम की जानकारी सभी को देनी चाहिए।
3. Sense of Humour से सत्र का प्रारम्भ होना चाहिए, जिससे वातावरण खुशनुमा व Relaxation हो जाए।
4. सुझाव जो भी जैसे भी हो, उन्हें क्लिप चार्ट पर लिखना चाहिए।
5. मॉडरेटर को मददगार की तरह 'और क्या इससे आगे, बहुत अच्छा, धन्यवाद आदि बोलना चाहिए', लेकिन प्रतिभागियों को प्रश्न पूछकर प्रभावित नहीं करना चाहिए।
6. अंत में सभी को धन्यवाद देना होता है तथा परिणाम किस प्रकार निकाला जाएगा यह उन्हें बताना होता है।

3. मूल्यांकन व परिणाम क्रियान्वयन

मूल्यांकनकर्त्ता की टीम द्वारा चारों को अंक देकर सर्वश्रेष्ठ विचार या समस्या समाधान का चयन किया जा सकता है।

लाभ-

1. समाधान तुरन्त, आर्थिक दृष्टि से सस्ता।
2. परिणाम नए तथा अनअपेक्षित।
3. विवाद या समस्या की विस्तृत तस्वीर प्राप्त की जा सकती है।
4. समस्या के समाधान के लिए समूह उत्तरदायित्व।
5. निर्णय में सहभागिता

अन्य सृजनात्मक विद्याएँ ब्रेन राइटिंग तथा ब्रेन मैपिंग भी है।

ब्रेन स्टॉर्मिंग आरेखी चित्र की सहायता से

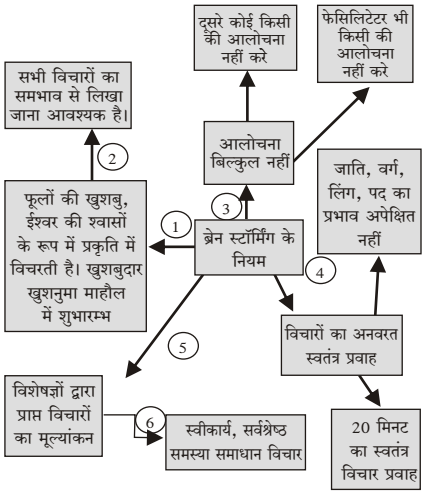

अगला कदम : बुद्धिमंथन (ब्रेनस्टॉर्मिंग) के पूरे बिन्दु पर कार्रवाई के लिए विचार विकसित करना है। एक बार बेहतरीन विचारों का चयन कर लेने के बाद आपको कार्यदल समूह विकसित करने की आवश्यकता होगी, ताकि ये विचारों को ऐसा करने के लिए अगले स्तर पर ले सकें।

1. समस्याओं और तार्किकता के माध्यम से सोचने के लिए कार्य समूह व्यवस्थित करें। प्रत्येक समूह के उस क्षेत्र में विशेष अनुभव वाले व्यक्तियों को शामिल करना चाहिए, जिसमें वे प्रबोधन कर रहे हैं। समूह के सदस्यों से, ब्रेनस्टॉर्मिंग के दौरान किए गए बिन्दु को वापस संदर्भित करने के लिए कहें।
2. स्पष्ट उद्देश्यों, लक्ष्य के साथ एक समय रेखा बनाएँ।
3. प्रत्येक बैठक के लिए निर्दिष्ट कार्यों पर चर्चा करें।

निष्कर्ष : ब्रेनस्टार्मिंग तकनीक संस्थान के कार्मिकों के समस्या समाधान तथा विकास को बढ़ाने के नए सृजनात्मक सुझाव देती है। नीतिगत निर्णय में सहभागिता, सदैव उपयोगी रहती है। शिक्षा जगत में नवाचारों के दौर में ब्रेनस्टॉर्मिंग भी प्रासंगिक है।

अति.जिला शिक्षा अधिकारी
123, वीर दुर्गादास नगर, नहर के पास, पाली
मो: 9460820590

मॉडल स्कूल हिण्डोली

जहाँ नवाचारों से गौरवान्वित है शिक्षा

❐ दिनेश विजयवर्गीय

सरकार गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के लिए स्कूलों में बच्चों के लिए कई संसाधन, सुविधाएँ और नवाचारों को प्रोत्साहन दे रही है। इसी के तहत प्रदेश में स्वामी विवेकानन्द मॉडल स्कूलों को संचालित किया जा रहा है। जिससे कि ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों को अन्य निजी विद्यालयों की तरह अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर अपनी प्रतिभा व स्तर सुधारने का सहज अवसर प्राप्त हो सके। आजकल कस्बाई व ग्रामीण अंचल के बच्चे भी इन स्कूलों से नवाचारों के माध्यम से दी जा रही शिक्षा से लाभान्वित हो रहे हैं।

नवाचारों के कारण आज बूँदी जिले के हिण्डोली मॉडल स्कूल ने अपनी अलग पहिचान बनाई है। खुले वातावरण, समुचित खेल मैदान एवं अनुकूल कक्षा-कक्षों से बना स्कूल, जिस व्यक्ति के कारण प्रदेश में अपना विशेष स्थान बनाया वह है संस्था प्रधान-डॉ. राजेन्द्र निर्मल एव उनकी टीम जो संस्था को आदर्श बनाने में प्रतिदिन लगभग दस घण्टे का समय संस्था को देते हैं।

प्रचार-प्रसार:- स्कूल से और नए छात्र-छात्राओं को जोड़ने के लिए कस्बे के बाजार में स्कूल बैण्ड व बैनर के साथ अध्ययन कर रहे बच्चों की रैली निकाली जाती है। रैली में बच्चे, हाउस वाइज अलग-अलग रंगों की ड्रेस पहने सम्मिलित होते है। प्रवेश गीत स्वयं प्रिंसिपल डॉ. राजेन्द्र निर्मल ने संस्था की विशेषताओं को लेकर बनाया। जिसे सभी स्कूलों में वाट्सअप एप के द्वारा भेजा गया।

नवाचारों का स्कूल:- प्रत्येक कमरे में सी.सी.टी.वी. कैमरे लगे हुए है। जिनसे कक्षा की शैक्षिक गतिविधियों पर नजर रखी जाती है। स्कूल एप, स्कूल की वेबसाइट, ई-अटेण्डेन्स, ई-लाइब्रेरी, स्मार्ट रूप में नेट से पढ़ाई। माह में एक बार विद्यार्थियों के साथ व्यक्तिगत काउंसलिंग तथा जरूरत अनुसार अवकाश में भी तीन घंटे अध्यापन कराया जाता है और नियमित अतिरिक्त कक्षाएँ भी लगाई जाती है।

फास्ट इन फिंगर फर्स्ट टीचिंग सॉफ्टवेयर:- बच्चों में स्पर्धा विकसित करने के लिए वायरलैस रिमोट क्वीज व टीचिंग सॉफ्ट वेयर तैयार किया गया है। इसके अन्तर्गत विद्यार्थियों को पढ़ाई गई पाठ्यसामग्री से संबंधित बहुविकल्पीय प्रश्न स्क्रीन पर आते हैं और उन्हें उसका उत्तर रिमोट से तुरंत देना होता है। इस सॉफ्टवेयर ने स्कूल के रोल मॉडल बनने की सार्थकता को सिद्ध कर दिया। सॉफ्टवेयर का उद्देश्य है पढ़ाई के क्षेत्र में बच्चों में प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा कर उन्हें विषय के प्रति गंभीर बनाना। इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया को प्रदेश से शैक्षिक टूर पर आए विभिन्न मॉडल स्कूल के प्रिंसिपलों ने देखा और इसे अपने स्कूल में भी संचालित करने का मानस बनाया।

छात्रों में गुणवत्ता के लिए टेस्ट प्रणाली:- छात्र-छात्राओं की शिक्षा में गुणवत्ता विकसित हो इसके लिए साप्ताहिक व यूनिट टेस्ट लिया जाता है। टेस्ट से पहले उन्हें पूछे गए प्रश्नों के बारे में बता दिया जाता है। मासिक टेस्ट में बच्चे स्वयं प्रश्न बनाते हैं तथा कॉपी में उसका उत्तर लिखते हैं और वे ही कॉपी को जाँचते है। फिर शिक्षक द्वारा चेक की जाती है बाद में यह कॉपियाँ फिर अभिभावकों को भी बताई जाती है।

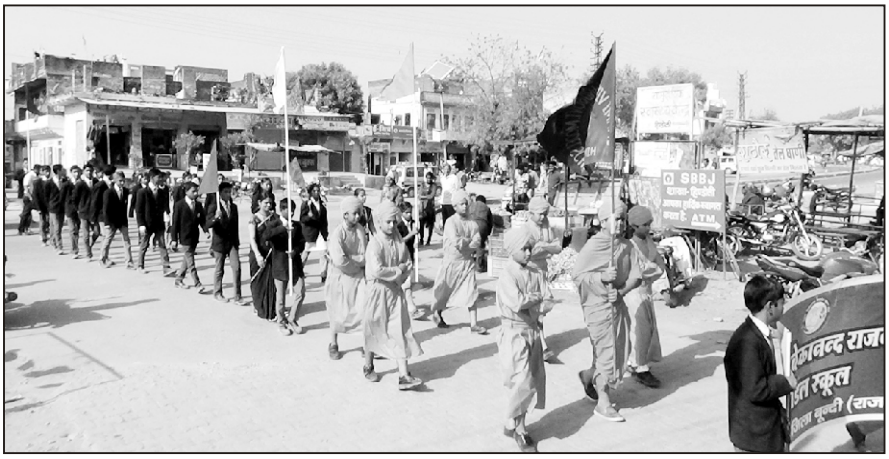

डिजिटल अटेन्डेंस व लाइब्रेरी:– दस बजे तक यदि कोई छात्र स्कूल नहीं आता तो पेरेन्ट्स को मेसेज जाता है। डिजिटल लाइब्रेरी में यह जानकारी उपलब्ध रहती है कि किस बच्चे ने कौन सी बुक 'इश्यु' करवाई, इसकी जानकारी भी अभिभावकों को मेसेज द्वारा दी जाती है।

शनिवार एक्टिविटी डे:– बच्चों में छिपी प्रतिभा को सामने लाने के लिए शिक्षा के साथ-साथ सह शैक्षिक गतिविधियाँ यथा- वाद-विवाद, आशुभाषण, निबंध लेखन, कविता, गीत की अभिव्यक्ति शनिवार को संचालित होती है। ये प्रतियोगिताएँ स्कूल के छात्र-छात्राओं को चार हाउस में बाँटकर कराई जाती है। वार्षिक उत्सव पर बेस्ट प्लेयर, स्मार्ट बॉय ऑफ द ईयर, अनुशासन, एक्सीलेन्ट, ऑलराउण्डर बेस्ट प्लेयर को पारितोषिक वितरित किए जाते हैं।

मा. शिक्षा मंत्री व प्रमुख शासन सचिव (स्कूल शिक्षा) भी नवाचारों से प्रभावित:– मा. शिक्षा राज्यमंत्री श्रीमान् वासुदेव देवनानी एवं प्रमुख शासन सचिव नरेश पाल गंगवार भी स्कूल का दौरा कर चुके हैं, वे भी नवाचारों, कार्यक्रमों एवं अनुशासन से प्रभावित हुए है। सचिव महोदय ने तो प्रदेश के दस जिलों के चौबीस प्रिंसिपलों को इस स्कूल की विजिट करवाई।

आर्थिक सहयोग मिला:– स्कूल में नवाचारों एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से प्रभावित होकर भामाशाह योजना में पाँच लाख रुपये तथा जिला कलेक्टर ने विवेकाधीन कोटे से साइकिल स्टैण्ड हेतु तीन लाख रुपये की राशि दी।

परीक्षा परिणाम में भी श्रेष्ठता:– हिण्डोली मॉडल स्कूल में केवल विज्ञान संकाय ही संचालित है। अभी कक्षा 6 से 12 तक 429 बच्चे अध्ययन कर रहे हैं। शिक्षा सत्र 2016-17 में कक्षा 10वीं की सीबीएसई. बोर्ड परीक्षा में परिणाम 100% रहा तथा सत्र 2017-18 में 89% रहा।

पर्यावरण के प्रति जागरूक:– स्वस्थ व स्वच्छ जीवन जीने के लिए तथा पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाने के लिए माह जुलाई 2018 में 35 मिनट में 500 पौधे रोपकर विद्यार्थियों ने नया कीर्तिमान बनाया। अब तक कुल 1100 पौधे परिसर में लगाए जा चुके हैं।

चुनौतियाँ:– प्रिंसिपल डॉ. राजेन्द्र निर्मल ने कहा कि अंग्रेजी मीडियम में अध्यापन करवाना, गुणवत्ता की दृष्टि से बालकों, अभिभावकों और सरकार की अपेक्षाओं पर खरा उतरना हमारे लिए चुनौती रहा, जिसे हमारी टीम ने कठोर मेहनत व लगन से स्वीकारा और गौरवपूर्ण शिक्षण करा प्रदेश में सम्मानजनक स्थान बनाया। आज किसी स्कूल में संसाधन भले ही न हो पर इसके बावजूद भी यदि संस्थाप्रधान एवं उसकी अध्यापन कराने वाली टीम कक्षा-कक्ष में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण प्राप्त करने की प्रतीक्षा में बैठे बच्चों के प्रति समर्पित है तो वहाँ परीक्षा परिणाम तो बेहतर रहते हैं, साथ ही अधिकारियों एवं अभिभावकों की अपेक्षाओं पर भी खरा उतरने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ते और बच्चे भी जीवन भर ऐसे गुरुओं को सदा यादों में बनाए रखते हैं।

मार्ग-4, सी-215, रजत कॉलोनी
बून्दी-323001 (राज.)
मो: 09413128514

आवश्यक सूचना

● 'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा- नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी. नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ।

● कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अतः अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है।

● कतिपय रचनाकार अपने एकाधिक बैंक खाता लिखकर भिजवा देते हैं और उक्त खाते का उपयोग समय-समय पर नहीं करने के कारण वह बंद भी हो चुका होता है। परिणामस्वरूप उक्त मानदेय खाते में जमा नहीं हो पाता। जिसकी शिकायत प्राप्त होती है। किसी रचनाकार के एकाधिक खाते हैं तो रचनाकार अपने SBI बैंक खाते को प्राथमिकता देकर अद्यतन व्यक्तिगत जानकारी उपर्युक्तानुसार प्रत्येक रचना के साथ अलग-अलग संलग्न करें।

-वरिष्ठ संपादक

पुस्तक समीक्षा

अन्तस री पीड़

लेखक : सुधीन्द्र शर्मा 'सुधी' **प्रकाशक :** एकता प्रकाशन, चूरू **संस्करण :** 2018 **पृष्ठ :** 100 **मूल्य :** ₹ 125

आदमी और कविता का मेल आदमी के अस्तित्व के साथ ही हो गया। कविता आदमी के भावों के साथ सम्बन्ध रखती है और भाव शाश्वत होते हैं। सुख, दु:ख, हर्ष, शोक, करुणा, दया, क्रोध, उत्साह, प्रेम, घृणा आदि समस्त भाव कविता के लिए उर्वर भूमि का काम करते हैं। इन भावों से प्रेरित हो कर व्यक्ति गाता है, नाचता है, अभिनय करता है, लिखता है या यूं कहें कि जीवन जीने के विविध रंग बिखेरता है। सुधीन्द्र शर्मा 'सुधी' की राजस्थानी काव्य पुस्तक 'अन्तस री पीड़' भी इसी क्रम में अन्तर के भावों को शब्दों का जामा पहनाते हुए लिखित एक सुन्दर काव्यकृति है। इस पुस्तक में कवि की कुल 56 कविताओं का संकलन किया गया है, जिनमें कवि की अनुभूतियाँ कविता के बहाने जीवनानुभव का रस बाँटती हुई सी प्रतीत होती हैं, जिनमें लोक का प्रतिबिम्ब अनुभव किया जा सकता है। इस संग्रह की कविताओं में कवि, कवि कम और एक चिन्तक अधिक नज़र आता है। लगभग हर कविता एक शाश्वत जीवन-मूल्य का अनुभव करवाती है।

संग्रह की पहली कविता 'संवेदणा' के माध्यम से कवि ने एक संदेश देना चाहा है कि संसार नश्वर है इसके बावजूद आदमी आपाधापी में फँसकर कितना चिन्तित हो रहा है।

'सार' कविता में जीवन का सार समझाते हुए कवि कहना चाहता है कि जीवन एक लम्बी यात्रा है। इस यात्रा में मनुष्य को पूरी हिम्मत और उत्साह के साथ आगे बढ़ते हुए अपना जीवन-ध्येय पाने के बारे में विचार करना चाहिए, परन्तु आज मनुष्य ने मन के विकारों को अग्रसर करते हुए मोह-ममता आदि के स्वयं-रचित बन्धन तैयार कर लिए हैं और अपने जीवन-ध्येय को भूलता जा रहा है।

कवि की वाणी में-मिनख रा बणयोड़ा/रिस्ता-नातां री/भूलाण माथै/खू जाव रै/जीवण रो धेय।आप रै अहंकार री/ठौड़ ढूढतो मिनख/आकळ-बाकळ हुय जावै। ओ ई जीवण है /जीवण रो सार है। कुदरत री नियति है।

मनुष्य अपनी मनुष्यता को बनाये रखे, मनुष्यता स्वरूप न बिगड़े इस सन्देश को कवि अपनी कविता 'सार' के माध्यम से व्यक्त करते हुए कहता है कि-भंवर सूं जीवण नै/बचावणौ-सुवारणो ई/सोच रो फुटरापो है,/समरसता अर/आच्छी सोच ई जीवण है। तो जाणूं हूँ कविता में जीवन आखिर जीवन है, यह बचाये रखने योग्य है, की बात करते हुए कवि ने जीवन-यात्रा से घबराकर बीच में ही समाप्त करने वालों को एक जीवन-बोध करवाने का प्रयत्न किया है।

इत्तीकांई उतांवळ करी थे/रिस्तां तोड़ण री/माटी रा काचा रमतिया फोड़ण री/जगत रै रंगां मांय/ रंगणै री फुरसत ई नीं दी,/जीवण नै समझण री/जुगत ई नीं मिली।

'अपणायत' कविता में कवि ने आज की सामाजिक विद्रूपता पर से पर्दा हटाते हुए गिरगिट की तरह रंग बदलने वाले लोगों पर व्यंग्य किया है। अन्तस री पीड़, अन्धारो, बाळपण और अनजाणी पीड़ कविताओं के माध्यम से कवि तेजी से खो रहे अपनेपन के भाव को ढूँढ़ने की कोशिश कर रहा है और समाज के सामने इसके अस्तित्व के प्रश्न को उठा रहा है-

कुण सुणै अन्तस री पीड़?/ कुण देवै सहारो?/ म्हारै तूटेड़ै मन अर बिस्वास नै/आस बंधावै कुण?/ भटकूं हूँ अपणायत पावण तांई।

नैनो बालपण और सुपना स्यूं खाली आँख्यां कविताओं में कवि युगबोध करवा रहा है कि किस प्रकार एक लाचार और बेबस इन्सान अपनी जीवन-यात्रा की गाड़ी पार लगाता है। आदमी जब अपनी जीवन-यात्रा प्रारम्भ करता है तो आशा, विश्वास और उत्साह के भावों के साथ आगे बढ़ने का प्रयत्न करता है, किन्तु मुसीबतें उसके समक्ष पहाड़ बनकर आड़े आ जाती हैं तो वह उनसे हार मान लेता है और जीवन-यात्रा को ही समाप्त कर बैठता है या फिर उन समस्याओं से मुकाबला करते हुए कोई रास्ता निकाल लेता है।

व्यक्ति के जीवन में विरह के क्षण यदा-कदा आ ही जाते हैं। 'बिरह अगण' कविता में कवि ने 'विरहकाल' का परम्परागत वर्णन किया है तो 'बाळपण' कविता में गरीबी से लाचार बच्चे के बहाने आज समाज की बालश्रम की और बिखरते बचपन की चिन्ता उजागर की है। 'फैरूं भी है मासूम' कविता जन-नायकों के स्वार्थपूर्ण रवैये को उद्घाटित कर रही है तो 'थे ई बताओ कांई करूं' कविता के माध्यम से कवि ने छोटी-छोटी समस्याओं से चौफेर घिरे व्यक्ति की मन: दशा को व्यक्त किया है

संसार धरातल है और कविता कल्पना। कवि अपनी कल्पना के माध्यम से यथार्थ को व्यक्त करते हुए आदर्श की परिकल्पना करता है और अपने इच्छित सुन्दर संसार को पा लेना चाहता है। यही उसका मंतव्य है, यही कविकर्म है-कल्पना लोक मांय गोतो लगाऊँ/धरातल री बात मांडतो जाऊं/अेड़ी कविता/अेड़ा गीत/अेड़ी गजल यारो।

कन्या भ्रूण-हत्या आज के सन्दर्भ में एक विकट सामाजिक समस्या है। कवि ने अपनी कविता आछौ है वा अजलमी रही कविता के माध्यम से इस सामाजिक समस्या की तरफ हमारा ध्यान आकृष्ट किया है-आछौ है वा अजळमी रही/जै वा जलमी होती तो/कोसती रेंवती मन ही मन/भाग लिखणै वाळै नै।

आदमी का स्वार्थ किस तरह से आदमी की आदमीयत पर हावी हो रहा है, कवि ने 'अमरबेल' कविता के माध्यम से इन भावों को इस प्रकार से व्यक्त करने का सार्थक प्रयत्न किया है -आज रो मिनख/अमरबेल री तरियां है/दूजै रो सहारो लेय उठै तो है पण/सहारो देवणियां पर छा जाणै री मनस्या राखै। खुद रै जीवण माय उजास चावै,/खुद तो औरां री मैणत पर कब्जो चावै/अर अमरबेल री तरियां छा ज्याणै री/मनस्या राखै।

व्यक्ति जब क्षुद्र मानसिकताओं से ऊपर उठता है तब उसे अपने भीतर के ग्लानि, क्षोभ, लज्जा, घृणा आदि भावों से गुजरना पड़ता है। आत्मबोध होने से ही आत्मा निर्मल होती है। 'ओळमो' कविता के माध्यम से कवि शर्मा ने इन्हीं भावों को व्यक्त करने का प्रयत्न किया है-

म्हांरी आतमा ओळमो देवै है/पिंजर री दुनियां मांय आणै उपज्या। पिंजर मांय दम घुटै म्हांरो। मानखै रो जीवण अर आ री दुनियां/कतरी घिनौनी है।/पिंजर री दुनियां आपणां रो लोही बहा/आपणां नै चकमो देंवतां कतरा खुस हुवै।

कवि सुधीन्द्र शर्मा ' सुधी' के अन्तस री पीड़ काव्य संग्रह की कविताओं में कवि ने अपने जीवनानुभवों को कवितारूपी मनकों की माला में पिरोने का काम किया है। ये अनुभव इस संग्रह के कवि के नहीं हैं, बल्कि हर व्यक्ति के जीवन में ये सब जब-तब घटित होते रहे हैं। साहित्यकार इन अनुभवों की डगर पर चलते हुए समाज के लिए अभीष्ट पाने का प्रयास करता रहता है। अपेक्षित है कि हम इन अनुभवों से जीवन की समरसता का पाठ पढ़ें तथा जीवन की सार्थकता की दिशा में आगे बढ़ें। कवि इनसे सीखने-सिखाने का प्रयास कर रहा है। इस दृष्टि से सुधीन्द्र शर्मा ' सुधी' का अन्तस री पीड़ काव्य संग्रह एक उल्लेखनीय और पठनीय संग्रह है और कविकर्म सराहनीय है। श्रोताओं और पाठकों को ये कविताएँ पसन्द आयेगी। एकता प्रकाशन, चूरू से प्रकाशित पुस्तक की छपाई आकर्षक है एवं बाहरी कलेवर भी सुन्दर व विषयवस्तु के अनुकूल है।

समीक्षक : **विश्वनाथ भाटी**
प्रधानाचार्य,
राजकीय आदर्श उ.मा.वि., कोहिणा (चूरू)
पिन-331304 **मो. 9413888209**

सनातन रा सिखर
वंद्य आचार्य शंकर

लेखक : ब्र. ना. कौशिक **प्रकाशक** : सौर चेतना एवं ऊर्जा विकास शोध संस्थान, हनुमानगढ़ जंक्शन (राज.) **पृष्ठ संख्या** : 132 **राशि** : ₹ 301

मातृभाषा राजस्थानी में लिखित आचार्य शंकर का यह प्रथम जीवन परिचय है। राजस्थान के सूर्योपासकों की गौरवमयी संस्था 'सौर चेतना एवं ऊर्जा विज्ञान शोध संस्थान (जोधपुर, हनुमानगढ़ एवं बीकानेर जिलों द्वारा सन् 1961 में संस्थापित) ने इसके प्रकाशन का श्रेय प्राप्त किया है।

जगद्गुरु शंकराचार्य-विषयक यह ग्रंथ बड़े परिश्रम से लिखा गया है। इसमें शंकराचार्य के जन्म से लेकर उनके महाप्रस्थान तक की जीवन यात्रा की प्रमुख घटनाओं को बड़े ही रोचक ढंग से, साथ ही विद्वतापूर्वक रेखांकित किया गया है। पुस्तक 51 अध्यायों में विभक्त है। यदि इन अध्यायों के शीर्षकों को ही सूचीबद्ध किया जाय तो शंकर का चरित पूरा-का-पूरा आँखों के सामने आ जाता है। जैसे- आचार्य शंकर का जन्म और शिक्षा। इस अध्याय में केरल के कालड़ी गाँव में नामपूद्रि ब्राह्मण परिवार के पिता शिवगुरु और माता विशिष्टा देवी के यहाँ शंकराचार्य का जन्म होना बतलाया गया है। लेखक ने 'पूत रा पग पालणै ई पिछाणीजै' कहते हुए उनके चमत्कार भरे चरित को बाल-वय से ही बतलाना प्रारंभ किया है- भिक्षा में आंवला देने वाले ब्राह्मण के घर में सोने के आंवलों की वर्षा होना और आलवाई नदी का प्रवाह मोड़कर अपने घर के पास से निकालना आदि। तीन वर्ष की आयु से विद्याध्ययन और अपूर्व प्रतिभा का प्रकाश दिखाना। केरल-नरेश राजशेखर का शंकर से मिलकर उनके प्रति श्रद्धावान होना। संन्यास का संकल्प लेना। 'माँ अर ममता बूढ़ी कोनी हुवै'- माँ वृद्धा होकर अपने पुत्र को बचाने के लिए नदी में कूद गई, शंकर की इच्छा पूर्ण हुई- माँ से संन्यास की आज्ञा मिल गई। अद्वैत की आभा से पहला परिचय। गुरु योगी गोविंदपाद द्वारा आठ वर्ष की आयु के शिष्य शंकर को हठयोग, राजयोग, ज्ञानयोग, निदिध्यासन, ध्यान-धारणा समाधि का सम्यक् ज्ञान कर देना। महायोगी गोविंदपाद का ब्रह्मलीन होना। शंकर की वाराणसी यात्रा, जिसमें विद्वान ब्राह्मणों और संन्यासियों का साथ होना। वहाँ वैदिक संस्कृति और अन्यान्य धार्मिक विचारों का संगम रहा। शैव, पाशुपत, सौर, शक्ति, जैन, बौद्ध तांत्रिकों आदि के साथ वाद-विवाद में शंकर अद्वैत ब्रह्म की प्रतिष्ठा बड़ी शांत और गंभीर वाणी में प्रत्युत्तर देकर कर देते। शंकर के जीवन में ब्रह्मानुभूति और ब्रह्मदृष्टि के दृष्टांत घटित हुए-सर्वं ब्रह्ममयं जगत्।

चोल देश का विद्वान ब्राह्मण सनंदन आचार्य शंकर का शिष्य बन गया। आगे चलकर शंकर ने उसका नाम रखा 'पद्मपाद'। बदरिकाश्रम की यात्रा भी शंकर ने शिष्यों और श्रद्धालुओं के साथ की। बदरी-धाम के समीप व्यास-तीर्थ क्षेत्र में आचार्य शंकर ने ब्रह्मसूत्र, उपनिषद् श्रीमद्भगवद्गीता, विष्णुसहस्रनाम आदि सोलह विख्यात ग्रंथों के भाष्य लिखे। तत्पश्चात् उत्तराखंड की यात्रा। केदार और गंगोत्री क्षेत्र की दुर्गम यात्रा। सोलह वर्ष की आयु पूर्ण होते देख वेद व्यास कृष्णद्वैपायन ने प्रकट होकर शंकर की सोलह वर्ष आयु और बढ़ा दी ताकि वे लोकोपकारी और लोकोत्तर काम और अधिक कर सकें।

आगे चलकर कर्मकांडी कुमारिल भट्ट को शास्त्रार्थ में पराजित करने के लिए उसकी खोज की। उसने अपने शिष्य मंडन मिश्र से शास्त्रार्थ करने को कहा। मंडन मिश्र की महिष्मती नगरी पहुँचे। वहाँ शंकर और मंडन मिश्र का शास्त्रार्थ हुआ। मंडन मिश्र का दो-टूक सिद्धांत था-'ईश्वरो नास्ति।' विद्वानों की सभा में मंडन मिश्र की विदुषी पत्नी उभय भारती (सरस्वती) को ही निर्णायक बनाया गया। भारती दोनों विद्वानों के गले में पुष्पमाला पहना देती है- जिसकी माला गले में मुरझा जाएगी, वह पराजित माना जाएगा। सतरह दिन तक शास्त्रार्थ चलता रहा। पूरा वातावरण ज्ञानमय रहा। अठारहवें दिन मंडन मिश्र ने हार स्वीकार कर ली। इस शास्त्रार्थ का ग्रंथ में बड़ा रोचक विवरण दिया गया है। मंडन मिश्र ने आचार्य शंकर के पास संन्यास ग्रहण किया उसका नाम सुरेश्वराचार्य रखा गया। मंडन मिश्र के सनातन में संन्यास ग्रहण करने की बात और सरस्वती उभय भारती के साथ शास्त्रार्थ की सफलता का संदेश देश में सूर्य के प्रकाश की भाँति फैल गया। हिंदू धर्म की प्रतिष्ठा का बोलबाला आरंभ हुआ।

उधर श्रीशैल में कापालिक राजा क्रकच ने आचार्य शंकर की दिग्विजया से अपने प्रभाव को क्षीण होता देखकर उनकी हत्या का षड़यंत्र रचा। किन्तु शंकर के शिष्य पद्मपाद में नरसिंह प्रभु आविष्ट हो गए और कापालिकों को भगाकर शंकर को बचा लिया।

तत्पश्चात् आचार्य शंकर अपनी शिष्यमंडली के साथ गोकर्ण क्षेत्र, जो शिवजी का प्रिय धाम माना जाता है वहाँ पहुँचे। वहाँ (कर्नाटक) तीन दिन तक गोकर्णेश्वर की स्तुति-पूजा और स्तवन-गान चला। श्री वेली और शृंगेरी क्षेत्रों की ओर प्रस्थान। शृंगेरी में शास्त्र विचार के समय एक दिन अचानक आचार्य शंकर को आभास हुआ कि उनकी माताजी के महाप्रस्थान का समय हो गया है। वे वहाँ से

केरल रवाना हो गए। माँ के पास जाकर उन्हें शंख-चक्र-गदा-पद्मधारी विष्णु का स्तवन-गान सुनाया। अचानक हुए विशेष प्रकाश में माँ विशिष्टा को अपने इष्टदेव के दर्शन हुए। बेटे को आशीर्वाद देकर वे विमान से विष्णुलोक चली गई। माँ की अंतिम इच्छा का मान करते हुए संन्यासी होते हुए भी (लोकरीति से हटकर) स्वयं के हाथों उसका अंतिम-संस्कार विधिपूर्वक किया। आगे चलकर 'आचार्य शंकर रो जीवन-'ऊजब अध्याय' शीर्षक के अंतर्गत लेखक ने अपने भावोद्गारों को इन शब्दों में बाँधा है-

'जन-मानस रै मन में दंड-कमंडल लिया अेक तेजस्वी यति री आभा- शांत भांव कन्याकुमारी सूं कश्मीर, अर पूरब सूं पिछम-देश रै च्यारूं कूणां में च्यार धामां री थरपना कोई सोरी कोनी ही। सगळी अवस्थावां में तटस्थ अर निर्विकार शांत भाव सूं रैयनै सनातन वैदिक धर्म री ठावी प्रतिष्ठा करी। 'अद्वैत ब्रह्म आत्म विज्ञान' रो प्रचार आचार्य री काळजयी लोक कल्याणी योजना है। मानव मात्र में कर्म री प्रेरणा जगावणी, घूम-घूम'र भरम री अवस्था सूं जन-मन नै निजात दिरावण में आचार्य श्री आपरै शिष्यां सागै बत्तीस बरस ही चालता रैया।'

कुछ-कुछ यही बात कहता है मराठी का 'भारतीय संस्कृति कोश (नौवां खंड)-भाष्यलेखन, प्रचार, दिग्विजय, मठ-स्थापना जैसे महत्कार्य कुल इकतीस वर्षों की आयु में पूर्ण कर लिए। उन्हें बत्तीसवां वर्ष लग गया। यह वर्ष अपने निर्याण का है, यह उन्हें ज्ञात था। उस दृष्टि से उन्होंने फिर सब कुछ यथावत छोड़कर पुनः हिमालय की राह पकड़ ली। वे बदरी-केदार क्षेत्र में गए। वहीं से मोख मार्ग प्रारंभ होता है। पांडव उसी मार्ग से स्वर्गारोहण के लिए निकले थे। देहत्याग के लिए केदारक्षेत्र की भूमि पवित्र भूमि थी। उसमें केदारनाथ का सान्निध्य भी मिल गया था। आचार्य ने उस क्षेत्र में जाकर विश्रांति ली। उन्होंने योगधारणा प्रारंभ की। धीरे-धीरे वे निर्विकल्प समाधि में प्रविष्ट हो गये। और फिर वैशाख शुक्ल एकादशी के दिन इस तेजोधाम यतिश्रेष्ठ की प्राणज्योति परब्रह्म में लीन हो गई। मूल पुस्तक के अंतिम 12 पृष्ठ 112 की अंतिम पंक्तियों में लेखकीय कलम उपसंहार रूप में लिखती है- 'विश्व-इतिहास में आचार्य श्री कृतित्व अर व्यक्तित्व री गाथा पंचमहाभूतों में जाग्रत है-आठ बरस री उमर सूं बत्तीस बरस री उमर तांई आर्यावर्त री शिष्या सागै पैदल जातरा बिना रातावां रो सहारो लियो। चौबीस बरस तक अर हजारां शास्त्रार्थ, सईकडूँ भाष्य अर आशु राजा री अंतहीण गाथा आज सूं डेढ़ हजार साल पैली मांय सूं विश्व में महकी म्हें प्रणाम ही कर सकां हा समय साधना में जिकै रो घोष है-'अहं ब्रह्माऽस्मि।'

पुस्तक का कथ्य-भवि भरित है। जो भी नहीं गई हैं वे गवेषणापूर्ण प्रामाणिक और असंदिग्ध है एवं उनमें से प्रायःपूर्व प्रचलित भी है। कृति की भाषा की बात करें तो राजस्थानी भाषा के मिठास ने उसमें चार चाँद लगा दिए हैं। विषय की तासीर को देखते हुए भाषा में पंड़ितापन आ गया है जो स्वाभाविक है। भाषा टकसालीपन लिए हुए तो है पर आंचलिकता भी यंत्रवत् झलक रही है। संस्कृत शब्दों के तत्सम रूप ही लिए जाते तो भाषा प्रवाह में अटकाव नहीं होता। वैसे कुछ भूलें प्रूफ रीडिंग की भी हो सकती है-'संन्यास' शब्द सर्वत्र 'सन्यास' छपा है। अस्तु।

राजस्थानी-जगत में प्रस्तुत पुस्तक का आगमन स्वागत योग्य है। आचार्य शंकर-विषयक साहित्य की यह कृति प्रथम कड़ी होगी। अध्यात्म अथक ब्रह्मज्ञान के जिज्ञासुओं अर्थात् सनातन धर्मावलंबियों के लिए इसमें भरपूर पठनीय सामग्री है जो शंकराचार्य-जगद्गुरु शंकराचार्य के प्रति श्रद्धा भाव जगाने में कारगर सिद्ध होगी। शिक्षा जगत में तो पुस्तक आयोजित कर दिया है। सार चेतना एवं ऊर्जा विज्ञान शोध संस्थान के सौर वीर और लेखक प्रकाशक सभी धन्यवाद एवं साधुवाद के पात्र हैं जिनके प्रयासों से ऐसी विरल पुस्तक पाठकों को सुलभ हो रही है। आशा है पाठक बंधु 'शिवोभूत्वा शिवं भजेत्' की भावना के साथ जगद्गुरु शंकराचार्य को आत्मसात् करने का मन बनायेंगे।

समीक्षकः **डॉ. सत्यनारायण स्वामी**
नया शहर थाने के पीछे, बीकानेर (राज.)-334004
मो: 9461448470

आँखों में आकाश

लेखक : मदन गोपाल लढ़ा **प्रकाशक :** राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली **संस्करण :** 2018 **पृष्ठ :** 26 **मूल्य :** ₹ 20

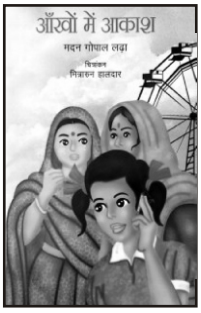

कहानियाँ-कविताएँ सुनना-सुनाना बच्चों को बहुत अच्छा लगता है बशर्ते अभिभावक अथवा शिक्षक उनमें इसकी रुचि जगा दे। सरस और सहज बाल साहित्य बच्चे के व्यक्तित्व को नए आयाम प्रदान करता है। बचपन में दादी, नानी और माँ द्वारा सुनाई गई कहानियाँ बाल मन को एक अलग दुनिया में ले जाती हैं। परियों के देश से होते-होते सत्य और यथार्थ से रू-ब-रू होना किसी जादू से कम नहीं होता। असल में बाल साहित्य का उद्देश्य बाल पाठकों के मनोरंजन के साथ उन्हें जीवन की सच्चाइयों से परिचित कराना है। बच्चों के मन में उठते सवालों को दबाने की चेष्टा किसी अपराध से कम नहीं है। बालमन में उपजे सवालों को सलीके से सुनना और उम्र के हिसाब से जवाब देना बेहद जरूरी और महत्त्वपूर्ण काम है। भागमभाग के इस दौर में बच्चे को तसल्ली से बैठकर सुनना जितना सुखद है, उतना ही आनन्ददायी है उनके मासूम सवालों के जवाब देना। बदलते परिदृश्य में मोबाइल, कम्प्यूटर-लैपटॉप और टीवी बच्चे के जीवन के अभिन्न अंग बन चुके हैं। निश्चित रूप से इनकी अपनी उपयोगिता है मगर इनका व्यसन किसी हद तक अति प्रयोग चिंताजनक है। असल में समाज के प्रबुद्ध नागरिक के नाते हम भी इसके लिए दोषी हैं। वस्तुत: बच्चे के लिहाज से साहित्य सृजन न के बराबर है। जो है उसका स्तर बालानुरूप नहीं है तथा प्रकाशन-वितरण की कठिनाइयों के चलते बच्चों तक पहुँच भी नहीं पाता है। वैसे किताबें लिखी जाती हैं, छपती भी है लेकिन अलमारियों में जाकर बंद हो जाना उनकी नियति है। बच्चों से उन किताबों का साक्षात्कार कम ही हो पाता है। ऐसे में बालोपयोगी किताबों का बच्चे के जीवन में प्रवेश और उनसे बच्चों का लगाव कैसे संभव होगा, यह सवाल उठना लाजमी है। कहना न होगा, बच्चों के लिए लिखना आसान काम नहीं है। बाल साहित्य रचने के लिए लेखक को बच्चा होना पड़ता है। अपनी कलम में फूलों-सी महक, तितली-सी उड़ान, जल-सी शीतलता, हवा-सी ठंडक पैदा करनी पड़ती है। ऐसे में यह बहुत सुखद है कि नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली ने चर्चित कवि व कथाकार डॉ. मदन गोपाल लढ़ा की बालकथा कृति 'आँखों में आकाश' का

प्रकाशन किया है। यह कथा कृति एनबीटी की नवसाक्षर साहित्यमाला के तहत प्रकाशित की गई है। उससे भी ज्यादा यह खबर सुकूनदायक है कि गत दिनों इस किताब का विमोचन बीकानेर जिले के सीमावर्ती गाँव रामबाग की राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय की बालिकाओं के हाथों संपन्न हुआ।

'आँखों में आकाश' एक ग्रामीण बालिका के हौसलों की उन्मुक्त उड़ान है। इस लंबी बाल कहानी की मुख्य पात्र सेजल खुद पर भरोसा रखने वाली, आँखों में सपना सहेजती एक ऐसी बालिका है जो विपरीत परिस्थितियों में पढ़ने का जज़्बा रखती है। गाँव में पाँचवीं तक की स्कूल उसे ज़रूर विचलित करती है। बानगी स्वरूप- 'सेजल को पाँचवी की पढ़ाई की चिंता नहीं थी। उसे खुद पर भरोसा था। इस बार भी वह अच्छे अंकों से पास हो जाएगी। हर बार की तरह। उसकी चिंता की वजह दूसरी थी। उसे फिक्र थी कि वह अगले साल कहाँ पढ़ेगी?' बावजूद इसके, उसके सपने आकाश की ऊँचाइयों से भी ज्यादा बुलंद है। वह स्कूल से घबराती नहीं, मन से जुड़ाव रखती है - 'सेजल को स्कूल में बहुत मज़ा आता। उसे किताबें पढ़ना बहुत अच्छा लगता। वह खेलकूद में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती। बाल सभा में गीत-कविताएँ सुनाती। त्योहारों पर सुंदर रंगोली बनाती। दिन भर चहकती रहती।' इस कहानी में सेजल का सपना खिलौने, मिठाइयाँ लेना नहीं है। उसका एक मात्र सपना है पढ़ना। यथा- एक दिन स्कूल में निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित हुई। विषय था- 'मेरा सपना'। सेजल ने भी इस प्रतियोगिता में भाग लिया उसने अपने मन की बात लिखी। उसका निबंध पहले स्थान पर आया। मैडम ने प्रार्थना सभा में उसका निबंध पढ़कर सुनाया। उसे इनाम दिया। उसका सपना था, शहर जाकर आगे पढ़ना।'

लेखक यहाँ बड़ी संजीदगी के साथ सेजल के बहाने बच्चों के ख्वाबों की इबारत लिखने का साहस करता है। अपने भोगे गए यथार्थ के जरिये जवाहर नवोदय विद्यालय को ऐसा प्लेटफॉर्म बताता है, जहाँ अभावों को अंगूठा दिखाकर, पढ़-लिखकर बच्चे अपने सपनों में रंग भर सकते हैं। अंधेरे में उजाला बनकर आया ऐसा ही पल सेजल के लिए ढेर सारी खुशियाँ का कारण बन जाता है। 'जून के महीने में एक दिन मैडम घर आई। उनके हाथों में एक अखबार था। उन्होने आते ही माँ को बधाई दी। वे बोली - 'सेजल का नवोदय विद्यालय के लिए चयन हो गया है।' सेजल उस वक्त रसोई में थी। मैडम की बात सुनकर उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा।'

डॉ. लढ़ा की कहानी में मुख्य पात्र सेजल एवं उसकी बहिन हेतल के गुजराती नाम लेखक के गुजरात प्रवास का प्रभाव दिखाते हैं वहीं इस कथा की बुनगट में राजस्थानी रंग का भी अनूठा मेल देखने को मिला है। महाजन फिल्ड फायरिंग रेंज में निवाला जुटाने की जद्दोजहद में खतरों से जूझते स्क्रेप मजदूरों का दर्द भी कमतर नहीं है, जो कहानी में प्रमुखता से उभरकर सामने आया है। उदाहरण स्वरूप- 'फायरिंग रेंज में सेना के जवान तोप चलाने का अभ्यास करते हैं। सैकड़ों मजदूर काम आए बमों के टुकड़ों की चुगाई का काम करते हैं। सेजल के जीऽसा/जी सा ने गलती से एक जिंदा बम को उठा लिया। वह फट गया। इस धमाके ने सेजल के परिवार को बेसहारा कर दिया।' यह कहानी रेगिस्तान के लोगों की अभाव भरी ज़िंदगी, खेती और पशुपालन पर निर्भरता, अकाल की मार के बावजूद यहाँ के लोगों के अद्भुत जीवट का पठनीय दस्तावेज़ है। विपरीत परिस्थितियों में सेजल की माँ मनरेगा में मजदूरी करते हुए अपनी बेटी को पढ़ाने का जज्बा पालती है। वहीं सेजल के परिवार के दूसरे सदस्य अज्ञानतावश इस बात का कहीं न कहीं विरोध करते नज़र आते हैं। सेजल की कहानी संघर्षों के साथ आगे बढ़ती है। नवोदय में अपनी पढ़ाई जारी रखते हुए छुट्टियों में घर आना और मेले में घूमने के दौरान अपने चचेरे भाई को ढूँढ़ने में चाइल्ड लाइन की मदद लेना सेजल की सूझबूझ को प्रदर्शित करता है। यहाँ कहानीकार बड़ी कुशलता से परिवार के बीच में आए मनमुटाव को मेलमिलाप में बदलने का भागीरथी काम कर जाता है। कहना न होगा, 'आँखों में आकाश' एक बेहतरीन कहानी के रूप में बाल पाठकों के लिए अनूठा उपहार है। बाल साहित्य में इस उल्लेखनीय रचाव के लिए कहानीकार मदन गोपाल लढ़ा बधाई के हकदार हैं।

समीक्षक : **राजूराम बिजारणियां**
श्री लक्ष्मी फोटो स्टेट, राजस्व तहसील के सामने,
एन.एच. 15 लूणकरणसर-334603
मो: 94144 49936

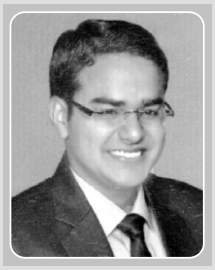

माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्री नथमल डिडेल स्काउट गाइड के स्टेट कमिश्नर नियुक्त

राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड राज्य मुख्यालय जयपुर के स्टेट चीफ कमिश्नर जे. सी. महान्ति ने स्टेट कमिश्नर स्कूल शिक्षा के पद पर माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्री नथमल डिडेल को नियुक्ति प्रदान की है।

बीकानेर मण्डल चीफ कमिश्नर डॉ. विजयशंकर आचार्य, मण्डल सचिव श्री देवानन्द पुरोहित, सी. ओ. स्काउट श्री जसवन्तसिंह राजपुरोहित ने स्कार्फ पहनाकर शिक्षा निदेशालय माध्यमिक शिक्षा में श्री नथमल डिडेल का अभिनन्दन किया। इस अवसर पर प्रारम्भिक शिक्षा निदेशक श्री श्यामसिंह राजपुरोहित भी उपस्थित थे।

डिडेल ने कहा कि स्काउट गाइड गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में सुनागरिकता के गुण विकसित होते हैं साथ ही उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास भी होता है। स्काउट गाइड के रूप में विद्यार्थी अपने आस-पास के परिवेश में सकारात्मक सोच और सेवाभावना से जीवन जीना सीखता है। प्रतिदिन एक अच्छे कार्य करने का संकल्प उसके जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाता है, घटनाओं और चुनौतियों का सामना करने का उसका निराला अंदाज़ होता है। एक अच्छे स्काउट में एक अच्छा इन्सान होता है परोपकार ही उसके जीवन का मूल बन जाता है।

-व.सं.

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shalaprangan.shivira@gmail.com** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

अधिकतम अंक लाने वाले विद्यार्थियों को किया सम्मानित

बाड़मेर जिले के राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय,भेडाना, गुड़ामालानी में 15 अगस्त, 2018, स्वतंत्रता दिवस के मौके पर कक्षा ग्यारहवीं व कक्षा बारहवीं में हिन्दी साहित्य में अधिकतम अंक लाने वाले विद्यार्थियों को विद्यालय में कार्यरत विषयाध्यापक श्री नरपत राम परमार (व्याख्याता हिन्दी) की ओर से 'हिन्दी शब्दकोश' डॉ. हरदेव बाहरी लिखित व मानक हिन्दी शब्दकोश (कमल प्रकाशन) देकर सम्मानित किया गया। स्वतंत्रता दिवस के मौके पर समारोह में ग्राम से पधारे जन प्रतिनिधि , संस्थाप्रधान श्री करना राम व श्री नरपत राम परमार (व्याख्याता हिन्दी) ने बारहवीं बोर्ड परीक्षा में प्रथम,द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहे विद्यार्थी क्रमशः प्रकाश कुमार राठौड़, शांति कुमारी व ममता कुमारी को तथा कक्षा ग्यारहवीं में हिन्दी साहित्य में प्रथम पाँच स्थान पर रहे विद्यार्थी क्रमशः श्रवण कुमार, गोविन्द कुमार, दिव्या कुमारी, भरताराम व कुमारी उगम को मानक हिन्दी शब्दकोश देकर सम्मानित किया। व्याख्याता श्री नरपत परमार ने कहा कि विद्यार्थियों में साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत करने के लिए उन्हें साहित्य की पुस्तकें पारितोषिक के रूप में देनी चाहिए। जिससे वे अपने व्यक्तित्व को एक अच्छे कवि, लेखक , रचनाकार व सृजनकर्त्ता के रूप में ढाल सकेंगे। कार्यक्रम बहुत ही प्रेरणादायी एवं उत्साहवर्धक रहा।

भामाशाह का किया सम्मान

महाराणा कुम्भा रा.उ.मा.वि. केलवाड़ा जिला राजसमन्द की ओर से भामाशाह का सम्मान माननीय विधायक श्री सुरेन्द्र सिंह राठौड़ एवं उपखण्ड अधिकारी परसाराम की उपस्थिति में साफा पहनाकर किया गया। संस्थाप्रधान श्री मोहनलाल बलाई ने बताया कि केलवाड़ा निवासी भामाशाह श्री डालचन्द चुन्नीलाल असावा द्वारा विद्यालय के प्रधानाचार्य कक्ष के नवीनीकरण हेतु 121000 की राशि का चैक भेंट किया गया। स्कूल में दान व सहयोग देकर भामाशाह ने बहुत ही अनुकरणीय कार्य किया है, जिसके लिए वे साधुवाद के पात्र है। प्रेरक व्याख्याता श्री सत्यनारायण नागोरी ने कहा कि ''वर्षो बाद अपने गाँव की पाठशाला के लिए भामाशाह तैयार करने पर संतोष मिला है।'' इस अवसर पर ललित आमेटा, विकास शर्मा एवं स्टाफ सहित बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित थे। संचालन श्री ललित श्रीमाली ने किया।

खो-खो विजेताओं को किया संस्थाप्रधान ने सम्मानित

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खण्डार जिला सवाई माधोपुर ने 63 वीं जिला स्तरीय बालिका खो-खो प्रतियोगिता 2018 में लगातार तीसरी बार प्रथम स्थान प्राप्त कर जीत हासिल की। यह प्रतियोगिता कस्बे की रा.बा.उ.मा. विद्यालय खिरनी में आयोजित की गई थी। स्थानीय विद्यालय में बालिकाओं के उत्साहवर्धन हेतु भी शाला प्रांगण में सम्मान समारोह आयोजित किया गया जिसमें सभी विजेता खिलाड़ियों को संस्थाप्रधान द्वारा पुरस्कृत करते हुए विजय चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। नोडल प्रभारी श्री राम सिंह ने छात्राओं को बधाई देते हुए बताया कि वरिष्ठ शा.शि. श्री किशोर का अथक प्रयास सराहनीय रहा। संस्थाप्रधान श्रीमती सुजाता शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए बताया कि शाला की छात्राओं में से आरती बैरवा, राधाबाई शर्मा, प्रिया शर्मा, अंकिता शर्मा, सीमा गुर्जर एवं निधि गुर्जर का राज्य स्तर पर चयन हुआ।

साइकिल वितरण समारोह सम्पन्न

उदयपुर जिले के फतहनगर की राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में साइकिल वितरण समारोह -2018 शाला प्रांगण में श्री ज्ञानचन्द पाटोदी की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। जिसके मुख्य अतिथि श्री महेश सोनी, विशिष्ठ अतिथि सर्वश्री रमेश अग्रवाल, शरीफ मोहम्मद, हितेश अग्रवाल, हरीश मगंल, अमित बंसल, हीरालाल टेलर, ओमप्रकाश टेलर, श्रीमती ऋतु अग्रवाल तथा श्रीमती खुशनूर बानु के आतिथ्य में विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 9 की 76 छात्राओं को राज्य सरकार की योजनानुसार साइकिलों का वितरण किया गया। इस अवसर पर अतिथियों ने आरओ. व स्मार्ट क्लॉस रूम हेतु भामाशाहों को इस हेतु प्रेरित करने का प्रयास किया। प्रधानाचार्य ने सभी आगन्तुक अतिथियों का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती छाया अग्रवाल ने किया।

स्वतंत्रता दिवस मनाया एवं बाल संसद का गठन

दांदू (चूरू) के राजकीय माध्यमिक विद्यालय में 72वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाया गया । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री लखेन्द्र सिंह राठौड उपसरपंच

ग्राम पंचायत घांघू थे। कार्यक्रम में झंडारोहण विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री नेमीचंद सूडिया ने किया। इस अवसर पर शा.शि.रामचंद्र ढाका के निर्देशन में विद्यार्थियों ने पी.टी. परेड व देश भक्ति से ओत-प्रोत शानदार सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। संस्थाप्रधान ने पिछले दो वर्ष के शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम के लिए विद्यालय स्टाफ को सम्मानित किया। इस

अवसर पर गाँव के सर्वश्री हनुमान सिंह सांखला, सुरेन्द्र बाबल, जीवनराम, कानाराम मीणा, भंवरसिंह झाझड़िया, विजेंद्र सिंह राठौड़, अर्जुनराम बाबल, गोरधनराम, पूर्णाराम प्रजापत एवं विद्यालय के शिक्षक सर्वश्री सुलतान सिंह, विनोद बुगालिया, रणजीत सिंह, राजेश कुमार, बजरंगलाल आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन राजेंद्र सुंडा ने किया। इसी विद्यालय के संस्थाप्रधान की अध्यक्षता में दि.14.9.18 को रामावि. दांदू में बाल संसद का गठन, संवाद व आपसी विचार विमर्श एवं जनतांत्रिक तरीके से किया गया। सर्वश्री विनोद बुगालिया, राजेंद्र सुंडा, रणजीत सिंह के निर्देशन में चुनाव कार्य में बहुमत के आधार पर कक्षा 10वीं के छात्र पंकज प्रजापत प्रधानमंत्री व छात्रा ज्योति को उपप्रधानमंत्री पद पर मनोनीत किया गया। साथ ही मोनिका को स्वास्थ्य मंत्री, सुनीता को स्वच्छता मंत्री, नरेन्द्र को पर्यावरण मंत्री, खुशबू को पुस्तकालय व विज्ञान मंत्री, सुशीला को मिड डे मील मंत्री व राहुल को खेल मंत्री पदों पर शपथ दिलाते हुए उन्हें कर्त्तव्यों व जिम्मेदारियों से अवगत करवाया। इस मौके पर विद्यालय के शिक्षक सर्वश्री राजेश कुमार मीणा, रामचंद्र ढाका, सुलतान सिंह, नोरंगलाल, बजरंगलाल, श्रीमती फरजाना व मोनिका आदि उपस्थित थे।

बेटियों ने 400 मीटर दौड़ में जीती चाँदी

राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड राज्य मुख्यालय जयपुर के तत्वावधान में आयोजित प्रथम राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में गाइड विभाग के फुटबॉल मैच के फाइनल मुकाबले में भरतपुर मण्डल की टीम के विरुद्ध शानदार प्रदर्शन करते हुए सिल्वर मैडल जीतकर (जोधपुर मण्डल का प्रतिनिधित्व करते हुए) बाड़मेर जिले के सिणधरी की बालिकाओं ने राज्य स्तर पर नाम रोशन किया। टीम प्रभारी व स्थानीय संघ सचिव श्री दूदाराम चौधरी ने बताया कि जयपुर के सवाई मानसिंह इंटरनेशनल स्टेडियम में खेले फुटबॉल के फाइनल मैच में जोधपुर मण्डल का प्रतिनिधित्व कर रही राबाउमावि. सिणधरी व राउप्रावि. सिणधरी की गाइड्स ने कड़े मुकाबले में भरतपुर मण्डल के डिफेंस पर दबाव एवं कड़ी टक्कर देते हुए बेहतर खेल दिखाया लेकिन अंतिम क्षण से 2 मिनट पूर्व विपक्षी टीम 1 गोल दागने में सफल रही और मुकाबले में जोधपुर मण्डल ने 1-0 से सिल्वर मैडल पर कब्जा किया। एक अन्य मुकाबले में राबाउमावि. सिणधरी की छात्रा खेतु गोदारा ने 400 मीटर दौड़ में भी शानदार प्रदर्शन कर सिल्वर मैडल पर कब्जा करते हुए बाड़मेर जिले का परचम फहराया। खेतु ने गोल्ड से बहुत कम अंतराल में सिल्वर प्राप्त किया।

प्रमुख शासन सचिव एवं स्टेट चीफ कमिश्नर श्री जे. सी. मोहंती, राज्य आयुक्त ट्रेनिंग श्री गोपाराम माली, मुख्य अतिथि व राजस्थान क्रिकेट टीम के कप्तान श्री पंकज सिंह तथा महिला रेसवॉकर ओलम्पियाड गीता पूनिया तथा जोधपुर मण्डल आयुक्त श्री बाबूसिंह राजपुरोहित व सीओ बाड़मेर श्री योगेंद्रसिंह राठौड़ ने उपविजेता टीम को सिल्वर मैडल पहनाकर व ट्रॉफी देकर उत्साहवर्धन किया। श्री मोहंती ने कहा ''स्काउटिंग एक खेल है और जीवन में खेल का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अत: आप खेल को जिंदगी में जीएँ और कड़ी मेहनत कर आगे बढ़ें।'' उन्होंने टीम प्रभारियों स्काउटर श्री दूदाराम चौधरी राउप्रावि. सिणधरी, श्री संतोष कुमार बायतु व श्री हरिसिंह, श्री जेठाराम व कानू चौधरी बाड़मेर को बधाई दी।

विद्यालय में पौधारोपण कर जिम्मेदारी बाँटी

अजमेर के चम्पानेरी स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में 21.7.18 को शाला प्रांगण में पौधारोपण किया गया। व्याख्याता श्री रामगोपाल बैरवा, वरिष्ठ शा.शि. श्री रामदेव मेघवंशी व शाला स्टाफ तथा विद्यार्थियों ने शाला में पौधारोपण कार्यक्रम में भाग लिया। इस आयोजन के तहत छायादार पेड़ लगाए गए तथा उनकी सुरक्षा एवं देखभाल की जिम्मेदारी सभी ने स्वेच्छा से ली। संस्थाप्रधान श्री अरुण राज ने सभी पौधारोपण करने वाले शिक्षक एवं विद्यार्थियों को पर्यावरण की जानकारी दी।

भामाशाह द्वारा नवनिर्मित भवन के लोकार्पण समारोह का आयोजन सम्पन्न

चूरू के रतननगर स्थित श्री एच.पी. बुधिया रा.आदर्श उ.मा.विद्यालय में दिनांक 13.09.2018 को भामाशाह श्री हरिप्रसाद बुधिया द्वारा नवनिर्मित विद्यालय भवन के लोकार्पण समारोह का आयोजन किया गया। जिसके मुख्य अतिथि माननीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री श्री राजेन्द्र सिंह राठौड़ एवं विशिष्ट अतिथि जिला प्रमुख श्री हरलाल सहारण ने नवनिर्मित भवन का लोकार्पण किया। अन्य मंचस्थ अतिथि नगरपालिका चैयरमेन श्रीमती हिना बानो, जिला शिक्षा अधिकारी (मा.शि.) श्री पतराम सिंह काला, रमसा के एडीपीसी. श्री गोविन्दसिंह राठौड़, संस्थाप्रधान

श्रीमती कुसुम शेखावत का बुधिया परिवार के सदस्यों ने माल्यार्पण, साफा, शॉल, पुष्पगुच्छ भेंट करते हुए स्वागत किया। तत्पश्चात भामाशाह श्री हरिप्रसाद बुधिया, श्रीमती उमादेवी, श्री संजय बुधिया का विद्यालय की संस्थाप्रधान श्रीमती कुसुम शेखावत, श्री पवनकुमार शर्मा, श्री हरिप्रसाद टाक, श्री उमेश कुमार जाखड़, श्री ओमप्रकाश माली एवं श्री अमीलाल दईया ने माल्यार्पण, साफा शॉल, पुष्पगुच्छ भेंट करते हुए स्वागत किया।

उक्त समारोह में श्री हरिप्रसाद बुधिया ने माननीय मंत्री महोदय को विद्यालय का दान-पत्र सौंपा एवं संस्थाप्रधान श्रीमती कुसुम शेखावत ने भामाशाह श्री बुधिया को अभिनन्दन-पत्र भेंट किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री राजेन्द्र सिंह राठौड़ ने कहा कि दान देने से धन घटता नहीं, बढ़ता है। इस सुकृत्य से शिक्षा जगत में भामाशाहों की अलग पहचान बनेगी। यह कदम बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए नींव का पत्थर साबित होगा। व.अ. श्रीमती विजयलक्ष्मी शर्मा ने सरस्वती वंदना एवं गणेश वंदना से उपस्थितजनों को मंत्रमुग्ध कर दिया। विद्यालय के छात्र व छात्राओं ने स्वागत गीत के पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम के अन्तर्गत भावभीनी प्रस्तुतियाँ दी। अन्त में संस्थाप्रधान ने मंचस्थ अतिथियों एवं जनप्रतिनिधियों का हार्दिक स्वागत करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। श्री बुधिया जी के भवन निर्माण एवं भौतिक सुविधाओं के योगदान को महत्त्वपूर्ण बताते हुए आभार जताया और कहा कि वे आगे भी इसी प्रकार शाला में सहयोग प्रदान करते रहेंगे। कार्यक्रम का संचालन श्री हरदयाल सिंह प्र.अ. रामावि. नेठवा (सीकर) ने सफलतापूर्वक किया।

विद्यालय की पत्रिका 'साहित्यांकुर' के प्रथम अंक का विमोचन

सेठ श्री छगन लाल अग्रवाल रा. आदर्श उ. मा. विद्यालय धानोता, शाहपुरा, जयपुर के प्रांगण में विद्यालय एवं सनातन प्रकाशन जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में विद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'साहित्यांकुर' के प्रथम अंक का विमोचन शनिवार 8 सितम्बर को राजस्थान विधानसभा के उपाध्यक्ष माननीय राव राजेन्द्र सिंह के मुख्य आतिथ्य व बाल साहित्यकार सुशीला शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। यह समारोह श्री गणपत वर्मा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भाजपा के अति विशिष्ट आतिथ्य तथा साहित्यकार श्री कैलाश मनहर, प्रधानाचार्य श्री राजकुमार इन्द्रेश तथा सनातन प्रकाशन के श्री मनोज अरोड़ा व श्री मनीष मिश्र मणि की उपस्थिति में हुआ। मुख्य अतिथि राव राजेन्द्र सिंह ने कहा कि ''मैंने मेरे राजनैतिक जीवन में पहली बार किसी राजकीय विद्यालय में साहित्यिक पत्रिका का विमोचन किया है यह वर्तमान समय में सच्चे दिल से हिंदी की सेवा व उसके उन्नयन का मार्ग है क्योंकि संस्कार साहित्य व माँ के आँचल में रहकर ही सीखे जा सकते हैं।'' पत्रिका के सम्पादक श्री राजकुमार इन्द्रेश ने कहा कि ''इच्छा जब विचार में बदल संकल्प का रूप लेती है और इन सब का समन्वय होता है

तो कुछ नया प्रस्फुटित होकर मंगलमय होता है।'' उसी इच्छास्वरूप विद्यालय की इस 'साहित्यांकुर' पत्रिका में विद्यालय की छात्रा अवंतिका जांगिड़ ,ममता कुलदीप की काव्य रचना, मनीषा कुलदीप के आलेख 'हिन्दी दिवस' तथा छात्रा अन्नू रोलानिया की लघुकथा 'हथौड़ा और चाबी' के साथ शिक्षक श्री मनोज कुमार शर्मा, श्री अशोक कुमार अग्रवाल के आलेख, 'सखा संगम' कहानी के अलावा कवि गोपाल दास नीरज एंव श्री अटल बिहारी वाजपेयी को श्रद्धांजलि भी दी गई है। इस अवसर पर विद्यार्थियों की हिन्दी साहित्य पर प्रश्नोत्तरी का आयोजन भी विशेष आकर्षण रहा।

चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन

अजमेर जिले की राजकीय मा. वि., ककलाना के विद्यालय में H.P.C.L. द्वारा दिनांक 29.8.18 को स्वच्छता पखवाड़े के तहत शाला प्रांगण में चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें 50 विद्यार्थियों ने भाग लिया। चित्रकला से संबंधित समस्त सहायक सामग्री जैसे ड्राईंगशीट, वाटर कलर, स्कैच पेन, पैन्सिल, रबर आदि संस्था H.P.C.L. द्वारा उपलब्ध करवाए गए। चित्रकला प्रतियोगिता का विषय 'स्वच्छता अभियान का महत्त्व' रखा गया। प्रथम तीन स्थानों पर रहने वाले विद्यार्थियों को आकर्षक पुरस्कार प्रतियोगिता के पश्चात समापन समारोह में प्रदान किए गए। साथ ही विद्यालय में स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए एच.पी.सी.एल. संस्था द्वारा शेलो कम्पनी के 4 बड़े कचरा पात्र (डस्टबीन) शाला को सप्रेम भेंट भी किए गए। कार्यक्रम के अन्त में संस्थाप्रधान श्री राजेश दत्त शर्मा ने प्रतियोगिता के माध्यम से छात्रों में उत्साह बढ़ाने एवं कचरापात्र भेंट करने पर संस्था का आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रतियोगिता के आयोजन में शाला स्टाफ ने सहयोग दिया ।

संकलन- **प्रकाशन सहायक**

चतुर्दिक समाचार

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

जैविक खेती से बोरवा का कायाकल्प हो गया।

महाराष्ट्र के अकोला जिले का एक गाँव है बोरवा। अकोला से लगभग 85 कि.मी. की दूरी पर है यह गाँव। यहाँ ज्यादातर खेती करने वाले भिलाला वनवासी रहते हैं। गाँव है भी घने जंगलों के बीच बसा हुआ। गाँव के लोग खेती करते थे, लेकिन कई बार फसल से खेती का खर्च भी नहीं निकल पाता था। कभी कुछ मुनाफा हआ भी तो वह बैंक और साहूकारों का कर्ज चुकाने में निकल जाता। ऐसे में गाँव के दो लोगों ने कर्ज से परेशान हो अपने जीवन का अंत कर लिया। गाँव में रहने वाली नासरी चौहान के पिता भी खेती करते थे। जी-तोड़ मेहनत के बाद भी कई बार फाके मारने की स्थिति आ जाती। उसने किसी तरह दसवीं पास कर ली थी, लेकिन अन्नदाता किसानों की दयनीय स्थिति से दुखी थी। स्कूल में पढ़ते समय ही उसे किसी ने जैविक खेती के बारे में बताया। यह भी बताया कि जैविक खेती में कुल लागत एक चौथाई ही आती है। अब नासरी ने अपने खेत में जैविक खाद और कीटनाशक काम में लेने का निश्चय किया। नासरी ने अपने पिता को यह बताया तो वे कतई तैयार नहीं हुए। नासरी ने हिम्मत नहीं हारी। उसने जैविक खेती की पूरी जानकारी ली और खुद ही वर्मी-कम्पोस्ट (खाद) तैयार की। उसकी जिद के आगे किसी की नहीं चली और खेत में जैविक खाद ही डाली गई। इस बार फसल अच्छी हुई और उसकी गुणवत्ता भी अच्छी थी। लागत भी वाकई रासायनिक खेती से एक चौथाई ही आई थी। उत्साहित हो उस अन्नपूर्णा कन्या नासरी ने अन्य गाँव वालों को भी जैविक खेती करने के लिए समझाया। उसने उनसे वादा किया कि खेती में घाटा हुआ तो भरपाई वह खुद करेगी। इस शर्त पर किसानों ने अपने गाँव की बेटी की बात मान ली। यह वर्ष 2011 की बात है। बोरवा के किसानों ने जोखिम उठाया था, पर उसका परिणाम सुखद रहा। कम लागत में अच्छी फसल पैदा हुई। गाँव वाले खुश थे। अब कर्जा आसानी से चुकाया जा सकता था। दो सालों में बोरवा का कायाकल्प हो गया। बोरवा पूरे जिले और प्रान्त में जैविक ग्राम के नाम से जाना जाने लगा। अब देश के कृषि-विशेषज्ञ बोरवा में आने लगे। उनसे बात करने वाली अकेली नासरी चौहान। उसे भी अंग्रेजी नहीं आती थी और भारत के कृषि-वैज्ञानिक अंग्रेजी ही समझते थे तथा अंग्रेजी में ही भारत की खेती को ठीक करने का सपना देखते थे। मजबूरी थी, इसलिए नासरी को अंग्रेजी सीखनी पड़ी। अंग्रेजी बोलना सीखने के लिए वह प्रतिदिन 85 कि.मी. दूर अकोला जाती थी और वापस आती थी। सात-महीनों तक उसे यह मशक्कत करनी पड़ी और अंग्रेजी सीखने में भी वह सफल हुई। सफलता मिली तो सम्मान भी मिला। महाराष्ट्र सरकार ने उसे 'कृषि-भूषण' पुरस्कार दिया है। अब तक अनेक संस्थानों से उसे 33 पुरस्कार मिल चुके हैं। कृषि विद्यापीठ अकोला ने उसे जैविक-कृषि का ब्राण्ड अम्बेसेडर बनाया है।

अकेले बृजेश ने पहाड़ी काट कर सड़क बना दी

पहाड़ काट कर सड़क बनाने की जब बात आती है तो तुरंत दशरथ मांझी का नाम आता है। बाईस सालों की दिन-रात की मेहनत के बाद इस आधुनिक भागीरथ ने पहाड़ काट कर उस मार्ग से अपने गाँव को अन्य गाँवों से जोड़ दिया था। दशरथ मांझी से प्रेरित होकर कुछ अन्य लोगों ने भी वैसा ही दृढ़ संकल्प लिया। पुष्पनगर ग्राम के बृजेश ने भी ऐसा ही बीड़ा उठाया और तीन साल में दो कि.मी. लम्बी सड़क बना दी। पुष्पनगर उत्तराखण्ड के चम्पावत जिले का एक छोटा सा गाँव है। गाँव के तीन ओर ऊँची पहाड़ियाँ और चौथी ओर जंगलों के बीच ऊबड़-खाबड़ रास्ता। गाँव के बाहर जाने के लिए इसी ऊँचे-नीचे पथरीले रास्ते से दो कि.मी. पैदल चल कर जाना पड़ता था। बच्चों की पढ़ाई के लिए भी इसी रास्ते पर मशक्कत करनी पड़ती थी। स्कूल टेकरी के पास मझोला में है, जो ग्राम पंचायत का मुख्यालय भी है। इसी पुष्पनगर के बृजेश पाण्डेय भारतीय सेना की कुमाऊँ रेजीमेण्ट में हैं। तब उनकी नियुक्ति पिथौरागढ़ में थी। एक बार वे छुट्टियों में अपने गाँव पुष्पनगर आए। वर्षा का मौसम था और पढ़ने वाले बालक उसी फिसलन भरे रास्ते से कुछ नालों को पार कर मझोला जाते थे। बच्चों का कष्ट बृजेश से देखा नहीं गया। उन्होंने औजार उठाए और चल पड़े उस पहाड़ी की ओर। 36 वर्ष के बृजेश ने काम शुरू कर दिया। संकल्प की शक्ति के सामने जंगल-पहाड़ों की क्या औकात? कुछ रास्ता बनने लगा तो किसी न किसी बहाने से छुट्टियाँ ले ये गाँव आने लगे। तीन साल तक वे अपनी धुन में लगे रहे। छैनी, हथौड़ी, गेंती, फावड़े आदि से वे प्रहार करते रहे। आखिर उनका परिश्रम सफल हो गया। घोर कठिनाइयों के बीच उन्होंने अकेले ही दो कि.मी. लम्बी सड़क बना दी। इस पर मोटर साइकिल, जीप और कार चल सकते हैं। इस सड़क ने पुष्पनगर को राष्ट्रीय राजमार्ग 125 से जोड़ दिया। हाल ही में उत्तराखण्ड सरकार ने कुमाऊँ रेजीमेण्ट के लांस नायक बृजेश को सम्मानित किया है।

मैच जीतने के लिये इंग्लैण्ड के खिलाड़ियों ने योगाभ्यास किया

फुटबाल के विश्व-कप में इग्लैण्ड के खिलाड़ियों ने भारतीय खेल कबड्डी और योग का भी मुकाबलों की तैयारी में सहारा लिया। विश्व-कप शुरू होने के पहले के प्रशिक्षण शिविर में इंग्लैण्ड के सभी खिलाड़ी प्रातःकाल पहले योग करते थे और बाद में कबड्डी खेलते थे। गत 11 जुलाई को क्रोएशिया से होने वाले सेमी-फाइनल वाले दिन भी वे सुबह के समय अपने होटल के पार्क में अपनी चटाइयाँ लेकर आए और एक घण्टे तक योगाभ्यास किया। योग तो पूरी दुनिया में लोकप्रिय हो ही रहा है, कबड्डी का महत्त्व भी अन्य देशों के लोग अब समझने लगे हैं।

नये तथ्यों ने सिद्ध किया कि आर्यों के भारत में आने की बात झूठी

अंग्रेज और उनके पिछलग्गू इतिहासकारों ने जो सबसे बड़ा झूठ गढ़ा वह यह है, कि आर्य बाहर से भारत आए। यह झूठ भारतीय दिमागों में ठोक-ठोक कर घुसाया गया। आज भी अधिकांश भारतवासी मानते हैं कि भारत में तथाकथित आर्य बाहर से आए। सबसे पहले तो यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि 'आर्य' जातिवाचक शब्द नहीं है। यह गुणवाचक है तथा इसका अर्थ है श्रेष्ठ या सुसंस्कृत। 'आर्य' नाम की कोई जाति या समुदाय नहीं है न कभी रहा है। हरियाणा के राखीगढ़ी में वर्षों पहले हड़प्पा सभ्यता के जो अवशेष मिले थे उनके परीक्षण से यह पूरी तरह स्पष्ट हो गया है, कि भारतीय संस्कृति का विकास भारत में रहने वालों ने ही किया। अंग्रेजी दैनिक इकॉनोमिक टाइम्स (13 जून) में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार राखीगढ़ी में प्राप्त मानव कंकालों के डी.एन.ए. परीक्षण से पता चला है कि उस समय के निवासियों के आनुवांशिक गुणसूत्र (डी.एन.ए.) वही हैं जो उस काल के पूरे देश के भारतीयों के हैं। राखीगढ़ी के डीएनए. की यह रपट श्री वसंत शिन्दे तथा नीरज रॉय ने लम्बे परीक्षण व प्रयोगों के बाद तैयार की है। रपट जारी करने के बाद उक्त वैज्ञानिकों ने अनुभूति विश्नोई (संवाददाता इ.टा.) को बताया कि आर्यों के भारत में बाहर से आने का सिद्धांत कोरी कल्पना है। यह ठीक भी है क्योंकि कोई वैज्ञानिक प्रमाण इस झूठी कल्पना के पक्ष में नहीं है।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

झुंझुनूं

रा.उ.मा.वि., बहादुर वास को श्री विद्याधर सिंह पूनियाँ (से.नि. एडिशनल एस.पी.) द्वारा सभी विद्यार्थियों को विद्यालय पौशाक लागत 39,000 रुपये, श्री रामचन्द्र पूनियाँ से 20 सैट टेबल व स्टूल जिसकी लागत 35,000 रुपये, श्री शिवचन्द से नामांकन वृद्धि के लिए कक्षा-9 से 12 तक के प्रति छात्र 200 रु. व कक्षा 1 से 8 तक के प्रति छात्र 100 रु. प्रति छात्र की प्रथम किश्त माह जुलाई 10,100 रुपये नकद वितरित किए, श्री पंकज पूनियाँ से खेलकूद सामग्री व पौशाक के लिए 75,000 रुपये नकद। **सेठ हरनारायणदास ईश्वरदास काजड़िया रा. आ. उ.मा.वि. कजड़ा** को समस्त स्टाफ द्वारा बोर्ड परीक्षा परिणाम हेतु प्रोत्साहन राशि वितरित 22,000 रुपये, श्री रमेश शर्मा से टाई बेल्ट 250 नग जिसकी लागत 12,120 रुपये, कजारिया सिरेमिक्स नई दिल्ली द्वारा शौचालय बनाए गए जिसकी लागत 3,41,000 रुपये, सर्वश्री रघुवीर सिंह (से.नि.), अन्तर सिंह (प्रधानाचार्य), धर्मपाल सिंह, मनजीत सिंह, श्रीमती कमलेश डूडी प्रत्येक से 25 टेबल 25 स्टूल लोहे की निर्मित विद्यालय को भेंट तथा प्रत्येक की लागत सहयोग 26,000 रुपये, श्री ज्ञान प्रकाश निर्मल से एक R.O. छोटा जिसकी लागत 10,000 रुपये, सेठ हरनारायण दास ईश्वरदास काजड़िया चेरिटेबल ट्रस्ट कलकत्ता से एक वाटर कूलर जिसकी लागत 32,300 रुपये, रेजड़ी खेजड़ी माता चेरिटेबल ट्रस्ट काजड़ा से एक इन्वर्टर जिसकी लागत 16,000 रुपये, श्री कमला प्रसाद काजड़िया कलकत्ता से एक R.O. बड़ा जिसकी लागत 54,000 रुपये, श्री दूलीचंद संत्री चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा छात्र-छात्राओं को विद्यालय गणवेश, जूता-जुराब एवं टाई 320 नग जिसकी लागत 4,00,000 रुपये, श्री शिवनारायण अमरनाथ अग्रवाल कानपुर वाले से क्रिकेट खेल किट लागत 20,000 रुपये। **रा.उ.मा.वि. गुढ़ा गोडजी** को श्री शिवकरण जानू (चेयरपर्सन) गीतांजली ज्वेलर्स गुढ़ा गोडजी द्वारा विद्यालय भवन के कलर की मजदूरी का भुगतान 1,00,000 रुपये व आहुजा कम्पनी का कम्पलीट साउण्ड सिस्टम जिसकी लागत 78,000 रुपये, डॉ. हरिसिंह सांखला से दो R.O. प्राप्त हुए जिसकी लागत 26,000 रुपये। **रा. रमा देवी मुरारका बा.उ.मा.वि. मुकुन्दगढ़** को श्री बंशीधर बेरवाल ट्रस्टी श्री गोविन्ददेव मानव सेवा संस्थान से स्कूल बैग 110 जिसकी लागत 15,000 रुपये व गर्म कोट 65 जिसकी लागत 20,000 रुपये। **शहीद राजेश कुमार रा.मा.वि. झाझोत** में श्री सज्जनकुमार-रवि प्रकाश पायल द्वारा एक कमरा का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 1,36,000 रुपये, श्री बाबूलाल अठवाल से एक वाटर कूलर जिसकी लागत 75,000 रुपये, श्री इन्द्राज सिंह पायल से एक इन्वर्टर+बैटरी जिसकी लागत 14,500 रुपये, श्री रघुवीर सिंह मीणा से 10 कुर्सी व एक अलमारी जिसकी लागत 12,500 रुपये।

डूँगरपुर

रा.उ.मा.वि. चीखली को श्री गंगाराम डांगी निवासी झाडोल (सराड़ा) जिला उदयपुर हाल निवासी मुम्बई द्वारा विद्यालय को टेबल टेनिस टेबल मय बेट बाल विद्यालय को उपलब्ध करवाया जिसकी लागत 32,000 रुपये, श्री अमरसिंह पुत्र श्री रणजीत सिंह चौहान द्वारा स्वर्गीय श्री प्रकाश सिंह चौहान पुत्र श्री दौलत सिंह चौहान की स्मृति में वाटर कूलर विद्यालय को सप्रेम भेंट जिसकी लागत 35,000 रुपये, पी.एस. ट्रेडर्स चीखली की तरफ से स्वप्रेरित होकर राष्ट्रीय पर्व एवं शिक्षक दिवस पर शिक्षक कर्मचारी सम्मान में 2,000 रुपये के प्रशस्ति पत्र व प्रतीक चिह्न उपलब्ध करवाए गए, पुस्तकालय अध्यक्ष श्री प्रवीण चन्द्र पण्ड्या द्वारा रिवाल्मुविंग चेयर भेंट जिसकी लागत 4,800 रुपये, ग्राम पंचायत चीखली द्वारा विद्यालय को 11 छत पंखें भेंट जिसकी लागत 19,800 रुपये।

दौसा

रा.आ.उ.मा.वि. पाखर, तह. महवा को सर्वश्री रामनिवास सैनी, विशम्भर बैरवा, प्रभात बैरवा, मानसिंह मीना प्रत्येक से एक-एक पंखा प्राप्त हुआ जिसकी प्रत्येक की लागत 1,350 रुपये, श्री जयरामदास से 5.18 बीघा भूमि (खेल मैदान) जिसकी लागत 16 लाख 16 हजार रु.। **रा.उ.मा.वि. पीचूपाड़ा कलां** में श्री अमर सिंह खटाना द्वारा 20×22 का एक कक्षा-कक्ष, शौचालय एवं मुख्य द्वार का जीर्णोद्धार करवाया गया जिसकी लागत 4 लाख रुपये, श्री रामजी लाल खटाना द्वारा एक कक्षा कख 20×22 व अन्य योगदान में 4 लाख रुपये विद्यालय को दिए, श्री रतनलाल बैरवा (पूर्व सरपंच) द्वारा एक कक्षा-कक्ष 20×20 का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 1 लाख इक्यावन हजार रुपये।

नागौर

सेठ तुलसीराम गिलड़ा रा.आ.उ.मा.वि. भदाणा बाना को श्री रामदेव चौधरी से 21 टेबल, 21 स्टूल प्राप्त हुई जिसकी लागत 28,000 रुपये, श्री तेजाराम सांगवा (अध्यापक) से लोहे की एक अलमारी (6×4) प्राप्त हुई जिसकी लागत 10,000 रुपये, श्री विष्णु कुमार आसोपा से 07 कुर्सियाँ प्राप्त हुई जिसकी लागत 5,000 रुपये। **रा.आ.उ.मा. वि. नंगवाड़ा (कुचामन सिटी)** में श्री लक्ष्मण राम मूण्ड (व.अ.) द्वारा अपने स्व. पिताश्री जीवनराम मूण्ड (स्वतंत्रता सेनानी) की स्मृति में 1,21,000 रु. की लागत से जल मंदिर (पानी की टंकी) का निर्माण करवाया गया। **रा.उ.मा.वि. जालसू नानक (डेगाना)** में श्री हरिशंकर वैष्णव द्वारा कमरा हॉल मय बरामदा सभी फिटिंग सहित लागत 12,00,000 रुपये, श्री काशीराम खण्डेलवाल से एक लेपटॉप लागत 40,000 रुपये, श्री लालाराम डुकिया से एक वाटर कूलर प्राप्त हुआ जिसकी लागत 35,000 रुपये, श्री हरिराम से होज निर्माण हेतु 21,000 रुपये नकद, श्री भंवरलाल जांगिड़ द्वारा होज व मंच का निर्माण कराया गया जिसकी लागत 2,51,000 रुपये, श्री हरिशंकर वैष्णव द्वारा मंदिर का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 1,21,000 रुपये। सर्वश्री भंवरलाल, छोटू राम, घासीराम द्वारा वृक्षारोपण हेतु 31,000 रुपये नकद, श्री सम्पतलाल चौहान द्वारा मैदान का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 21,000 रुपये, सर्वश्री राजेन्द्रसिंह जुजाड़िया, भंवराराम महिया, घासीराम पचार द्वारा कूलर हेतु प्रत्येक से 11,000-11,000 रुपये प्राप्त, सर्वश्री श्रीराम महिया, विजयसिंह राठौड़ से वाटर स्टेण्ड प्राप्त तथा प्रत्येक की लागत 11,000-11,000 रुपये। **रा.उ.प्रा. वि. कोकपुरा, पं.स. कुचामनसिटी** में श्री शंकर सिंह राठौड़ द्वारा अपनी माताजी की स्मृति में एक कमरा मय बरामदा का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 5,00,000 रुपये।

पाली

रा.आदर्श उ.मा.वि. बड़ौद, तह. देसूरी में श्री सपाराम सीरवी द्वारा सम्पूर्ण विद्यालय में रंग रोगन करवाया गया जिसकी लागत 1,50,000 रुपये तथा श्री भोलाराम देवासी द्वारा एक प्याऊ का निर्माण करवाया गया और एक वाटर कूलर सप्रेम भेंट। **रा.आ.उ.मा.वि. रानीगाँव** में श्री सुरेश कुमार जैन द्वारा विद्यालय में 30×85 का एक बड़ा बैठक हॉल का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 15,00,000 रुपये। **रा.आ.उ.मा.वि. बासना, तह. सोजत** को श्री लक्ष्मण सेन से विद्युत इन्वर्टर प्राप्त जिसकी लागत 20,000 रुपये, श्री देवाराम माली से एक वाटर कूलर प्राप्त जिसकी लागत 30,000 रुपये, श्री प्रकाशचन्द्र माली से एक बायोमेट्रिक मशीन प्राप्त जिसकी लागत 12,000 रुपये, श्री भंवरलाल, श्री डूंगाराम बेरा मातावा द्वारा प्रधानाचार्य कक्ष हेतु टेबल प्राप्त जिसकी लागत 7,500 रुपये, श्री बाबू खाँ (से.नि. व्याख्याता) द्वारा प्रधानाचार्य कक्ष हेतु कुर्सी प्राप्त जिसकी लागत 5,100 रुपये, श्री गोपाराम माली द्वारा साइकिल स्टेण्ड का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 40,000 रुपये।

शेष अगले अंक में

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

हमारे भामाशाह

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-व. संपादक**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : अक्टूबर, 2018 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादकः डॉ. राजकुमार शर्मा, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

चित्रवीथिका : माह अक्टूबर, 2018

(1–2) 'शिक्षक दिवस' 5 सितम्बर, 2018 के अवसर पर नई दिल्ली में राजस्थान के दो शिक्षक डॉ. सुमन जाखड़ (1) और मो. इमरान (2) को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित करते हुए माननीय उपराष्ट्रपति श्री वैंकेया नायडू एवं गरिमामय मंच। (3) 'शिक्षक दिवस' की पूर्व संध्या पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं मानव संसाधन विकास मंत्री श्री प्रकाश जावड़ेकर के साथ राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित होने वाले देशभर के शिक्षक बन्धु–भगिनी। (4) राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह–2018 जयपुर में शिक्षा के क्षेत्र में डी.पी.सी. रमसा, झुंझुनूं रहते हुए उल्लेखनीय सेवाओं के लिए सम्मानित होते डॉ. राजकुमार शर्मा। (5) रा.आ.उ.मा.वि. बिशनगढ़ (सायला) जालोर में माननीया मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे द्वारा 31 अगस्त, 2018 को कक्षा 9 की 28 छात्राओं को साइकिल वितरित की गई। (6) राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड के नवनियुक्त स्टेट कमिश्नर (स्कूल शिक्षा) श्री नथमल डिडेल (निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान) के साथ निदेशक प्रा.शि. श्री श्यामसिंह राजपुरोहित, बीकानेर मण्डल चीफ कमिशनर डॉ. विजयशंकर आचार्य और मण्डल सचिव श्री देवानन्द पुरोहित।

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/417/2017-19 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● अक्टूबर, 2018 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 अक्टूबर, 2018 पृष्ठ 52 ● प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2018

अमरूदों का बाग, जयपुर — झलकियाँ — 5 सितम्बर, 2018